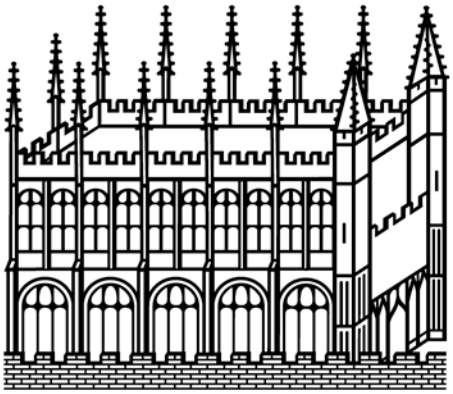


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Mahas 1

13.E.26.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Rāma-vyāhotsavah.

Ramlila Collection

श्रीरामव्याहोत्सव

श्रीमत् परम हंस परिव्राज काचार्य्य श्री ६ स्वामी गोविन्दाश्रमजी की
करुणाकटाक्ष और आज्ञा से
श्री कविचन्द भूषण कवि शंकर प्रसिद्ध नामक महादेव सुकल रचित

जिसमें

अति ललित दोहा चौपाई पद्य और संस्कृत श्लोकों में श्री महाराजराजाधिराज रघुवंश भूषण दशरथ कुमार पर ब्रह्म परमेश्वर श्रीरामचन्द्र और श्री मज्जनक नन्दनी जगज्जननी महारानी का विवाहोत्सव कथन, विवाह की प्रिय लोकिक रीति वर्णन और आदि में ग्रन्थकार की वंशावली निरूपण सयुक्त रचित है वास्तव में ऐसा दिव्य उत्तमोत्तम ग्रन्थ कि जिसमें मनो रञ्जन मनोहर आशय तो चौपाई



और दोहों और पदों में और वही संस्कृत श्लोकों में हो देखने में नहीं आया॥

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर यन्त्रालय में शुद्धता पूर्वक छपी॥
जनवरी सन् १८८० ई०

श्रीगणेशायनमः

अथरामव्याहोत्सवलिख्यते

श्लोक

हेरम्बमाता पत्यादौ विधाय गुरु वन्दनम्। राम व्याहोत्सवं
कुर्वे शब्दासाधु विमिश्रितम्॥ १॥ सुबुद्धि सिद्धि साधकं स-
मस्त विघ्न बाधकं सुमंत्र कार्य्य साधकं मनो व्यथा विदा-
रकम्। अशेष पाप हारकं जगद्विपत्ति वारकं सुयोग भोग दा-
यकं नमामि विघ्न नायकम्॥२॥ रामं रमा नाथ विशुद्धि मू-
र्त्तिं शिवं शिवा युक्त मरवराड बोधम् प्रतन्यते वंश परावसाय
म् ध्यात्वा मुहुर्नाभि कुलाङ्गनानाम्॥३॥ रामकाव्य कार
णायति भिर्वै प्रेरितः प्रीतिचकार शङ्करः साध्व साधु लघु शब्द
भूषितं भूयरां सकल दुःखखंडनम्॥४॥ गोविन्दा श्रमय-
ति सिध्वोक्तो कुरु काव्यं सुगमागम पद्यम् भाषा भूयरा
मा शुच श्रुत्वा शङ्कर शुक्लोऽकुरुताप्य मलम्॥५॥

दोहा· गोविन्दा श्रम ब्रह्मपर स्वामी आज्ञा दीन्ह॥
भाषा भूयरा नामतव शङ्कर रची प्रवीन॥

भजन सोरठ

प्रथमहि गज वदन शिरनाय। रह्यो नगर भगवंत पुरमें कछुक
दिनोते आय॥ वसत आकिन मिश्र माता महादीन वसा-
य। शुक्ल ज्ञात नभेल मेरी करम सो दरशाय॥ प्रगट

गङ्गाराम के कह दीन सबहि बताय। हतो गङ्गाराम के सुत नहीं समझो भाय ॥ गोद तब मति राम दीन्हों अपन पुत्र सिधाय। नाम लाला लालि मणि कोइ कहत नाम बढ़ाय ॥ तीन सुत मतिराम केरो बसो खजुहा जाय। तीन ब्याहि विचारि पांड़ेन जे गिरा सो भाय ॥ भयो तब लघु एक गङ्गाराम के सुत आय। और फिरि सुत भयो उनके आयु गइ नमीचाय। मरे गङ्गाराम खजुहा सुनत सब बिलखाय ॥ बसत एक धनवा न चौबे नारि तीनि मिलाय। छोट गंगाराम को सुत ब्याहि तीन बजाय ॥ जानि ब्याहि विचारि जिय मति राम सुत अकुलाय। गणि बैठो जो हतो सो पार गयो सिराय ॥ जानि अस सब बात मन में तीन प्रीति दृढ़ाय। करम करि करमी बसाई नाम ताहि बिकाय ॥ तेही बंश अनेक भे नर गुणी सुधा सुभाय। एक सूर्य्य प्रसाद तिन में अवधपुर रहे छाय ॥ महादेव कुमार तिनके धरे अपन धराय ॥ आदिते अबतक नरम सब भये ब्याह बचाय। दूसरे मम नाम शङ्कर यही दीन लिखाय ॥ धनुष यज्ञ विवाह लीला स्वतहीं मन लाय। प्रथमहि गज बदन शिर नाय ॥१॥

लावनी

मुनि लेहु नाभि को वंश सकल मन लाई। केवल अपनो करि फेरि दीन दरशाई ॥ ब्रह्मा सुत कर्दम भये कपिल तिन केरे। तिन के अजिगर्त मुनीश द्विजेन्द्र भयेरे ॥२॥ अजिगर्त के एक सुत भयो सुनःसेफ नाम। तिनके जरत्कारु महान तपी द्विज साम ॥ वासुकि की भगनी ब्याही हतीजिम भान। तिनके आस्ती क महान प्रगट जग जान। वा बंश बड़ो बिस्तार कहो सब नाही। सतयुग ते कोटिन विप्र भये संसाही ॥

पृथ्वी धरते ऋषि वंश भये अति नामी । तिनके चन्द्राकर भये रूप अभिरामी ॥ चन्द्राकर के भे नाम शक्ति मति लीन्ही । विष्णु कन्या दै अपनि प्रतिष्ठा दीन्ही ॥ सुत भयो नाभि के सुनहु प्रजापति पावन । तिनके सुत तीन प्रधान कहत सब नामन ॥ आनंद सुकताक्षि मकरणा तीन सम भाई । अपने अपने की कर्म बड़ाई पाई ॥ एक देवशरम के होत वा जपेयि जानी । तिन क्षिमाकरणा को लीन्ह बिवाह बरवानी । भये क्षिमाकरणा के पुत्र युगुल जग जाने । बजुरुष एक दूजाधना प्रसिद्ध बखाने ॥ कोउ कोउ नर जानत नहीं कहौंते आई । सुनि ले॰ १२ जिन्ध नाभि अंते भये विदित संसारा । सदपुत्र घना के भयो सुनो परिवारा ॥ सठ के सुत एक महान विबिक्रम जानी । तिन के भयो बीर द्विजेन्द्र प्रतिष्ठा मानी ॥ सुत तीन बीर के भये चतुर भुज धरम् । तीसर रामेश्वर नाम रूप गुणापरम् ॥ १५ ॥ रामेश्वर के दुइ पुत्र प्रथम बनवारी । दूसर जाहि घनश्याम प्रतिष्ठा धारी ॥ बनवारी चुचेंड़ी रहे जुदे होय भाई । बसि जाजमऊ घनश्याम नवगवां जाई ॥ यह कहो मिश्र को वंश सुनो अब मेरो । भये समदरशी नहिं हृदय हमारो तेरो ॥ बजरुष ब्याहे उमादत्त दिक्षित अति नामी । जाहिर काशी परसाद हते अति दामी ॥ बज रुष के भे सुत तीन सुशोचित देरो । सुनि लेहु नाभि को वंश भयो यश मेरो ॥ कमला कर गंगा राम और मतिराम । मतिराम पुत्र लियो राशि लाला गङ्गा राम ॥ मतिराम बिबाहे गिरगा सों पड़िन केरे । न्यसिरगा के बासी जानि कियो जिन नेरे ॥ लाला मतिराम के बैठ जे राशी । इनही ते मेरो बंश सकल परकाशी ॥ लाला ब्याहे लखनऊ

बाजपेयी नामी । शम्भू शर्मा दीनदयाल रूप शर्मा रामी
॥ डोमन पुरगङ्गा तीरे ते कमला कारके । दूसरो सुन्दरम
बफोर सुनो ज्वरधर के ॥ सब कथा गणेश की कही न फेरी
बढ़ाई ॥ सुनि लेहु २६ लाला के नामी पुत्र दसोदर
जानो । तिनके मन मोहन पुत्र गुणी मन मानो ॥
लाला व्याहे काशीराम बाजपेयी ज्ञानी । मन मोहन
सहा सुनि केर बटेसुर जानी ॥ तेहते मझावनि बीच
बिदित संसारा । उनकी कन्याते भयो सुकुल परिवारा ॥ मन मोहनके सुतचार बिदित यश भारी ।
एक वैद्यनाथ है नाम प्रसिद्ध उदारी ॥ २६॥ व्याहे को
ममा गये सुकुल बनवारी । सारे को बैजन नाम कहत
नर नारी ॥ दूसर जे बेनी प्रसाद बदरका व्याहे । बकुशके
दिक्षितन वंश वेद अवगाहे ॥ ३२॥ तीसर जो भोलानाथ कनाहे पुरमें । पैकू के सुकुलन वंश बिवाहे घरमें ॥
चौथे सुत काशीनाथ भई दुइ नारी । एक व्याह कुदौली भये दमा के तेवारी ॥ दूसर वीरेश्वर दिक्षित सलेमू माहीं । तिनके घर भये बिवाह दुहूं दिशि चाही ॥
बेनी प्रसाद के पुत्र भयो दुइ नीके । एक हीरा लाल प्रधान शुद्ध मति जीके ॥ घंसा में हीरा लाल बिवाहे ज्ञानो ।
जहँ बसत प्रभाकर वंश अवस्थी छानो ॥ दूसर सुत राम प्रसाद उदार बखाने । उनके सुत यमुना पार बसत कुल जाने
लालन उनको हूतो नाम भागवत बाँचे ॥ अपने घर धन सम्पत्ति कहें नहिं याचे ॥ उनहूं के हैं दुइ पुत्र प्रीति बिसराई । पै काम काज के काज इहां चलि आई ॥ पुत्रन को
कीन्ह बिवाह सिव शक्तिन के ॥ तीन बसत छतरपुर

जानु मिश्रसबेही के। कन्यन को कीन्हे शाप बदरका साई॥
जहँ उत्तम वंश सबन्थि बसत दश भाई। सुत हीरा लाल के भये दुइ सुन भाई॥ शिवदीनहु माधव लाल शु-
द्ध मति पाई। बरवलि या माधव लाल विवाहु भयारी॥
नरहरि लखनहु बाजपेयी तहँ शुभकारी। उइ बाजपेयी को नाम सुमीतल शहई॥ सुत सुता को नीक विवाहु क
रत सब कहई। माधव सुत भयो शधार कदारे व्याहे॥
है राम भद्र के नीक लखनहु साहे॥ बाजपेयी कर्मि श्री
लाल विदित सब जाने। सब जानि कुलीन विचारि म-
कल पुर माने॥ भये बैजनाथ के पुत्र देवी दीन जानी। भ
यो पुत्र जवाहर लाल गुणी शति ज्ञानी॥ बेश्यरमे व्याहे गये
ते वारी कुलमें। गोबरधन के शुभ शाप कनोजिया तुल
मे॥ तेहि नाम राम परसाद वंस सब जाने। बेमछोड़ि के रहना
शय नात सब माने॥ काशी नाथ के नाती नाम हरिका
नामी। जानापुर व्याहे मिश्र कुदुम शभिरामी॥ ती सोदिशो
ये के शाय सुरसरी सेवै। कोई शा वेद्वार बिचारि यथा कछु दे
वै॥ भोलानाथ के शा सादन्त मा माने बासी। सब वेश बडो
बिस्तार न सब पकासी॥ काशी नाथ को चन्द्री द्वितीय सुत
कुल मानी। व्याहे गे धन्नी के बाजपेयी जानी॥ ती बसत
शोनहा बीच मान के धारी। नामी शुभ शाल ग्राम पति व्र-
ति नारी॥ सब सुतो बेश जो रहो पछारी भाई। मुनि शिवदी
न विवाहे मद्धा पाँडन केरे॥ पाँड़े को बच्चू लाल गिरा मोदरे
दूसर शिवदीन को व्याहे गे रया माही। नरहरि के सागर नाम
सुता तिन व्याही॥ शिवदीन के सुत भये तीन कहत हम
गाई। पहिली के सूर्य्य प्रसाद सगे दुइ भाई॥ दुसरे को विद्या

नाम जिये। एक नाती। व्याह देहु में गयो बलुच्च प्रभाती ॥ अनिरुध के सिअते साथ शेष मणि को। जाहि सब गंगा पार शैव शिव चेरो ॥ तिसरे को किरती नाम गोरख्या बासी। एक जेठ पुत्र अभिराम बुद्धि अति खासी ॥ एक बसत गोरख्या दुवे व्याह तिन लीन्हा। एतनी साखि न में नर्मदा ही कृति कीन्हा ॥ ऐसो सब नातन शाप कही ना मानी। कौतुक गयो बाते नहीं यह कानी ॥ शिवदीन के सूर्य्य प्रसाद कुटुम तजि आये। कैते के शाकिनि मिश्र जगत में गाये ॥ व्याह भगौंत पुरहूते रहे तहँ जाई। सब जानत जिन्हहि जहान कथा कुल गाई ॥ केहरि सहाय सुभ नाम विदित सब जानै। उनही की कृपा कटाक्ष हमें सब मानै ॥ धरि चालु अपनि कुल केरि सुता सुत व्याही। करियथा शक्ति सब मान नरन अवगाही ॥ तिन हूँके दुइ सुत भये कथा जिन गाई। सुनि एक महादेव जय देव व्याह सुनि लीजै। सुनि के यह कथा प्रसंग दोष नहिं दीजै ॥ स्वयनऊ के नगरी को महादेव व्याहे। पहिले दुसरो फिरि व्याह सुनहु अब गाहे ॥ धन्नी के गिरधर को बाजपेयी जानी। नागदिलीप निवास जानि कुल कानी ॥ जय देव के भये दुइ व्याह कहे हम जानी। स्वाना पुर पहिले बिदित जगत मन मानी ॥ ते कहे अयोध्या प्रसाद भगति ज्ञानी। तेघाघते वारी जगत लोक मन मानी ॥ दूसर पांडे लखनऊ बसि दुख नाये। कन्यन को सुनहु देवाल लेगि वहु मगाये ॥ पुरिखन की गति हम कहत दुख हम कीन्हा। कुल जानि बसिहु महान व्याहि तिन दीन्हा ॥ एक साभ गाव के मिश्र लालि मणि नामी। ती बसत

मुरादाबाद हते अति दामी ॥ हीरामणि केतेहि फोरु गोबिंदे को । कुल सकुल मनोहर बरनत रहत कुलहेरु ॥ कोइ व्याहि गिरगा सो गर्व बदरका कोई ॥ कोइ सुमेरु पुरमा व्याहि बिगहु पुरदोई ॥ फिरी पांडे नअमनी को तहां कुछु कीन्हे । पुरिख न के कहे बिचारि मन सब दीन्हे ॥ यह कहा कुटुम को हाल चतुरजो होई । कुलवान पुरुष गुणावान लखैनर सोई ॥ जेसुता सुतन को करत विवाहु नकी को । तेजानत ना यह भेद नीक वा फीको । जो होइ पुरुष कुलीन भेद यहि जानै । कागा क हू मोती लाल मणिहि पहिचानै ॥ यहु ग्रंथ आदि में कहो वंश समुदाई । यहु वंश राम को भक्त तेतो दशाई ॥ हमदृढ़ि पुरान पुरान कथा यहु गाई । सुनि सुनि रघुवीर बिवाहु सुजन सुखदाई ॥ शंकर कुल के अनुसार लावनी गाई ॥ सुनिलेहु नाभि को वंश सकल मन लाई ॥ ८७॥

दोहा रामकथा सुंदर ललित बरणत हौं चित लाय।
गौरी शंकर गणेशहू गणपति को शिरनाय॥

चौपाई

एक समय बन धर्म नरेशा ॥ तहँ मकंदु सुत जानि कलेशा
शंखपूजि धर्म सुत बोले ॥ हृदय प्रीति अमअंतर खोले
राम व्यासु पूछा मुनि पाँही ॥ कहनलगे मुनि मन अवगाही

दोहा बेदु निशाचर भूमि अति जानि बिश्व दुखदेषि।
विधियो ज्योहरि को समुझि प्रकटहोन के लेषि॥

चौपाई

जबविधि जाय कही अस बानी ॥ भयेअवध पति सुत जिय जानी

बाजपेयी नामी । शम्भू शक्ति दीनदयाल रूप शक्ति भरामी ॥ डोमन पुरगङ्गा तीरते कमला करके । दूसरो सुन्दरम बफोर सुनो ज्वरधर के ॥ सब कथा राशि की कही न फेरी बढ़ाई ॥ सुनि लेहु २६ लाला के नामी पुत्र दमोदर जानो । तिनके मन मोहन पुत्र गुणी मन मानो ॥ लाला व्याहे काशीराम बाजपेयी जानी । मन मोहन मद्धा मुनि के वंश सुजानी ॥ तेहते मझावनि बीच विदित संसारा । उनकी कन्याते भयो सुकुल परिवारा ॥ मन मोहनके सुत चार विदित यश भारी । एक बैद्यनाथ है नाम प्रसिद्धि उदारी ॥ २६॥ व्याहे करो ममागये सुकुल बनवारी । सारे को बैजनाथ नाम कहत नरनारी ॥ दूसर जे बेनी प्रसाद बदरका व्याहे । बकुण्ठके दिक्षितन वंश वेद अवगाहे ॥ ३२॥ तीसर जो भोलानाथ कनाहे पुरमें । पैकू के सुकुलन वंश विवाहे घरमें ॥ चौथे सुत काशीनाथ भई दुइ नारी । एक व्याह कुंदौली भये क्षमा के तेवारी ॥ दूसर वीरेश्वर दिक्षित सलेमपुर माहीं । तिनके घर भये विवाह दुहूं दिशिचाही ॥ बेनी प्रसाद के पुत्र भयो दुइ नीके । एक हीरा लाल प्रधान शुद्ध शक्ति जीके ॥ बंसा में हीरा लाल विवाहे जानो । जहँ बसत प्रभाकर वंश अवस्थी छानो ॥ दूसर सुत रामप्रसाद उदार बखानै । उनके सुत यमुना पार बसत कुल जानै लालन उनको हतो नाम भागवत बाँचै ॥ अपने घर धन सम्पत्ति कहूं नहिं याचै ॥ उनके कैहैं दुइ पुत्र प्रीति विसराई । पै काम काज के काज इहो चलि आई ॥ पुत्रन को कीन्ह विवाह सिष्य शाकिन के । तीन बसत छतरपा

जानु मिश्रसबेही के। कन्यन को कीन्हो शाप बदरका आई॥
जहँ उत्तम वंश शवस्थि बसत दश भाई। सुत हीरा लाल के भये दुइ सुत भाई॥ शिवदीन रु साहब लाल शुद्ध मति पाई। बरवलि या साहब लाल विवाह भयारी॥ नरकुलि लखनऊ बाजपेयी तहाँ शुभकारी। उइ बाजपेयी को नाम सुसीतल अहई॥ सुत सुता को नीके विवाह करत सब कहई। साहब सुत भयो शधार कढारे ब्याहे॥ रामभद्र के नीक लखनऊ साहे॥ बाजपेयी कर्मि श्री लाल विदित सब जाने। सब जानि कुलीन विचारि मकलपुर मानै॥ भये बैजनाथ के पुत्र देवी दीन जानी। भयो पुत्र जवाहर लाल गुणी शति ज्ञानी॥ बंधरमे ब्याहे गये तेवारी कुलमें। गोवाधन के शुभ शाप कनौजिया तुलमें॥ तेहि नाम राम परसाद वंस सब जाने। बसे छोड़ि कनउज शाय नात सब मानै॥ काशी नाथ के नाती नाम हरिका नामी। जानापुर ब्याहे मिश्र कुदुम शभिरामी॥ तीसोढ़ि ये के शाय सुरसरी सेवै। कोई शचेद्वार बिचारि यथा कछु देवै॥ भोलानाथ के शासादत्त मामे बासी। सब वेश बड़ो बिस्तार नसब परकासी॥ काशी नाथ को चन्द्री द्वितीय सुत कुलमानी। ब्याहे गे धन्नी कर बाजपेयी जानी॥ तीबसत शौनरा बीच मान को धारी। नामी शुभ शाल ग्राम पति व्रति नारी॥ सब सुनो बंश जो रहो पछारी भाई। मुनि शिवदीन विवाहे मदन पाँडेन कोरे॥ पाँड़े को बच्चू लाल गिरा सोढ़रे दूसर शिवदीन को ब्याहे गोरया माही। नाहरे के सागर नाम सुता तिन ब्याही॥ शिवदीन के सुत भये तीन कहत हम गाई। पहिली के सूर्य्य प्रसाद सगे दुइ भाई॥ दुसरे को विंद

नाम जियो एक नाती । ब्याह्यो ढेठु मे भयो बलुच्च प्र-
भाती ॥ अनिरुध के मिश्रते भाय शिरोमणि को । जा
हि सब गंगा पार शैव शिव चेरो ॥ तिमेरो को किरती नाम
जोरया बासी । एक जेठ पुत्र अभिराम बुद्धि अति खासी ॥
एक बसत गोहया हुवे ब्याह तिन लीन्ह । एतनी साखि
न में नर्म यही हृदि कीन्ह ॥ ऐको सब नातन भाय कही
ना मानी । कौतु गयो बातें नहीं रही यह कानी ॥ शिवदी-
न के सूर्य्य प्रसाद कुटुम तजि आये । कैते के शाकिनि मि
श्र जगत मे गाये ॥ ब्याह भगौत पुरहते रहे तहँ जाई ॥ सब
जानत जिन्हहि जन्म कथा कुल गाई ॥ कहु सहय सु-
भ नाम विदित सब जाने । उनही की कृपा कटाक्ष हमे सब
माने ॥ धरि चालु अपनि कुल केरि सुता सुत ब्याही । क-
रि यथा शक्ति सब मान नरन सब गाही ॥ तिन हूके दुइ सु-
त भये कथा जिन गाई । सुनि एक महादेव जय देव ब्याह
सुनि लीजे । सुनि के यह कथा प्रसंग दोष नहिं दीजे ॥ त-
खनऊ के नगरी केर महादेव ब्याहे । पहिले दुसरो फि-
रि ब्याह सुनहु सब गाहे ॥ धन्नी के गिरधर केर बाजपेयी
जानी । नगदिलीप निवास जानि कुल कानी ॥ जय
देव के भये दुइ ब्याह कहे हम जानी । स्वाना पुर पहिले बिदि-
त जगत जन मानी ॥ ते कहे अयोध्या प्रसाद भे अति ज्ञा-
नी । तेधा घेतवारी जगत लोक मन मानी ॥ दूसर पांडे
लखनऊ असि दुग नाये । कन्यन को सुनहु देवाला
लेगि वहु सगाये ॥ पुरखन की गति हम कहत दुहू हम
कीन्ह । कुल जानि असिहु महान ब्याहि तिन दीन्ह ॥
एक साँझ गांव के मिश्र लालि मणि नामी । तो बसत

मुरादाबाद हते अति दासी ॥ हीरामणि केतेहि फोरू गोविंदे को । कुल सकल मनोहर वरहत रहत कुलहेरे ॥ कोइ व्याहि गिरा सी गई बदरका कोई ॥ कोइ सुमेरु पुरमा व्याहि बिगहु पुरदोई ॥ फिरी पांडे नरसनी को तहा कुछु कीन्हे । पुरिख न के कहे बिचारि मन सब दीन्हे ॥ यह कहा कुटुम को हाल चतुर जो होई । कुलवानि पुरुष गुणवान लखैनर सोई ॥ जेसुता सुतन को करत विवाहन नी को । नेजानत ना यह भेद नीक दा फीको । जो होइ पुरुष कुलीन भेद यहि जानै । कागा का हूं मोती लाल मणीहि पहिचानै ॥ यहु ग्रंथ आदि में कहो वंश यमुदाई । यहु कथा राम को भक्त तो दाई ॥ हमतुंहि पुरान पुरान कथा यहु गाई । सुनि सुनि रघुवीर विवाहु सुजन सुखदाई ॥ शंकर कुल के अनुसार लावनी गाई ॥ सुनिलेहु नाभि को वंश सकल मन लाई ॥ ८७॥

दोहा रामकथा सुंदर लालित वरणत हौं चित लाय।
गौरी शंकर रविहरीहि गणापति को शिरनाय॥

चौपाई

एक समय बन धर्म नरेशा ॥ तहूं मकंदु सुत जानि कलेशा
आये पूजि धर्म सुत बोले ॥ हृदय प्रीति अम अंतर खोले
राम व्याहु पूछा मुनि पाँही ॥ कहन लगे मुनि मन अवगाही

दोहा बेदु निगम चर भूमि अति जानि विश्व दुखदेषि।
विधियों च्योहार को समुझि प्रकट होन के लेषि ॥

चौपाई

जब विधि जाय कही अस बानी ॥ भये अवध पति सुत जिय जानी

राम लषन सुरु भरत बषानै ॥ होय शत्रुघ्न चरित मन्हि टानै
बसत करत पितु मुनि सब जानै ॥ श्रुति शत्रुघ्न कु लब्रह्म सब मानै
यहि बेतरा वण के पेरे ॥ बढ़े निशाचर प्रबल घनेरे ॥
नीसब बनन कीन धा जादू ॥ कोऽशंत दृढ़ तिन मुनिन सताई
बहुत कु खाय निगलो तिन दीन्हे । निघ्न हीन बहुत बन कीन्हे
जहँ जहँ मुनो तहँ भय लागी ॥ बचे कतहुँ कोइ कोइ बन भागी
दोहा जहँ देखो तहँ नारिना बिकल भये मन माहि ॥
कोऊ न दुख भय जगत सुन कहुँ काहि दिग जाहि
सबै सभ सब घर बन बिकल कीन निशाचर घोर
जब जान्यो शत्रु प्रबल मुनि कीन्ही जतन करोर
बसत सकल मुनि बर बिपिन कौशिक कादि तपपुंज
करन न पावत यज्ञ तप निशिचर प्रबल प्रभूत ॥

चौपाई

तब कौशिक मुनि हृदय बिचारी ॥ करहि विधि बन मुनि होम सुरारी
होहि निशाचर कोइ बिधि नाशू ॥ मुनि बर धर्म होहि परकाशू
जो की कोण करहु संघारा ॥ नाशहि होय तप शत्रु अपारा
अस बिचारि मुनि सकल बुलाये ॥ शास्त्र सुज्ञानि मानि तजि पाये
मिले कही मुनि बर सब ज्ञानी ॥ कथा प्रसंग ललित शुभ नानी
कौशिक कही जाय भय कैसे ॥ करहु बिचारि होय सुख जैसे
प्रबल ताड़का शत्रु सुबाहू ॥ खल मारीच दुरत नहि काहू
मुनिन मनन मन कीन बिचारा ॥ जो कोई भूप होय बड़ बारा
कोय सहाय शत्रु बन माही ॥ तब उपजय शान्त बन माहीं
दोहा बिहँसि कही कौशिक सुनो नहि भूपति को काम ॥
प्रबल निशाचर शत्रु अधम करहि को नृप संग्राम

चौपाई

विप्रजोसुर पालक सुखराशी। तेहि बिन को दारुण दुखनाशी
सो जबशाप बिपिन पद चारी। शपने बलनिश्चर संघारी ।
सोइ प्रभु लीन्ह मनुज अवतारा। रामनाम अवधेश कुमारा
कहो तौ जाव अवधपुर भाई। लावौं मारि बिपिनि रघुराई
सुनि हरषे ऋषि मुनि अतिज्ञानी-कहीजाय तुम प्रभु मनमानी
तबगणपतिहि पूजि मुनिज्ञानी-चले अवधपुर सुमरि भवानी

भजन

मुदित मन हेम कलश भरि वारि। आवाहन करि विघ्नहरण की फूलपत्रि काढ़ागरे ॥ धूप दीप नैवेद्य निवेदन अस्तुति मूर्ति निहारि। हरहु विघ्न मुहिं मिलहि रामप्रभु नृपसुत होय नरारि ॥ शङ्कर प्रगटे हरो मुनिको दुखहरषे मुनि भ्रम टारि १

श्लोक

विप्रेन्द्रामिश्च मुनिगणेन्द्र वृन्दं लंबोदरं सुदरं पूज्या गुपयौ कलाधरनि भांतां कौशल्या सुदरम। श्रुत्वा रमपि ता मुनीन्द्र ममलं तत्रेत्यतं बंदनं सामात्यः प्रणिधाय धर्म कुशलं सोऽच्छद्दारा दलम १

दोहा अये मुनि दशरथ नगरहीव भवन वनहाट
हरषे सुरमन्दिर निरखि देखि चौक शुभवाट

चौपाई

शङ्खपत्रहेरेव धसशाये। लगेचारिदा वार सुहाये
सुभट जहाँ सोहत गजचारी। कोउकोउ बीर अश्व असवारी
पाति पाति रचि भवन बनाये-जीमा सहित रतन जड़वाये
सुघर कपाट हेम रतनारे। छज्जन्त सहित करत उजियारे
शरद मेघ सम शिखर सटारी-सुबरण साज जटित रतनारी
सुबरण दंड पताका सोहे ।। बन्दनवार मुनिन मन मोहे

मङ्गलन रतन भरे खनन लागी बैठी नारि विषय रस त्यागी
धरि भूषण पट सुंदरताई ॥ मृगनैनी लोचन छबि छाई
देखा उन्नत मंदिर सुंदर जनु स्वर्ग बाट जनु शाय ॥
नारि शपसन बृंद जनु राजत पुर छबि छाय

चौपाई

चहुं दिशि मुनिपुर सुंदर बिलोका देखि गयेा मारग कर शेाका ॥
देखत पुर मुनिराज नंद भय ऊ ॥ एहि विधि नृपति भवन चलि गयऊ
द्वारपाल कोसलपति पठाई ॥ शाये मुनिंद शरथ सुनि पाई
देउ का जोरि तुरत तहं शाये ॥ की पूजन मंडप बैठाये ॥
बहु विधि बिनती कीनि भुवाल शंजु धन्य मम भाग्य कृपालू
मुनिनायक तप जगत बखाना कोशल जोन शापु तप जाना
नाभि चक्र तेा गलतक नाड़ी ॥ दशम वं मिलि कफ सेा प्रभु झाड़ी
मनेा बहा नाड़ी उर लागी ॥ षटरस सेा सब दृष्टिगा पागी
कुंडलनी प्रभु शापु जगाई ॥ ऊर्ध मुखी करि शमृत पिशाई
कंठ उपस्थ शनंगन पावै ॥ ऊपर मनेा बहा सब गावै ॥
शब मैं सुना प्रताप तुम्हारेा ॥ कोन नारि बल प्रभु तप हारेा
जहं जहं चरण जात प्रभु केरे ॥ तहं तहं तीरथ स्रोत घनेरे ॥
शंजु भई पावन महि मेरी ॥ जहं प्रभु पावन चरण धेरी ॥
केहि कारण मुनीश प्रभु शाये ॥ कहेा कृपा सेाइ नाथ उपाये ॥
मुनि शब वचन हृदय हरषाने ॥ कपट न कहेा यश भूप बखाने

भजन

मुनि शाये शवधपति कीनगरी । उठि हरषि हृदय दशरथ मुनि की पूजा कीन्ही बहु विधि सगरी ॥ केहि काज भयेा प्रभु को गवनेा सेाइ करेा नाथ लागे न धरी । शंकर शम कपट न कहेा हमसेा सबलेा कहन मे कीरति वगरी ॥३॥

श्लोक

प्रत्युवाच मुनिराजा प्राञ्जलि र्मीतिनम्रधी: कृतार्थोस्मि मुनीन्द्रोहं त्वदागमन कारणात् ॥२॥ त्वद्विधा यद्गृहे यान्ति तत्रैवायांति सम्पद: यदर्थी मागतोस्मि त्वं ब्रूहि सत्यं करोमितत् ॥

दोहा यहकुल पावन भूपशिति चिभवनयशीविस्तार
सुनतश्रमियरसश्रमभेरमुनिसुखभयोअपार

चौपाई

तबमुनि सकल कथा बन केरी ॥ कही निशाचरगति बहुतेरी ॥ बसत ताडकाप्रबल बवानी ॥ कांति बिघ्न तपयज्ञ मलानी कथा मरीच सुबाहु निशाचर ॥ बसतन कोइ मुनिऋषिबनजेडर तिन के जीतन काज गुसांई ॥ श्रायांन्पपुरकरि बरिआई ॥ रामलषन दीजे मुहि राजन ॥ पुरशागमन श्रोर मम काजन तिन के बलजीतब निशिचारी ॥ हौंहे भूपति कीर्ति तुम्हारी

श्लोक

दशरथस्वसुतं रघुनंदनं क्षितिपदेहि नरेन्द्रसलक्ष्मणम् ।
सुखदमे मखपालनहेतवे नच चिरोद्भविताशमनंध्रुवम् ॥३॥

भजन

राजन रामलषन मोहिं दीजे । श्रा नन काज मोर कौशलपुरी बेगि बचन यहकीजे ॥ बसत सुबाहु बिपिनि शिति गरबित तेहि कारण यश लीजे ॥ करत भङ्ग मख बनन मुनिन की धर्म मूषिन को छीजे । शङ्क श्रवचन सुनत मुनिबर के बढ़ीताप श्रवनीजे ॥

दोहा पालहु धर्मी बिचारि नृप जानि निशाचर घोर
राखहु मान हमार यह सुर मुनि मनुज निहोर

चौपाई

सुनि नृप बचन मुनीश्वर केरे ॥ हृदय शोच उपज्यो बहुतेरे
बय सगरे मुनि वर सुत पाये ॥ देतन बनत मुनीश सुहाये
अति सुकुमार बाल मुनि मेरे ॥ केहि विधि बचहिं निशाचर हेरे
सौंना कहत न बनत गुसाईं ॥ तापस राम प्रीति अति छाई ॥
सब बालक प्रभु अति प्रिय मेरे ॥ तापस राम प्राण सब केरे ॥
जो माँगो प्रभु देउं मंगाई ॥ ॥ रामदेत नहिं बनत गुसाईं ॥

दोहा सुनि बोले मुनि वर बचन सुनहु कौशलाधीश
तप बल लेब बचाय सुत भ्रमनेकरब अवनीश

भजन

अति सुकुमार कुमार गुसाईं । प्रबलता दुका अति सुबाहु प्रभु कौन यतन सुत करहिं लगाईं ॥ मुनि मुसक्याय कह्यो अपने तप भूप कुमार हूम लेब बचाईं । हरष मुनि दिनेश भूषण कुल कुमुद भवन तें लीन बुलाईं । शङ्कर शाप गहे मुनि वर पद करउठाय गहि कण्ठ लगाईं ॥ ४ ॥

श्लोक

या राक्षसी हन्ति मुनीन्कु मारौ हन्ति ठ्यतो यो गभृतः कथंतौ
नरेन्द्र सूनू तप सामरी यसा प्रपालयिष्ये तपतां कुतोभयम् ॥ ४ ॥

चौपाई

तब बालक नृप लीन बुलाईं ॥ साथे राम लषन दोउ भाईं ॥
पग पनही सुन्दर पद राजे ॥ ॥ गुल्फ ललित कटि किङ्किणि साजे
धोती पीत कसी छबि छाईं ॥ कटि किङ्किणि रतनाग सुहाईं
त्रिवली ललित उदर शुभकारी ॥ मोतिन माल गले रतनारी
हेम जोप गल गुञ्ज सुहाईं ॥ अङ्ग अङ्ग भुजन ललित छबि छाईं
पहुंची कर छ बिछुला न केरी ॥ मुदरी सब अंगुलिन मणि फेरी

सुन्दर बदन मनोहर राजा सुखदावा ॥ नयन मृगीन कर नयन लजावा
काजरकी मुघर लगाई ॥ भाल ललित नख बन घुंघराई
श्रवण जटित कुण्डल छबि न्यारी ॥ कुपर श्रवण लसति एक बारी
जुलफैं काम छुलावनि हारी ॥ तापर ताज जगी रतनारी ॥ ५
दोहा · पीत भगुलिसोभा सदन लक्षि मन बैजनि राज
कांध चादरी सोभनी देषि सदन मन लाज

चौपाई

कटि तूंडी बांधे दोउ भाई ॥ कर साधे शर चाप सुहाई ॥
पितु पद बन्दि मुनिहिं शिर नावा देषि मुनीश नयन फल पावा
दये असीश मुनि गोद उठाये ॥ निज आवन कर बचन सुनाये
तब राय सुदशरथ नृप दीन्हा ॥ सौंपि शिशु मुनि पद नति कीन्हा

भजन

ढाढ़े गोदकमनि आँगन्हाथे ॥ काजर नयन बिशाल बाल सं·
ग अनघन काजर माथे ॥ बार का छलादार शीश पाटो·
पी रतनन काथे । भृगि आ पद पनही सुन्दर अति अपदेखि
रघुनाथे ॥ शङ्कर शीश नाय मुनि बापद सौंपि दिये कर साथे

श्लोक

नानाविधै भूषणा बस्त्र रत्नैर्विभूषितौ चापधरौ शरान्वितौ
रामानुजा वेत्य मुनीन्द्र पादयोर्ववन्दतुर्दैत्य निशाच·
रान्तकौ ॥ ६ ॥

चौपाई

जब अस्तुति दशरथ नृप कीन्हा ॥ तब बशिष्ठ कारण कहि दीन्हा
ई तुम्हरे सुत ब्रह्म गुसाँई ॥ प्रगट भये सुर नर सुख दाई ·
भूमि भार हरिबे कर काजा ॥ ब्रह्मा बर्या च्यो मम राजा ॥
तुम राजन पूरब तप कीन्हा ॥ तब सुत हित हरि करिबर दीन्हा

मुनि श्रम बचन नृपति हरषाने ॥ श्रापन जन्म सुफल करि माने
दोहा यहि बिधि मुनि का करि बिश्रामू । गवने श्रवधेश
कही जाय सब यज्ञ कथा एमिन भयो कलेश

चौपाई

लियो संग मुनि शिशु न लिवाई ॥ मारग चलत श्रधिक छबि छाई
श्रागे मुनि पीछे नृप बालक ॥ चले जात मुनिबर कुल पालक
पुलकत मग तरुवर सब नामा ॥ कहत जात मुनिबर तप धामा
जो मग जात देखत नर नारी । देखि रूप छबि होत सुखारी ॥
सिंह करवनि सुन्दर छबि गाजै ॥ कर सुन्दर नूतन धनु भ्राजै ॥
इत उत चितवत तत्ल षिबन बागू ॥ पंकुचे मुनिबन कहि धनि भागू
मुनि श्रागमन सकल मुनि पाये । बन्दि राम पद श्राशिष पाये
करि बिचारि सब बिधि मुनि ज्ञानी ॥ जानि समय सब कथा बखानी
तब मुनि यज्ञ किया तंह ठानी ॥ रचि बेदी पावक तंह श्रानी
कुश कंडिका करी श्रुति गाई ॥ घृत प्रणीता बेगि मंगाई ॥
पाये उक्ता तारु बुलाये ॥ ॥ सब श्रध्वर्य्यादि द्विज पाये
घृत साकल्य मिलाय बनाई ॥ मुनिन मंत्र कीन्ह श्रागि निजगाई
यहि बिधि होन यज्ञ जब लागी ॥ धूम बिलोकि ताडुका जागी

भजन

पीछे नृप बालक । मानहु गज पीछे गज शावक
चले जात मुनि पालक ॥ पुलकत मग तरुवर फूले फल श-
सुर कुलन के घातक । यहि बिधि जाय गये मुनि केब-
न जहं मुनि बर्में ठहालक । शंका रची यज्ञ मुनि नृप सुत रव
के दुख कुल शालक ॥ ७ ॥

श्लोक

अग्रे गच्छति कौशिकस्तदनुतो भूपाल जो गच्छतः पश्चा-

सदयान्वितौ बनतरुन् प्रच्छतुस्तौ मुनिम । चल्यौमा
र्गगताज्ञ ना ज्ञ ल गता ज्ञीवा न्न रन बान रन् ले
भाते सनतं प्रहर्षमतुलंगत्वा मुनीन्द्राश्रमम ॥ ७ ॥
दोहा कुटिलनिशाचरीरिसभरी नयननवेगुघारि
करिकराल इतउतचितै धाईबेग सम्हारि
चौपाई
रुधिर भरे सगराजत कैसे ॥ प्रज्ञनगीरगैरिकयुत जैसे ॥
प्रात माल गलरुंधिकसुहाई ॥ जलदमानु विजुलीछबिछाई
छुटेबार बदनपरआये ॥ ८ ॥ पूर्णाशशिजनुजलदमुहाये
चली कराल रूपधरी धाई ॥ तबमुनिबारघुबरहिदेखाई ॥
भुजभारीलोचनफरगाई ॥ गरजत नभ सनमुखचलिआई
प्रतबसन बांधेपुंग भारी ॥ गहेयष्टि एक भुज भयकारी
कटिमेखलातिबंधीसुहाई देखतगह्योबाण रघुराई ॥ ९ ॥
दोहा नारिबधनकी लाजतब शरसंग छोडिकृपाल
मार्योशरहियताकिप्रभु गिरी भूमि तत काल
भजन
धूमिविलोकितताड़काधाई तर्जिपबेगकरी चलीदेखिमुनि
रामलषनको तुरतदेखाई ॥ खैंचिबान रघुनाथमारितहि
सुपुरबेगी कपाल पगाई । गिरी गिरायसहित तरवार
मुनिबरदेखिहरषाई ॥ शङ्का तबमुनि शस्त्रशस्त्रकी
सबविद्या रघुबरहि पढ़ाई ॥ ७ ॥
श्लोक
माकुटिला मुखदास्य जनानां प्रत पट परिधायकुशीला ।
घोरतरं प्रलयंपरी चक्रे दृष्ट्वा धूममलक्षणदागा ॥
चौपाई

शिला हृदय शर लपयो भारी ॥ भयो छिद्र णि छिद्र बिचारी ॥
जनु यम पुर कर न्यो दुआरा ॥ जाय यहो मग रिपु परिवारा ॥
तब लगु प्रबल सुबाहु देखानो ॥ कौशल्या धनु शर संधानो ॥
स्रावत करी रुधिर झरि भारी ॥ मार्यो राम बाण तनु हारी ॥
तड़पि गिरो दूत तरु नाना ॥ प्रबल ताड़का मारीच देखाना ॥
शल्य रहित मारो शर जानी ॥ शत योजन धायो अभिमानी ॥
गिरो जाय बारिधि के तीरा ॥ तबते मुनि सम कीन शरीरा ॥
एहि विधि राम निशाचर मारे ॥ सकल मुनिन्ह बन कीन सुखारे ॥
भये प्रसन्न देखि मुनि राई ॥ सब विद्या निज प्रभुहि पढ़ाई ॥

दोहा॰ यज्ञ भर्द्ध पूरण सकल हरण मुनिवर वृन्द ॥ ॥
रहे राम मुनि बिपिन तहँ एहि विधि करुणा कन्द

सोरठा॰ मुनि मुनि मुनि दुति हास मगन भये रघुवीर गुनि
किये कछुक दिन वास रघु भूषण कुल मान पुनि

भजन

बरषत रुधिर सुबाहु देखानो॥ संग मारीच नीच खल निश्चर
देख तहीं प्रभु शर सधानो ॥ लगो बाण उर गिरो भूमि पर
प्राण न सुर पुर कीन पयानो॥ मरो सुबाहु जानि हरषे सुर
सुरपति अधिक सुखी जब जानो॥ शङ्कर एक बिशल्य बाण सो शत योजन मारीच पानो॥ ८॥

श्लोक

श्रुत्वा रामं मलं गजेन्द्र गमनं चापान्वितं ताड़का वेगेन
प्रबला सुबाहु बलदाय ज्ञा गरक्षा करम् ॥ मे प्राप्ता प्रतिबी-
क्ष्य बाण निकरैर्जघ्ने सुबाहुं क्षता लेभेहर्षमजस्तदा सुर
पतिः श्रुत्वा मुनीशो मुनिः ८ ततोऽति हृष्टः परिरभ्य रा-
मं शिरः समाघ्राय विचिन्त्य किञ्चित् सर्वं सुज्ञाले सहस्य

मंत्रं प्रीत्याभिरामायददौ मुनीन्द्रः ॥ १० ॥

चौपाई

मुनिफल दीन राम दोउ भाई ॥ भये प्रसन्न अधिक रसखाई
रहे तीनदिन आश्रम माही ॥ तबमुनिजनक कथा सबगाही
सुनहु राम एक कथा अनूपा ॥ रची यज्ञ मिथिलेश्वर भूपा
तहाँ शम्भु धनु कठिन सुहावा ॥ देशदेशनृप मण्डल आवा
चलहु राम देखन धनु शोभा ॥ सुनि उत्साह मोर मन लोभा
अस कहि चले जनक पुरस्वामी ॥ संग कुमारि लये जगनामी
देखत वन सरिता गिरि नाना ॥ पूछत जात कथा मन माना
सघन दीख आगे वन भारी ॥ बहुतन जीव जीव हितकारी
सो भा देखि विपिनि रघुराई ॥ पूँछन लगे मुनिहि शिरनाई

दोहा-खग मृग विपिनि अनेक लखि मक लहरा भ्रमकाज
पूछत जात कुमार संग मुनिहि सहित तजि लाज

भजन

जनकपुरकी मुनि कथा कही । है मिथिलापुर चाप शम्भु को
देखि छटा बहु चही ॥ देशदेश के भूप जुरे जहँ तहँ हम जाब सही
तुम कहँ चलो राम देखन धनु को महि बीर गही । शङ्कर चले
दीख गौतम को जहँ मुनि नारि रही ॥ ६ ॥

श्लोक

श्रुत्वा श्री मिथिलेश्वरं जनकजं सीरध्वजं भूपतिं ब्रह्म ज्ञान
युतं मुनींद्र कथितं तज्जेन्द्र चूड़ा मणिम् रामो लक्ष्मण संयुतोपि-
चययौ द्रष्टुं सयज्ञं मुनिं पप्रच्छ प्रधनं वनं कुसुमितं दृष्ट्वा
खगौघ जितम् ॥ ११ ॥

दोहा- तहँ श्रनेक प्रभु देखि वन पूँछत कृपानिधान
कारणाकवन मुनी शय कहँ बरजत जीवरहान

चौपाई

यह बन है काको मुनि राई ॥ कारण कवन न जीवदेखाई
फूले फरे सकल तरु नाना ॥ बसत न जीव कृपाल महाना
देखत होत सभय मन मोरा ॥ देखि सुनीश बिपिन घन घोरा
तब मुनि पूर्व प्रसंग सुनावा ॥ जेहि कारण बन जीव न आवा

भजन

पूछेया राम मुनिहिं शिर नाई। बन सुन्दर फूले तरवा सब
जीव जन्तु कोई नदेखाई ॥ कारण कवन कवन को ऋषि
श्रम कहो कथा समुझाई। कहन लगे मुनि कथा
सकल तहँ जेहि बिधि शाप अहिल्या पाई ॥ १० ॥

श्लोक

दृष्ट्वा घोर तरं बनं कुसुमितं रामस्तथा लक्ष्मणः कस्मा-
न्नैव वसन्ति नाथ विहगाः पांथ प्रियन्तापहम् कस्या
पत्यकुतः सराधवत्रचः श्रुत्वा कथा पूर्वजां चक्रेव्याभृश-
र गौतमस्य सकलां देव प्रसंगश्रुताम् ॥ ११ ॥

भजन सोरठ

एक मुनि नाम गौतम भये ॥ नारि तिनके घरशहिल्या
रूप जोबन नये ॥ रूपदेखि बिशाल सुरपति रहत लोच-
नदये। डरत मनपै संग चाहत काम बिषय नछये ॥ ए-
कदिन मुनिनाथ सौरे बनहिं फलन गये। वही छरासुर-
नाथ गौतम रूप सुरव हित लये ॥ भोग कीन्हो जाय
शङ्कर पाप बीज हिबये ॥ ११ ॥

चौपाई

एहिबन एक गौतम मुनि रहई ॥ अति तप करत सोतप सहई ॥
अति प्रताप पुन्जसुरवराशी ॥ यश कीरति महि सकल प्रकाशी

देखि महा तप विधि चलि आये ॥ कन्या साथ सहित्या लाये
अति सुन्दर पावन सुकुमारी ॥ कोन होत बस लेखत दिहारी
पद कोमल पल्लव सम राजै ॥ ऊरू सघन करी कर लाजै
गुल्फन अरुणा गौल दुति भारी कोन होत ना देखि सुखारी
कटि सुन्दर केहरि हि लजावा ॥ तहं नीवी कमि फूंद सुहावा
नाभि गंभीर अजब तरुणाई ॥ कोन देखि वना जात लुभाई
त्रिवली ललित उदर सुख दाई ॥ रोमावली रही छवि छाई
अरुणा कटोर उरोज अपारा ॥ जनु मनोज मोहि सुधा सुनारा
कम्बुकण्ठ की अति अरुणाई ॥ उपमा कहत कवि हि नहिं आई
शशि सम बदन अवरा छवि छाई ॥ गोल कपोल सुधा अरुणाई
लोचन मृग लोचन हि लजावा ॥ नाशा शुक नाशा छवि पावा
कर सुन्दर लाली अरुणाई ॥ नहिं अंगुरिन छवि कछु कहि जाई
भुजा बिशाल लाल सुख राशी ॥ मोहन मुनि मृदु हंसनि अकाशी
अधर अरुणा दशन न छवि न्यारी ॥ भाल बिशाल लाल अति भारी
शीश कार घुंघुरा लै बारे ॥ ॥ बार बिशाल मृदुल अति कारे
भूषण वसन बदुत तन सोहे ॥ देखि मुनीश नारि मन मोहे ॥
ताहि देहु विधि गयो कृपाला ॥ गौतम नारि सहित तेहि काला
रहत रही बन तप मुनि करई ॥ नारि रूप लखि तन दुख हरई

दोहा : जोजन हू देखत नारि नर सुन्दर रूप बिशाल ॥
मदन भवन लखि बदुत तन अति तनु हृदय विषाल

चौपाई

सुनति मुनि देवन तहं आये ॥ देखि बदन छवि अधिक लुभाये
मुनि भय मानि निकट नहिं आये ॥ फिरि फिरि जात मदन तन छाये
कलन परत सुर मन्दिर माहीं ॥ जबहि देखि ढूंढ तुम छाहीं ॥
सची सि नारि हृदय नहिं भावे ॥ बार बार गौतम बन आवे ॥

लोचन्नखोलि मनेहु निहारै ॥ कबहुन सत जाय निज दारै
नाना रूपस्वरूप धरि गावै ॥ * ॥ देखि निरास दारा नहिं पावै
गाढ पहर धूमत बन भारी ॥ छाडिदई सुरपुर सब नारी ॥२॥
दूत लगाय बहुत तहँ दीन्हे ॥ गौतम खोज रहत सबलीन्हे
एकदिन गौतम हृदय बिचारा ॥ फलन काज बन गात सिधारा
यह प्रसंग गौतम नहिं जाना ॥ ताते बन चलि कीन पयाना
यह अन्तर सुरपति जब पावा ॥ गौतम रूप धारि तहँ आवा
दोहा परम शालधी सजाय तहँ भोग कियो सुरनाथ
यद्यपि जानति मुनि नारि तहँ मुरबल हे सुरपति साथ

चौपाई

नारि चरित्र कहू नहिं पावा ॥ सुरपति हित पति रूपन पठावा
हरष भाव करि नयन कटीले ॥ कोमल भुज सुरपति कटि मीले
नारि पाय पति रूप न रीझै ॥ कंत कटाक्ष अधिक सुख पावै
नर नारिन गति को कहि गावै ॥ रवि को कमलिनि नारि कहावै
रवि जब जात अस्त गिरि भानू ॥ भ्रमर हिरदय बसाय निशानू
जड़ की अस करणी मुनि जानी ॥ बहु विधि ज्ञान पुरा तब खानी
तबलगु मुनि गौतम तहँ आये ॥ सुरपति भवन निकसि पग छाये
निकसत भेट भई मुनि जाना ॥ कीन अधम किये मुनि बाना
सत्य बताव चोर अभिमानी ॥ नाहिन करत भस्म तप जानी
दोहा देखि असुरपति निसि भेष मुनिहिं कोप अति घोर
भयो चकित जिमि चोर निशि अरुणाई लखि भोर

चौपाई

थरथरात सुरपति मुनि बानी ॥ धरि निज रूप जोरि युग पानी
मैं सुरपति अनङ्ग कर चेरो ॥ * ॥ कियो पाप क्षमि दीजै मेरो ॥
सुनि गौतम सुरपति सुख बानी ॥ कीन्हो क्रोध कुटिल मन जानी

जेकारण सुरपति तुम शापे लम्पट योनि सुरेश कहाये
एक योनि हित पाप करात्मा ॥ कीन्ह्यो हैय सहस तव भात्मा
दै सम शाप नारि पछिताये । देवी गाय कम्प तन छाये ॥ ॥
देखत गिरी चरण मुनि नारी ॥ हाथ जोरि कछु बात सिधारी ॥
तप प्रभाव मुनि वर सब जाना ॥ नारि चरित्र पुराण बखाना
दोहा- दियो शाप अति घोर मुनि तब उर कृपा कृपाल
दुष्ट शिला सम होहु तुम सहो शीत बिकराल

चौपाई

तिण सुत तपज जड़ तन धारी ॥ ध्यावहु राम पती बन न्यारी
जब तुम हो य मनुष तनु धारी ॥ कौ शिल्या सुत सबध बिहारी
शाबहि राम नाम बन माहीं ॥ पद परसत होइहौ छबि छाही
होइहै पुनि सुन्दर तन तेरो ॥ नाश होय अघ पुनि मम मेरो
सम कहि मुनि निज भवन सिधारो ॥ परी शिला तल नारि पधारो
सुरपति शाप जबै बिधि जाना ॥ सुरपति संग सब कीन पयाना
मुनि की जाय बन्दना कीन्ही ॥ शाप उधार हित मति दीन्ही
अब सुरपति प्रणाम पद कीन्ह ॥ शाप उद्धार तुरत करि दीन्ह
होय नयन सब योनि बिशाला ॥ सहस्राक्ष करे नाम बखाला
बन्दि चरण सुरपति चलि शाये ॥ नयन हजार काय पर पाये ॥
नारि शिला परि पर तप करई ॥ मलिन कृशित जड़ मुनि हिय धरई
दोहा- एहि बिधि बनत्या कुल रही मुनि बर बचन प्रमान
कब ऐहैं रघु वंश मणि दशरथ सुत भगवान ॥

चौपाई

यह सब कथा कही मुनि गाई ॥ जाय नारि रघुवर हि देखाई
जब देखी रघुवर मुनि नारी ॥ चरण सरोज परसि प्रभु तारी
भयो ज्ञान सब रही न शङ्का ॥ देखि निहारि राम धनु शङ्का ॥

पीत बसन कटि तूणि सुहावे। कमल नयन साणि कर धनु सोहे
स्मित दशन मुनि द्वित सुन्दरताई। श्याम सलोन अङ्ग छवि छाई
एम रूप देखत मुनि नारी। कर युग जोरि विनय करे भारी

भजन सोरठ

निकसत भेट मुनि सो भर्वू। चीन्हि लीन्हो योग बल
मुनि शाप दुहि दई॥ गये तहाँ फिरि नारि देखी रूप सो भा
नई। जानि नारि चरित्र मुनि की दया उरते गई॥ दयो शाप
कठोर कोरिस नारि जड़ता लई। कहो मोचन की जतन
प्रभु बरष बीते कई॥ होयगो दशरथ कुँअर सहि राम जो
सुख मई। परत पद पंकज तुरत शङ्क होयगो यश हई॥ फेरी
शङ्कर सोहि मिलिहो मुनि कथा उर धरई। १२।

श्लोक

तस्मिन्घोरतमे बने मुनिरभूद्योगेश्वरो गौतमः पत्नी
तस्य गुणान्विता प्रियतमा हल्या सुरेशः कदा। तस्यै सो
ऽप्यगमन्मुनीश वपुषो दृष्ट्वाऽपरे शंतदा शापन्ता मदद्य
यावदिनेश जाड्य रघूणां पतिः॥११॥

शये को जानी तेनिज पुरुष संगोन हि तथा यथा स्त्रीणां
चेतः पर पुरुष संगो रमयति अपिस्वरं भुत्वादिवसमेक
लं वासर कृता कर स्पर्शा दिन्दो र्मुकुल पति नेत्रा णिन
लनी॥१२॥

चौपाई

जय शुद्ध मन सुर हित कारी। शसु रसा जल शव धनि हारी
जेहि पद धोय भयो निधि पावन। जय नाहरि वराह तन बामन
जब जब होय धरम सहि छीना। बाढ़ै शसुर शुधम बल पीना

गावत यश श्रुति पार न पावा ॥ भजि जेहि नर सुर लोक सिधावा
भजत देव विधि मुनि त्रिपुरारी। पावत पार न किमि तव नारी
मैं शठ कीन बहुत रघुराई ॥ दयो शाप मुनि लहु जड़ताई
बीते बहुत दिवस बन माहीं॥ सहत शीत तप जल तम छाहीं
परत पराग लही शुभ देहा ॥" भयो ज्ञान सब गत सन्देहा
तुम्हरी कृपा देहु पुनि पाई ॥ अस कहि फिरि पति सङ्ग सिधाई

भजन

मुनि रघुबीर शापते तारी । छूटि गयो मुनि शाप ताप तन
राम कृपा भइ नारी ॥ अस्तुति करि बहु विधि रघुबर को पति
सँग जाय सिधारी ॥ मुनि हरषे सुरेश सुमनन की वृष्टि करी
बन भारी ॥ शङ्कर देखि तरङ्ग गङ्ग को रघुपति कथा प्रचारी ॥१३॥

श्लोक

भव भय हरमेकं भानु कोटि प्रकाशं करधृत शरचापं श्यामसमेधाव भासम । कनक रुचिर वस्त्रं रत्न सत्कुण्डलाढ्यं कमल विशद नेत्रं सानुजं राम सीडे ॥ १३ ॥

दोहा श्री रघु कुल मणि अनुज युत तारि विपिनि मुनि नारी
चलत देखि सुरसरि वचन बोले सुर भय हारि ॥

चौपाई

नाथ कछुक हम पूछा चहहीं ॥ बिन शाय सु प्रभु कहि विधि कहहीं
कौतुक नाथ होत मन माहीं देख तव नागरि कर जब जाहीं ॥
सुनि सुनि अस रघुबर मृदु बानी बोले चितय जानकी रानी
डरहु न राम कहहु मन मानी ॥ पूछत कहहु कथा जस जानी
तब बोले रघुबंश कुमारा ॥ देखि पुनीत सुरसरि य धारा ॥
कैसे महि सुरसरि मुनि शापी ॥ कहहु नाथ मोहि सब सम्भु भाखी
सेवत जेहि सुर मुनि ऋषि ज्ञानी पावत सुर पुर शय परानी ॥

सुनि हरषे मुनि कथा पुरानी। लागे कहन महा मुनि ज्ञानी

भजन

कैसे मुनि सुरसरि मोहि आई। सुख दायक तारक पतितन की कौनि शक्ति बहाई॥ धनि वह देश भूमि नगरी धनि श्रुति जाको यश गाई। सेवत तरे अनेक तरत हैं तिहैं जीव अन्हाई॥ शङ्का सुनि मुनि प्रश्न राम की पूरब कथा सुनाई॥

श्लोक

कथङ्कृता भूमौ मुनिवर पुरा गात्रि पथगा स्वयम्भानी
तेयं कथय हरनेजागि न शमनी। लभन्तेते मोक्षं कर
सुख बिशालाक्षि श्रवणो : पिबन्ति स्नाने खरन ख·
लुगच्छन्ति सुख दा ॥१३॥

दोहा सुनहुँ राम रघुवंश मणि तुम्हो कुलप्रभिराम
भयो सगर भूपति प्रबल शति यश रूपललाम

चौपाई

तिन्के राम रहीं दुइ नारी। रूपवान गुणधाम उदारी
साठिहजार एक सुत जाये। एक एक शस मज्जस पाये
शस सञ्जस तप जायसि धारा। अंशुमान ताके सुत तारा
बहु सुत जाने यज्ञ नृपजानी। अश्वमेध शत कीनि महानी
जब शत पूरि करन न्टप चाहा। सचीनाथ तब मन अवगाहा
जो यह पूरहोय हय मेधा। लागै बेगि राज्य गमबेधा
शस बिचारि छल रूप बनावा। अश्व मेध हय जाय चुरावा
लै छोलकपिल निकट कोशाये। शस नाथ मन जिय सुख पाये
खोजत अश्व मिल्यो जब नाहीं। व्याकुल भूप भयो मन माही
दोहा यज्ञ भूमि बैठे नृपति मन न लहै बिश्राम
बिन तुरङ्ग यहु यज्ञ कर कोहि बिधि पूरण काम

चौपाई

बेगी सकल सुत भूप बुलाये । आय सुपाय बेगि तहँ आये
देखेसगर निजहुकुम सुनावा । लावहु अश्व यज्ञ नियरावा
सुनि नृपबचन चले सब भाई । खोजत खबरि कहूं नहिं पाई
कोपअधिक मनसबन बिचारी । डारब सबहम भूमि बिदारी
दूढ़ब तिहुँपुर अश्व विचारा । लागे खोदन करन कुदारा ।
जहँ देखा तहँ कोटि उपाई । कोटिन लागे मनुज सँग भाई
खोदत गये कपिल जहँ रहई । देखा अश्व तहाँ तब कहई ।
कैसे अश्व यहाँ चलि आवा ॥ सबन शब्द तहँ जाय सुनावा
दोहा- सुनत शब्द दारुण श्रवण जागी कपिल समाधि
क्रोध भरे चितवत भये भस्म रहे फिरि साधि

चौपाई

जब नृप सुधि सुतन की पाई । अंशुमान नृप निकट बुलाई
लागे बचन कहन ससुझाई । तात करहु कछु बेगि उपाई
पूरण यज्ञ होय यश भारी । तिहुँपुर कीरति होय तुम्हारी

भजन

तुम्हरे कुल एक सगर भयोरी । ताके पटरानी सुनियत दुइ
व्रत तप कीन्ह मनहि दियोरी ॥ एक रानी भये साठि सहस्र
सुत एकै एक सो बनी है गयोरी । सगर करी हय मेध
अश्व हरी छल करी इन्द्र चुराय लयोरी ॥ राखो जाय क-
पिल मुनि आश्रम सगर सुतन को गरब पढ़योरी । ढूढि फि-
रे सब लोक भूमि खनि दीन्ह अश्व कर शब्द दयोरी ॥ छूटि
समाधि क्रोध चितये मुनि छार भये नृप यश रितयोरी ।
अङ्कुर अंशुमन्त सुत को नृप देखे सगर अस बचन कह्यो
री ॥ १४

श्लोक

तम्भवराजा सगरस्तवान्वये पुत्रस्त्रियः सामरपूजनीयः एकाः
पुत्र्यानृपशैव रस्यबभूवुरुषष्ठि सहस्र कारिणा ॥१३॥ वि-
लोक्य पुत्रान्सगरोऽश्वमेधंच कारतत्रेत्यजहारसोऽश्वम्
दून्द्रस्तदात्येषणदेतवे सुतान्सः प्रेषयामास सुरेन्द्र विक्रमः
१४ तेसर्वेसगरात्मजाः क्षितितलंभित्वा मुनीन्द्रोग्रसगा-
त्वा तंतुरगंविलोक्यचरवंचक्रुःसमाध्यंतवं। तान्कपि-
लाः कपिभानलेन नृपजानभस्मंचकारशुतान्दध्यावृ-
हासनातनंपुनरेहकालोमहान्दुस्तरः ॥१५॥

चौपाई

खबरि न तात सुतन्की पाई। केहि दिशि गये सकल मिलि भाई
तात बेगि तुमखोजहु जाई॥ लावहु अश्व यज्ञ सुखदाई
देहि यज्ञ पूरण यह मेरी ॥ कीरति भूतल होय केरी ॥
कीरति होय न भूतल जाकी॥ भयो सो वृथा गरभ नर माकी॥
कीरतिहेत देव मुनि भूपा ॥ सहि विविध विधि लोश अनूपा॥
होय अकीरति जेहि तन पाई॥ जियत मृतक वेदन तेहि गाई
दोहा - तन धन देहु महानन नारवत कीरति तात
तातेरावहु मोर यज्ञ करहु धन्य पितु मात

भजन

खबरि न तात सुतन्की पाई। कोसे गये अश्व भूतलतेय
हि अचरज कछु कहो न जाई॥ गये अश्व ढूंढन नाये नहिं
ताते हमरो मन अकुलाई॥ अंशुमान ढूंढो पितन को
पायो न बहुत खबीलगाई॥ चल्यो कुमार हरषि ढूंढत तहँ स
गर भूप डर कुकुम बसाई। पहुंच्यो जाय कुमा तहाजहँ मु-
नि बर सबलगितदीन जनाई। देखि मुनिहिं कीन्ही अस्तुति

सुत तबहिंगरी मुनि कह्या सुनाई ॥ जरे क्रोध सों सकल सगर सुत
बहुत भाव भये दुखदाई ॥ तुम लाव कुटुम्ब के तारन को गङ्गा को
रितप कोहि उपाई ॥ सुनि शङ्कर गहि अश्व लाय तहँ पूरण
यज्ञ कुमार कराई ॥ १५ ॥

श्लोक

एको योऽप्यसमंजसस्य तनयस्तं प्राह राजा व्रती पितृव्यान्स
तुङ्ग कीर्ति सहिता नानन्द दानयपरान् श्रुत्वा भूपवचः सगर्व
सहितः सं प्राप्य तत्रादरञ्चक्रे तत्र मुनेस्सवं पित्र प्रणान् चावी-
क्ष्य भस्मी भवान् ॥ १६ ॥

चौपाई

सुनि अस वचन सगर नृप केरो ॥ कह्यो प्रणाम शीश पद हेरो
अंशु मान तब खोजन गयऊ ॥ सगर यज्ञ विधि मह मन दयऊ
कूटत गयो जहाँ सब भाई ॥ करी मुनीश कृत दीन जनाई ॥
जाय दीख मन अति अकुलाना ॥ अश्व देखि धीरज ज्ञाना ॥
मन अनुमान गरुड़ कर जाना ॥ सब प्रसङ्ग भूपति सुत जाना ॥
ठाढ़ कर जोरि बिनय अति कीन्हा ॥ जय सुर मनुज तनुज तनु दीन्हा
सुनि प्रसन्न मुनि वर सुत बानी ॥ बोले बचन मधुर मुनि ज्ञानी
दूसर सगर भूप सुत आये ॥ जो सकाल कृत करम सुहाये
लै यह अश्व बेगि घर जाहू ॥ दुनहु को काज गङ्ग महि लाहू
करी प्रणाम लय अश्व सिधाये ॥ आयो जहँ नृप सगर दुवारे ॥
कही कही मुनि वर जो गाई ॥ द्वारा दुख भयो मन हि समुझाई
दोहा देखि मोह गुरु सगर कर तबु बिबुध धीरज लाय ॥
कहन लगे मुनि ज्ञान दृढ़ जग अनित्य दरशाय

चौपाई

गुरु बानी अति बज्र न सिरावा ॥ जग अनित्य कहि भेद देखावा ॥

तात ब्रह्म माया सब छाड़ू । कौन सत्य मातु पितु भाई
नरपावर की कवन गनावै । पृथ्वी तेज वारि नशि जावै ॥
शशि रवि नभ दिश रैचर तारा । कहत न काल करत संघारा
बहु सुत नारि बन्धु घर छूटे । जहं जब भयो काल गहि कूटे
शोचत काहि भूप सत ज्ञानी । कहत न मुर मुनि शत मज्ञानी
द्वन्द्व जाल यह जगत बनावा । देखत बनत कहत न हि आवा
ब्रह्म सत्तादि रूप मुरवरशी । तहं माया भ्रम सकल प्रकाशी
जगत तरङ्ग ब्रह्म जल रूपा । ना मुहि भेद कहत मुनि भूपा
दोहा० यद्यपि झूठ भ्रम मिटत नहि जिमि शठ हि रज्जु निहारि
उपजत जगत प्रपञ्च तहं लखवत नु गरुड़ विहारि
झूठो स्वप्न प्रपञ्च भूमि देखत ही को सांच ॥
जिमि मरु भूमि देखात सत बारि धार सहि कांच
मुनि शप बचन मुनीश कर उपज्यो शात मज्ञान
जिमि न मोह शनि त्यजा उपज्यो नृप उर भान

चौपाई

पूरण यज्ञ कराय भुवान्नू । सगर गयो बन गृह तजि हान्नू
पूरण ब्रह्म समाधि लगाई । तजि शरीर सुन्दर गति पाई ॥
शशु मान सुत भयो दिलीपा । सौंपि राज्य सुत कहि शवनीपा
गयो करण तप सुरसरि हेतू । सहत शीत तप बारि बहेतू ॥
बीती बर्ष सहस दश ध्यानी । सुरसरिता न कही कुछ बानी
छूटो तनु सहि गङ्ग न आई । भूप दिलीप खबरि शस पाई ॥
दोहा० भयो शोक धरि धीर नृप हृदय सुरसरी काज ॥
बहु बिधि कीनि विचार उर भूप कुशल महाज

चौपाई

दे सब राज्य सुतहि समुझाई । गयो करन तपहि गिरि धाई

बहु विधि कीन्हि यतन तप केरी। शार्दूल सुरसरिता महि हेरी
तनु तजि तहँ दिलीप नृप दीन्हा। सुरसरिता शुभ गमन न कीन्हा
जब शशि रवि की भगीरथ पावै। मन विचार कह पुरहिं सिधावै
पालत बहु राज्य सकल सुख मेरी। साम दाम दय दंड को रेरी ॥ ॥
होत शुभ धर्म न महि कछु पावै। कुल कलङ्क नहिं मोहिं लगावै
दोहा जेहि नृप महि उपजत शुभ शोभन नृपति सुवखानि
शक्त नरक पावत नृपति वेद पुराण बखानि ॥

चौपाई

शुभ कहि भूप कीन्ह प्रस्थाना। सुरन सुमिन धनि धन्य बखाना
धनि जननी जिन शुभ सुत जाये। मातु पिता कुल कीरति बढ़ाये
धनि वह राज्य जन्म जब भयऊ। धरिय सो धन्य गमन जब लयऊ
जप तप भाग्य होय बहु तेरी। तब शुभ सुत पावत श्रुति टेरी

भजन

गयो तप करन सुसरी काज। शशु मानु पतित हिम सहि महि
इन्द्रि सटोरी साज ॥ भई प्रसन्न न ही सुरसरिता छोड़ो तन
महराज। ताको तनय दिलीप कियो तप शार्दूल लाज॥
शङ्कर तेहि सुत भयो भगीरथ तेज पुंज संभ्राज ॥ १६ ॥

श्लोक

यज्ञं चक्रे सगर नृपतिः प्राप्य चाश्व मुनीशात्पौत्रो देव सरि-
ज्जलाय सुरवदं सांगायन्तो पागता। श्रुत्वो येत्य तथैव तत्र न
पसेदधे दिलीपो सन्तो देवानां सुख हेतवेन्न चतनुं त्यक्त्वा
गमत्स्वः परम् ॥ १७ ॥

चौपाई

जाय भगीरथ गिरिवर देव। शापन्न जन्म सुफल करि लेव।
शासन सम शुभ देखि बखाना। ब्रह्म रूप मन रवि चि लगाना

इन्द्री जीति बुद्धि मन लाये ॥ भेद अभेद समाधि लगाये
कुराइलनी धारे स्वास अगारू ॥ रोडश कमल भेदि तन पारू
कमल नाल धरि स्वास अगावा ब्रह्मानन्द स्वाद नृप पावा ॥
भकुटी पाप पुरुष तहँ जागा ॥ अमृत वारि तन पुरुष सिधारा
अमृत पान कुराइलनी कीन्हा॰ सावधान ह्वै पद्मचित दीन्हा
दोहा॰ इन्द्री सकल मिलाय मन मनबुधि थिर नृपलाय॥
ब्रह्म द्रवहि मरि तहि निरखि रह्यो समाधि लगाय

चौपाई

ब्रह्म रूप जब गङ्गहि जाना। एक सहस्र पद ढाढु महाना
अमर कुण्ड चरण भयो ढाढो॰ सुरसरिता उर आनँद बाढो
साय प्रगटि निज रूप देखावा ॥ बोली बचन हृदय तप भावा
सुनहु भानु कुल भूषण भूपा। कवन हेतु तप कीन्ह अनूपा
भूप मर्दु तप देखि निहाला। कहु सो काज अजित तत काला
काहु न अस तप कीन्ह भुवाला। नहिं सुर असुर दनुज अहि पाला
दोहा॰ देखि भूप तप मनुज पति अति उपजी तन प्रीति॥
माँगु बेगि वर देहु नृप तजि भुवाल दुख भीति

चौपाई

तब कर जोरे कहो शुभ बानी। पुरुष पितर प्रसङ्ग बखानी
तिन के काज अजित तप कीन्हा चलहु भूमि कर कृपा प्रवीना
जेहि विधि पितर तरहिं सब मोरे। करहु कृपा मोगत कर जोरे
सुनि अस बचन कहो सुरसरिता। शिवहि करहु प्रसन्न अति तरिता
साधहि बेग मोर जल केरे ॥ एहि विधि भूपति होय निबेरे
सुनि अस बचन भगीरथ आये। शिवहि हेतु भूप समाधि लगाये
बीती बरष बहुत तप कीन्हा ॥ आय महेश दरश तब दीन्हा
लोचन खोलि कृपाल निहारा। दीखि कठिन तप भूप अपारा

नायउठाय शरीरलगावा "मागु मागु वर बचन सुनावा "
दोहा० सुनत बचन त्रिपुरारिकर हरषे भूप महान "
शीश चरण धरि विनय अति बोले बचन प्रमान

चौपाई

तब सब कथा भूपनिज गाई० कशित गात लोचन जल छाई
देखि दशा भई प्रीति अपारा "कहो जाय धारौ जल धारा
सुनि शङ्कर के बचन नरेशा० कहो जाय सुरसरि करदेशा
जानि वेग सुरसरित सम्हारा० छूटी कोटि जा जल धारा "
देखि वेग शङ्कर जिय जाना० चि भुवन नाथ हृदय सुमकाना
शीश जटा धर जटा बढ़ावा "रोकि लियो सरिता जल सारा
भ्रमत फिरी कछु द्वार न पावा० शिव अपनो यह तेज देखावा
पुनि जब कीन्ह भगीरथ सेवा० शिव शङ्कर जाना सब भेवा
दीन्ह प्रसन्न जल धार निकारी० देखि भूप तब भयो सुखारी
आगे भूप चलत जहँ जाई "तहँ तहँ धार तासु देखाई "
जहँ तप जन्हु करत तहँ आई० सागर कुश जल पत्र बहाई
तब मुनि कोप कियो मन माहीं० पान कियो जल रह्यो न ताहीं
दोहा० करी पान जल धार जब रह्यो न वेग प्रमाण "
फिरयो भूप अति दुखित मन जहँ मुनि देह महान०

चौपाई

भूप देखि अति भयो दुखारी० अस्तुति करी कथा कहि सारी
तब मुनि मुनि हिं कृपा जिय आई० सुरसरिता हँसि वेगि बहाई
उठत तरङ्ग गङ्ग माहँ आई "कच्छप मगर अनेक देखाई
एहि विधि न्हाय करी मन पावन० रह्यो कछु तहँ सघर खलनाशन
जब मुनीश आश्रम चलि आई० परसत भस्म सबन गति पाई
तेरे सगर सुत सुरपुर जाई "केवल भस्म छुअत सब भाई

ऐस प्रभाव सुरसरितोहि केरो । कोन तरत जल सेइ को रो
जोना जानि करत जल पाना · दरश परस चलि मलिन सन्ताना
कसन तरै नर पीवत राजन पाण्डुतनय हो दुख भाजन
भागीरथी नाम मुनि गावै । भूप कीर्ति कर ध्वज ह्व बनावै
कथा मृकण्डुतनय यह गावै । मुनि मन धरमतनय हरषावै
जब रघुबर सुनी हरषाने । साधु न वाय सफल तन माने
मुनि कुल कथा ललित दोउ भाई । प्रनँद नयन नह्यो जल छाई
बहु बिधि स्तुति करि रघुराई । अनुज सहित चलि जाय न्हवाई

भजन

भगीरथ कीन्ह महा तपजाय । ढरहो गङ्गा चरण सो सह
स बरष मन लाय ॥ बादुं उठाय लगाय नयन दोउ रह्यो पवन
को खाय । भई प्रसन्न उतरी सुरसरिता बचन कह्यो यह
साय ॥ कौन काज करत राजन तप कहो मोहि समुझाय ।
कह्यो प्रसङ्ग गङ्ग मुनि नृप की बोली कलुक रिसाय ॥ को स
धि के महि वेग धारका यातो करहु उपाय । यह सुनि भूप
साय शङ्कर हित रह्यो समाधि लगाय ॥ जानि उमापति क
ह्यो मांगु वर नृप बोल्यो हरषाय । उतरे चहति भूमि गङ्गा प्र
भु तासु पित समुदाय ॥ शङ्कर ताके वेग गहन को वीर न
कोई देखाय ॥ १७॥

श्लोक

गत्वा सवर्णो दिलीप तनय स्तत्र प्रधानो : नि श्चक्रे ज्ञा
न तपस्तत : सुरसरित्तो वाच मुपं मुदा । श्रुत्वा तो वय भू
पते स्थिति तले पतान्कगिरेय पितन्सर्व तत्कृतवान्भागी
रथ नृप : सो पागता जान्हवी ॥१८॥

भजन

सब प्रभुता को नाथ सभारो । करि अति दया ब्रह्म सम डलते गङ्गहि भूमि उतारो ॥ शम्भु लगाय परो चरणन में दुखते मोहि उबारो । तुम पालक सब केहि भुवन पति गावत वेद चारो ॥ शङ्कर होय अनुकूल कृपानिधि लोचन खोलन हारो ॥ १७ ॥

भजन

दीन बचन सुनि गुनि त्रिपुरारी । कह्यो रथि साधो गङ्गा तट भूपति अति होंहु दुखारी ॥ जाय बचन सम कह्यो भगीरथ सुनि गङ्गा बल सपन सम भारी । शम्भु सहित पातालन जाव लय जब गङ्गा असहृदय बिचारी ॥ गिरे सुजार धार धरि मुचा तब महेश शिर जटा पसारी । भूमि गई शिर जटा जालमें नहिं निकसन को द्वार हारी ॥ करी विनय कर जोरि भगीरथ तब निचोय कछु बूंद लहारी । भगीरथ अवधेश चले चढ़ जहँ मुनि कपिल कपाल लहारी ॥ पीछे उडत तरङ्ग गङ्गको धनि महीप सुर मुनिन कहारी । परी भस्म पारसत सुर पुर सब सगर सुतन तरणा जाय लहारी ॥ शङ्कर मुनि हठे रघुकुल मणि शान्तनु नयन प्रवाह गहारी । ११ ।

दोहा - मुनि रघुनन्दन लखन युत जाय सन्ह्यो गङ्ग ।
चले जनक पुर सकुल मिलि मग कहि कथा प्रसङ्ग ॥

चौपाई

पहुँचे मुनि मिथिला पुर जाई । श्री मिथिलेश खबरि सम पाई ॥ मुनि पूजन कहँ साज सजावा । लय मिथिलेश भूपतहँ आवा ॥ देखत मुनिहि शीश नृप नायो । पूजन करि शासन बैठायो ॥ पूछी कुशल सकल कर जोरी । तुम्हरी कुशल नाथ सब मोरी ॥ शुभ मन्त्रिन्ह कह मुनिहि देखावा । देखि सुघर मन्दिर मन भावा ॥

जब देखे नृप बालक साथा । सुन्दर गात लिये धनु हाथा
श्यामल नयन सुन्दर रतनारे । देखि भूप मन भये सुखारे
पूछ्यो भूप नाथ ई काके । बालक साथ बीर अति बाँके
तब मुनि सकल कथा कहि गाई । जेहि बिधि साथ भये रघुराई
कहि सब यज्ञ कथा मुनिराई । कह्यो ताडुका बधि समुझाई
सुनि अस जनक हृदय हरषाने । पुरुकुल सपन सफल निज जाने
श्याम सुपाय जनक घर आये । पुर बासिन प्रसङ्ग यह पाये
सब मन कहहिं नगर नर नारी । होय भोर कब हेरि पुरारी
लोचन सफल करब हम जाई । सुनि यत कोइ श्राये दुइ भाई
कोइ कहे सखि दशरथ के जाये । मख देखन मुनि के सँग आये
दोहा॰ यहि बिधि भयो प्रचार पुर उमगी प्रीति महान ५
देखब अब दशरथ सुतन चढ़ि चढ़ि भवन विमान

चौपाई

६ दूतन्हि राम कीर मुनि पद सेवा । सुमिरी मातु पितु निज गुरु देवा
श्रयन बनाय लषन दोउ भाई । श्रयन कीन्ह आनन्द अति पाई
भोर भये कीर करम शरीरा । मुनिवर दीखि नगर नर भीरा
कह्यो मुनीश सुनहु रघुराई । श्रावहु देखि नगर दोउ भाई
देखि बीर अति बहुर रघुनन्दन । चले लषन सँग कीर मुनि वन्दन
श्याम गौर धनुष कीर लीन्हे । पीछे अनुज अग्र मुनि दीन्हे
नागिन खबरि भवन जब पाई । मुनि आनन्द तन मन न समाई

भजन

एहि बिधि कथा सुनत रघुनन्दन । पहुँचे जाय जनक पुर
में मुनि सहित लषण खल वृन्द निकन्दन ॥ सुनि मि
थिलेश बढ़्यो आनन्द जिय श्राय कियो मुनि के पद व
न्दन । पूछत ई काके बालक सँग सोहत दुइ बिन

राजस्यन्दन। शङ्कर दूजे बालक दशरथके भये ककुस्थवंश भवनचन्दन॥ १९॥

भजन

सुनत बचन आसन नृप दीन्हा। करि सतकार पाय जनक फिरी दीउ सुत आपु गोद लय लीन्हा॥ आनँद उरन समात देखि सुत कहो महा दशरथ तप कीन्हा। सुतदाग धन रूप खूब जेहि जान्यो महा तपिन के चीन्हा॥ शङ्कर पलक न लागि जनक के मूरति देखि नयन रस पीन्हा॥ २०।

भजन

मुनि भूपति को मानि कियोरी। जो लाये मुनि काज राज धन सो हरषित मुनि सकल लियोरी॥ बिदा कियो मुनि बेगि जनक को एमल षत मन शयन दियोरी। भयो प्रचार सकल मिथिला पुर सब दरशन को चाह भयोरी॥ शङ्कर भोर होय कब सुन्दर नर नागिन के हरष हियोरी॥ २१।

भजन

तनक मुनि पाई भनक सी कान। श्री अवध राकुँवर आये पुर कर साधे धनुबान॥ मृदु मूरति किशोर मुनि के सँग देख सब होत भिहान। खबरि भई घर घर मिथिला पुर खलभल पर्यो महान॥ शङ्कर सुख उपज्यो सबके हिय उमगे बाजत गहान॥ २२॥

भजन

भोर भये नर नारि जनक पुर। धाई कोउ कोउ सुनि मन्दिर चढ़ि कोउ गलि पन ठाढ़ी नागर जुर॥ को जानै निकसैं कौनी मग दय कोउ न यत्न भरोस एही जुर। कोउ कहै की लेश बो एही मा कोउ कहै हम मुनियत सखि कोउ सुर॥ शङ्कर को जानै नाद की बात कही होय जाय नरी फुर॥ २३॥

श्लोक

भुजंगाः प्रयाता भवन्ती हतस्य भुजंगा प्रयाते नयस्तोतिदेवी म् । भुजंगाधिनाथो भवे हा भुजंगीनमस्ते नमस्ते नमो देवि गङ्गे ॥ स्नात्वातत्र मुनीश्वरोगा सहितोगमस्तथा लक्ष्मणो गंगाया मनुजेन मिच्च मुनिना प्राप्तः सहारात्युरीम् राजस्तं मनुजाधिपस्तदुभयंचान्तर्दधौ वै मुनिर्नत्वातत्र विलोकनाथ सकलामाज्ञा प्रयत्सम्पदाम् ॥ १९ ॥

चौपाई

जीमगजात कुँअरदेउ भाई । एकटक नयननागेहि लाई
घूंघुट ओटजोट जबदेखे । जन्म सुफल सपनेकारे लेखे
कहैदीख लोचन जल छाये । धन्निवहमातुपिता जिनजाये
धन्य पुरी वहनवधू सलोनी । धन्नि पावन वहकुल विकसोनी
धन्नि वहदेश जहँते आये । देखतरूप सनंगलजाये ॥
देखिरूप तन मनहरीगयेउ । तदपिनतनक विषय मन भयेउ

दोहा

नजरिशमाी मधुसुसकाय । याद भरी दृग फेरिहेरि सीख नबते रहियो नजाय ॥ ढठी हती सपुनेदरवजवा पौरश्चान कसाय । लगा भीतर लगा बाहर आवति मन हरी समुझाय ॥ शङ्कर दे सुंदर दशरथ सुत जुलफन फांद लगाय ॥ २५ ॥

श्लोक

दृष्ट्वा मा रघुनंदनौ नरवरौ तत्रैत्य गौरेतरौ श्यामा दृग्गवास गंगशरधनु सेवाभिधानौ दृशैः । तीक्ष्णाग्रैः कुटिलैः करोमिसखिकी हत्वातनौ जग्मतुः निर्दोनैवलभे मुरंव पुनरहोनेत्राभिरमौ विना ॥

चौपाई

कुछु सज्जनी मोरे मन आई । नारि सुभाव कहतिहू मगाई
रहित बिकार बिषय देउ भाई । तदपि अपन मन कहतिजनाई
आपुस हेरि हेरि मुसक्याई । मेरे जिय औरै कछु आई ॥
जब हेरो प्रभु ओर ताही । नयन भृकुटि मनहुत नकाही
जबतेदीख सखी धनुधारी । भीतर कल न परति थकिहारी
जुलफन फाँद परी जिय मेरे । एहि न जात लोचन बिन हेरे
केउ कहै मोरि दशा सुनु सखरी । ठाढ़ि रहति निज पौरि कोरी
दोहा परतन कल क्षण पल भवन कहौ व्यथा केहि जाय
श्याम मृदुल मूरति नयन सखि हीं सोय

भजन

दूदेऊ कोऊ शिशु आये नयेरी । दूसरि नाहक धनुष छयेरी
दून के नयन बाण अति तीक्षण । काके हृदय न बेधि गयेरी ॥
भृकुटी चाप चढ़ाय मारि कसि पुर युवतिन के प्राण लयेरी ।
हमरे हिय पैठे निकसत नहि कढ़िन सिंगार के काढ़ भयेरी
शङ्कर हम अपने दरवजा ढ़ाढ़ी मृदुल दिदार दयेरी । २७

श्लोक

सानुजं रघुवरं पुरनार्य्यो मानवं समवलोक्य तदानीम्
ऊचुरा शुसु कृतं खलु मातुर्वा नृप स्यचतदाज्ञनिपुत्रम् ।२७।

चौपाई

दूसरि नाहक धनुष लयेरी । नयन बाण हिय बेधि गयेरी
भृकुटी चाप चढ़ी अति बाँकी । बची न नारि मृगी दृग ताकी
हमरे हिय पैठे दृग बाँके । बैठी हृतीय दृपि सुख ढाँके
दूसरि सखी तन सुन्दर त्यागी । कोटि न काम बिलोकि लजागी
सुन्दर कटि कसि तूणी सुहाई । पीत रही अम्बर छवि छाई

कुण्डल कान कपोल सँवारे । गज मोतिन सु माल उरडारे
भुज बन्द कङ्कन भुजन अनूपा । राजत तन सुन्दर छबि रूपा
शीश रतन गूढ़ी सोहै । ए सखि नर नागरि मन मोहै
दोहा देखत तन छबि मृदु ललित श्याम नयन अभिराम
लगत न पलक लगे पर हिं कस देखहु यहि कटि दाम

चौपाई

ललित जँजीर परी कटि माहीं । देखु सुत देखि छी सुधि नाहीं
कोउ कहै सखि हम गढ़ि न राखी । निकसि पो रतन अवधि बिहारी
नयन कोर जब रेखा लि निहारी । चमक गई बिजुली जनु तारी
मुख ऊपर कारे छबि न्यारे । राजत बार सघन घुंघुरारे
टोपी हेम रतन जड़ वाई । दिये सखी देखत मन भाई
देखत फिरत नगर की शोभा । देखत रूप अजब मन लोभा
जब ते भये दृग नते न्यारे । तलफति मीन मनहुं जल जारे
दोहा· कोउ बोली मुसक्याय सखि अपनी दशा बताय
देखि रूप आनंद बढ़ो हम सो कहो न जाय ॥

चौपाई

हम हूँ देखि धाय सखि आई । जात गलिन सुन्दर देखु भाई
श्याम गौर किशोर अति नीके । पुरन्दर लि फिकर अति जी के
निकस गये सखि गह्यो न लागी· जनु युग शावक बाज अनुरागी
जिन जिन देखन जिन सखि देखा· विकल सकल तन भयो अलेखा
मोहि न काज अवन कछु भावै कोटि यतन मन काहि समझावै

दोहरा

हम ढ़ीठी अटरिया मेरी गली । निकसि गये दशरथ किशोर
सखि मारि गयो चित चोर नजरियों ॥ बार कार छलादार जु
लुप युग सर कसी शिलाज चंदरियों । कटि तूणी कर चाप

युगुल शूरवीरवि फिरे मिथिलेश नगरियां । शङ्कर कारी कटी ली हियेमें पैठि गई मेरे नयन कटरियां ॥ २८ ॥

भजन सोरठ

हम सखि देखि आजु आज । बैठिती अपने भरो झरोखे कि येघूघुट लाज ॥ भूप युगल कि शोर सुन्दर निकसि गो नगाज । श्याम गौर सलोने लोचन धनुष शर कर साज ॥ शीश मृदु घुं घुराले राजत बार दीन्हे ताज । निकरि गे अति बेग मानहुं युगु ल जोड़ी बाज ॥ परी अवचक नज़रि मेरी सुनत मधुर अवाज । सुनो जिन जिन दी ख सजनी निकल सखिन समाज ॥ और की को कहै शङ्कर मोहिं भावैन काज । २९ ।

श्लोक

तौ विलोक्य सखि गौरवेतरौ राघवौ मृदु मनोहरौ नरौ नील मेरतलु सुखे विनिन्दिनं सानुजेन कर बाम्मि किंपुनः । २१ ।

चौपाई

निकरि गयो गलियन सखि मेरी । मूरति नयन बसाय घनेरी सुनिय त मुनि पतनी दुनतारी । सुमिवर यज्ञ सबिधि बिस्तारी सुपुर मगरे सुबाहु पढावा । अस हम समाचार कछु पावा एक विशल्य बाण कसि मारा । शत योजन मारीच पधारा ॥ अस जिय हेय सखी कछु मोरे । रहौं साथ इन के दिन थोरे ॥ करहुं सफल यह जन्म सिधारी । कुलजन लाज सकल सखि ज्यारी

रेखता

निकरी गो काहू री करि गो मधुर सुमक्याय दृग भरि गो । खड़ी दरवाजे में अपने अचानक आय दृग परि गो ॥ सुनी हम कुंवर दशरथ के देखि मन मोरी हरि गो । सखी दृग चपल चतुर अति राम मृग मोरी चरि गो । हृदय मेरे कमल मन्दर रमे सांवरी मूरति री

धरिगो। नज़रि जब ताकी मुहि मारी मदन तन मोर री ढरिगो
सुनी बन एक मुनि पतनी परत रज शङ्क रीतरिगो ॥ निशाचर
सुबाहुरी बन में सुनाए क बारण री मरिगो। जबहम साथ दून
शङ्कर लाज कुल कानि री जरिगो ॥ ३०॥

श्लोक

मनसः किम कारे मे नधे रघवेन मनुज्ञेन सा प्रतस सा-
नुजेन सखिज्ञामि मान दे कुच चानय नृपेन्द्र बालकम्। ३२

दोहा एहि बिधि देखत फिरत पुर श्री अवधेश कुमार
महल गलिन हाटन सकल शहर पनाह दुआर

चौपाई

सुन्दर देखि नगर रघुराई। रहे बिलोकि सचल देाउ भाई
शहर पनाह बनी अति ऊची। जनु गढ़ बने सघट पट सूची
चहुँ दिशि दीरघ द्वार बनाये। बंधे निशान ध्वजा फहराये
लगे बिशाल लाल फुलवारी। कोन जात नहि देखि लुभारी
एक बरन सब भवन बनाये। बरन्न वार दुआरन छाये
बने अगोरव हेम मणि नीके। हाट सुघर जनु शशि अरु नीके
महल मढ़ा मरवा के राजै। शिखर हेम के पुन्नत भ्राजै
जड़ी मणी चहु ओर सुहाई। चौक बज़ार अजब छबि छाई
नगर भवन मोरी चहु ओरा। बोलत शुक सारसी पिक मोरा
घिरको छबि छज्जन दुति छाई। गज रथ तुरग सजे चलि आई
नाना भट गाजत मत वारे। चौपदार ढाढ़े दर वारे
नर नारी जब रूप निहारी। भये प्रसन्न देखि धनुधारी
एहि बिधि अनुज सहित रघुवीरा। नगर देखावा पुनि सब पीरा
देाहा भये थकित लोचन निरखि बाबा पुरेखि
जनु शशि अवलि छबि सलिल जनि रूप मन लीन

जो न देखनागर देखु भाई । भई चकित पूँछत मग लोई
कोउ बिलखाय रहो कर जोरी । सब तिरंजक करवय हम मोरी
निदरत मग बेगि सति धाई । पूँछत कितय गये देखु भाई
एहि बिधि धाय धाय मग देखे । जन्म सुफल निज नयनन लेखे
दशरथ कुँअर फिरे पुर देखी । बची न चैन क गली कहुं शेषी
धाय तुरत मुनि के पद बन्दे । छूटि गये नागिन दृग फन्दे
जब मुनि न्हाय बैठ कुशासन । लाये फूल राज जन भाजन
दोहा देखि फूल रघुवंश मणि दुरलभ भूतल जानि ।
कवन यतन चलि बाटिका हैं देखनु धरि मुनि कानि

चौपाई

समुझि राम पुनि पाय सुभागा । फुलवाई रघुबर मन लागा
जानि हृदय मुनिवर सुसकाने । बाल हृदय सब जानें
कहो मुनी शुभ जाव फुलवाई । लावहु फूल पत्र चलि जाई
जब पाय सुरघुनन्दन पावा । अनुज समेत हरष पुर छावा
उमगेउ प्रेम नयन भरि आये । पट कटि पीत कसे शिर नाये
तूणी कसि धनु कर गहि लीन्हा । ताज मवारि शीश निज कीन्हा
जुलुफ युगुल कर रेखि सिधारी । बिहंसि अनुज तन दीनि दिढारी

भजन

सुन्दर देखि नगर रघुराई । रहे बिलोकि अचल लोचन की
कहि न सकत गहि देखवाई ॥ शहर पनाह बनी उन्नत जहँ च
हुँदिश लगी फुलवाई । जहँ मृग एक सुघर मन्दिर तह
तेहि मम रचे बनाई ॥ लगे दुआर षट मरकत के मणि नग रही छ
बिछाई । चौंक शो के देखत रघुनन्दन जहँ नग बनी
जड़ाई ॥ हेम शिखर राजत मन्दिर पर शोभा बरणि न जाई
लागी अनोख दीप दुपहा तजि नागि सुमन भरि लाई । मणि कुट्टिम

देखि राम लक्ष्मन छबि कौतुक उरन समाई॥ ३१॥

भजन

तनक बिलंब सों हो कर जोरि। श्री महराज राजदशरथ के श्रावत हैं मेरे खोरि॥ करिहौ ठाढ द्वार मन्दिर के करि करि श्रवन निहोरि। सुनि कोढ़ नारि खोलि घूघुट मुख काढ़ि ढाढ़ी निज पौरि॥ शङ्कर धरि भूषण तनसुन्दर तब लगु श्रादि दौरि। ३१

भजन

नारी जीन देख मरा श्रावत। भई चकित सुधि बुधि न रही कछु श्रादे सुनत मरा धावत॥ कितय राय पूछति नारिन सों कोउन मरा बिलमावत। निदरि भागा श्रपनी लोचन भरि करमहि दोष लगावत॥ शङ्कर राई चली पीछे मरा नृप सुत पता लगावत।

भजन

नृपसुत गहि बिधि देखि नगर को। श्रनुज समेत फिरे रघुनन्दन चित्त रखत मुनि डुगर को॥ यद्यपि फूल लाये माली गरा जल थल सकल तरर को। तद्यपि चले रघुबीर लेन यह बंश सुभाव सरर को॥ शङ्कर सुनि श्रायसु टोरन फल ऐसो बीर व्यडर को। ३३।

श्लोक

ददर्शरामः स्फटिकाग्रतुंग द्वारा बृहद्धे सक पाढ संस्कृतान्
तां राजधानीं भवने रूप श्रुतां तामार कोढा परिखा भिरामदाम २३ कृतानिवे श्मानिच पारदुरगिा तथा सुपुष्पा
रगिा पुढकारगाय: परायाश्च पद्मानि सके सरगिा तन्नानि
चारु गिा तथा परगिा। २४।

चौपाई

चले रामटोरन फल फूला। जानि मुनिहि प्रभु प्रीति अनुकूला
पूछत जासु नाथ फुलवारी। कौन दिशा सिय लेत सिधारी
अस सुनि सगरा लारो मगमाली। दोउ कर जोरि बिनय अति चाली
अगोचरित सुत लीन्हलिवाई। पूरब दिशि चलि जाय देखाई
देखी जाय राम फुलवारी। गिरद कोट अति ऊँच बनाई
लगा चहूँ दिशि नीच पनारी। लागे द्वार चहूँ दिशि भारी

दोहा भारी परिख बिलोकि प्रभु आये निकट दुआर
मगा कच्छ जल मीन लखि निरखत देहु दिदार

चौपाई

घूमत जहँ माली रगा नाना। आये निकसि प्रभुहि जब जाना
शिर कर जोरि बिनय अति कीन्ही। धरि फल फूल नजरी प्रभु दीन्ही
अगय सुहोय नाथ तस करही। जो फल कहो अनि प्रभु धरही
होय नाथ मन प्रभुहि देखावै। कर निज पेगरि नाथ संग आवै
तब प्रभु समुझि कही हँसि बानी। हम जिय सकल बचन ज्ञान जानी
देखब सकल धूमि फुलवारी। निज कर फल देखब दोउ भाई
मुनि अगय सुहम पाय जनाये। अपने कर फूल न दृत आये

दोहा यह सुनि देखब सकल जन कह्यो देव प्रभु आय
सुनि प्रभु बचन अनुज युत भीतर अति हरषाय

चौपाई

देखी मगा अति सुन्दरताई। ढूँढत कतहुँ न धूरि देखाई
जहँ तहँ मन्दिर सुघर बनाये। कूप विशाल ताल मन भाये
कदली ताल तमाल सुहाये। अति बिशाल अजब छवि छाये
करगि कार स्वरजर मुहाई। कुटज प्रिया अति रही भुकि आई
राजत नीप केतकी सोही। सघन प्रियगु मुनि मन मोही

सप्त परीणा मुचकुंद लगाई। चंपा तगर कोबिदारा ई ॥ ॥
जहँ तहँ तरु मन्दार लगाये। शरजुन शसन फरे झुकि शाये
च्यूत कदम्ब पाटला राजे। बकुल शशोक कुरुंट साहे भ्राजे ॥
कुरव स्वरणा शत पत्र सुहावा। वेराड कुब्जक बच पन सलगाता
मल्लिकादि न्यग्रोध शपारा। शौ दुंबर वर प्लक्ष सँवारा ॥ ॥
हिंगु पूग प्रिय जंबु लगाई। नाना फूल लवे फुलवाई ॥
नाना तरु शौषधि लगावाई। वर शश्वत्थ छाँह छरि बिछाई
बहु फल ललित सुरंग लगाये। नाना भांति न पृथक गनाये
दोहा मेवा दारव छुहारा फल पिस्ता गरी बिलोकि ॥
तरु बदाम लखि सुरव मगन चितवत तरु तृण रोकि

चौपाई

लता शनेक रही लपिटाई। को शनेक कवि सकत गनाई
रटत बिहङ्ग तरुन खग सोहे। सुनि धुनि मुनि सबके मन मोहे
रटत चकोर मोर चहुँ शोरा। कोकिल शुक पिक कोयल जोरा
बापिन जल चक्रवाक सभाई। कुरर कोक बक हंस सुहाई ॥
उड़त कपोत पोत नभ साही। शुक सैना पिंजरन तरु छाही
बोलत भृङ्ग वृंद बहु पाती। देखी वर पक्षिन बहु जाती ॥
बने तड़ाग घाट चहुँ फेरा। झुकि झुकि तरु तट करत शधेरा
जल चंचल कच्छप गरमीना। उछरत मगर बीचि शति पीना
जल नौका जल माँझ सुहाई। सोहत पत्तन पताकन छाई
दीखत भूप सुत नृप फुलवाई। तोरन फूल लगे दोउ भाई ॥
दोहा तोरत फूल नरेन्द्र सुत शनुज सहित मुनि हेत
देखत चहुँ दिशि बाट खग सरवर ललित निकेत

चौपाई

तेहि क्षण जनक सुता चलि आई। सग सखी शति रूप बनाई

प्रेरि भवन्न कहि जननि पठाई॰ चलि पूजन गिरिजहं कहं आई
पद नूपुर कटि कन्न द्युति न्यारी॰ झांझ छुद्रा सुन्दर पद चारी
पद अंगुरिन राजति अरुणाई। कोमल अति सुन्दर छवि छाई
लाल गोल गुल फन्न सुघराई। तहँ सारी की कोर सुहाई॰
रोम कूप राजत अति नीके। ऊरू सघन लजात अन्नी के
कटितट भस्म नाभि गंभीरा। राजत सुन्दर लालित शरीरा
हेम जुजीर किंकिणी सोहै। देखत रूप मदन्न मन मोहै॰
उदर गभीर गोल सुक मारी। लघु उरोज अंकुर चक वारी॰
राजत मोतिन्न उर माल सजीली। नगन्न जटित बही रसहीली
गोपलालित पचलरी सुहाई। कंठी कंठ सूत्र छवि छाई
कम्बु कण्ठ त्रिबली परि सोहा। चन्द्र हार मणि जटित मनोहा
हेम हुमेल हृदय छवि न्यारी। हीरन्न द्युति सत लरी निहारी
कंठ श्री मणि रतन्न रंगीली। जनु भूषण बाटिका छबीली
पूरण लाल बसन्न तन धारे। गोरे भुज अङ्गद्दन्न सवारे॰
बाजूटा गुबका मणि बांधे। जो सन्न हेम मुक्ति नग कांधे
दोहा मिथिलदेश प्रगटित जटित भूषण कहे नगाय
तीसबजन्नक कुमारि धनि शोभा रची बनाय

चौपाई

मणि न्नजटित पछेल शुभकारी। बंगली ललित पनी अंगन्न न्यारी
कर कंकन्ना पहुंची निगरोही। गोरे कर सुन्दर अति सोही॰
कर पोरिया मुंदरी जड़ुवाई। शुभ कर फूल कन्न छवि छाई
बदन्न कान्ति शशि बिम्बुल जावै। नथ बेसरि दुनी छवि लावै
कुण्डल श्रवणा पात युत बारी। करणा फूल मणि छवि सुतन्यारी
हेम खोंपि भूमरि पक पान्ना। शिर कटिया बांदिया शिर जान्नू॰
गूंधि बार घुघ्घर बंधाये अंतर फुलेल्ल रङ्ग छाये॰

नयन बिशाल भाल शरदादी। बङ्क भृकुटि कटीलि सुधरादी
शस करि रूप जनक सुकमारी। शाई फूलसेन फुलवारी ॥
भूषण धुनि सुनि मोर चकोरा। उठे बोलि खग भर करि शोरा ॥
सुनि भूषण धुनि मधुर सुहाई। इत उत चितय रहे रघुराई ॥
जनु नृप मदन दुदुभी बाजी। बिश्व बिजय सेना जनु साजी

भजन

पूछत फिरत जनक फुलवाई। जो जहँ मिलत नारि नर सुन्दर कवन दिशा मिथिलेश धराई ॥ हम मुनीश पूजन कारण कहँ लेन प्रसून जात दोउ भाई। मग मालीकर जोरि भयो मग फलु फूलीत हैं जाय देखवाई ॥ कदलीताल तमाल शाल जहँ करणि कार खरजूर सुहाई कुरा डल प्रियाल केतकी राजति नीप तहाँ सुचु कुंद लगाई ॥ लगी प्रियंगु सप्त परणी जहँ शमन बिदार कोबिदारादी चम्पाना गतगर उदुम्बर मेवा बृक्ष रहे भुंकशाई ॥ जम्भीरी शमरु दनारिश्र कोकपित्थ कहँ कोटि गनाई। लता शनेक भाति भाँतिन की फूली फरी रही लपटाई ॥ रटत बिहंगतरा बापिनि में कोकिल हंस मधुर छबि छाई। देखि बिशालबाटिका सुन्दर दशरथ लाल रहे हरषाई ॥ शङ्कर लेन प्रसून तेही क्षण सिय पूजन गिरिजा कहँ शाई। ३४।

श्लोक

पुरी मालेति वचोपेत्य राजेन्द्र तनयो मुनिम्। ववन्दाते ततस्तेन पुष्पार्थं ययतुस्तदा २५। मालाकारस्तदा पुत्रो रघवेन्द्रस्य बाटिकाम् दर्शयामास वृक्षेन्द्र खेटपुष्प समावृताम् २६। चम्पातालतमाल शाल कुरवैर्मा दारप्रक्षदुमैः खर्जूरैः पनसैः प्रियंगुकुटजैर्न्यग्रोधनीपैः

रवौ: साङ्गे जलचारिभिर्जलरुहैस्तां वारिभिः शोभितां
राजेन्द्रेण कृतां ददर्श तुरसा रामानुजो वाटिकाम् ।२७।
ततः सीता ययौ तत्र जनन्या प्रेरिता ध्रुवम् पूजार्थं कामदेवस्य
कायाः सा ददृशे यैत्य वाटिकाम् ।२८। सर्वांग सुन्दरी
श्यामा सर्वाभरण भूषिता विचिन्वंती च कुसुमान्स-
खीभिर्ददृशेवरम्।२९॥

दोहा उतते अनुज समेत प्रभु शावत कृपानिधान ॰
इतते सिय संग सखिन्ह युत जगति सभय तजि मान

चौपाई

सुनि नूपुर धुनि श्रवण विहारी। बोल्ने बचन मुनिन भय हारी
यह धुनि होत कहा मन हारी। कोउ सुर लोक प्रगट जनु नारी
भये सजुग मृदु नयन उघारे। इत उत देखि नयन रतनारे
तब लगु शोद लतन्हते आई। जनु बिजुली घन तन प्रगटाई
सिथिल भये तान लोचन रघुवरके शिथिल भये धनु शर करके
रहे विलोकि रूप रघुराई। रही मनोज व्यथा उर छाई ॰
परत धरत पग दृग जहि शङ्का शावत फिरिन करन शंग सङ्का
लगा लगा तन तन रूप विलोका बिगत भयो बिछुरन पुर शोका
सिय चितई दीउ नयन उघारी बिटप शोद देखे धनु धारी ॰

दोहा देखि रूप शीतल भये लोचन बढ़ी उछाह ॰
रामहरष उपज्यो बदन नयनन बह्यो प्रवाह

चौपाई

पद कर बदन सरोज निहारे। जनु बिधि हाथ रचे शंगारे
बाँकी भृकुटि शरुण दृग देखे कोउ सुर कुमार हृदय शस लेखे
जब पुर युवति कथनि मन शाई होय न राम नयन दोउ भाई
खेलि शभय दृग देखि सयानी शापन जन्म सफल करि मानी

पूछि न सकति दरति मन माहीं। जानि कृपानिधि मन चित चाहीं
जब देखु नयन सो नयन मिलाये॰ ब्रह्मानंद मनहु सुख पाये
प्रभु जिय हिय सिय गहे समाई। सिय हिय पिय लखि रहे सुभाई
एकहि रूप भये जब दोऊ। सुधि बुधि कछु नहीं सग को ऊ
दोहा॰ दीख रूप दोउ थकित अति जनहु लिखे तरु रंग
एकटक रहे निहारि मग रचे नारि नर संग॥

चौपाई

जब लखि मग प्रभु सोच निहारे। एक दृग दीख नयन रतनारे
चितय लषन कछु हेत जनावा॰ तब रघुबीर स्वस्थ मन पावा
बोले कहत युगुति मित बानी। सुनहु लषण तुम अति ज्ञानी
जनक कुमारि बारि यह सोई। ग्वे भूपजा सुहित होई॰॰
धनुष यज्ञ मिथिलेश बनाई। सो यह जनक सुता दुति भाई
बोले लषण नाथ यह समझानी। देखि राम मन कस अनुमानी
तब बोले रघुबंश कुमारा। सुनहु लषन यह बचन हमारा
देखत जनक सुता मन मोहा। देखत तुम्हहि भयो मन छोहा
हम अपने मन समुझि बिचारा॰ कारण कवन मोह मन डारा
रघुबंशिन्ह मन कुपथ न जाई। यह गति सकल पुरानन गाई
मैं अपने जिय अस अनुमानी। मन गति समुझि लषन जिय जानी
को जाने शिव चाप कठोरा। शङ्कर कृपा चढ़े कर मोरा
होय ब्याह सिय सँग सुनु भाई। बिधि गति काहे न दृष्टि कहि पाई
दोहा॰ सुनत बचन रघुबीर के लषण सकुच मन मानि॰
सबन बन्त तनहिं कहत कछु मानि हृदय प्रभु कानि

भजन

भेंट भई देखत फुलवारी। एकटक रहे निलोकि कृपानिधि गुरु आयसु की खबरि जनाई॥ करि कुचेत सुख जनक

सुता तहँ नयन्न जात की पास चलाई। भये अनङ्ग रङ्ग दृ-
ग्नो बस रङ्ग भूमि जनु रूपलिखाई॥ शङ्कर बढ्यो आनन्द
सिया उर नयन ह्यो आनन्द जल छाई॥३५॥

भजन

देहु देउ नयनों से नयन्ना लगाय। कमल नयन्न बिशाल
शांति सुन्दर देखत गई लुभाय॥ भूषण रतन्न मधुर धु-
नि सुनि प्रभु लोचन्न रहे मिलाय। देखि रूप सिय तन्न श
कुमारि को जनु रति मूर्ति बनाय॥ शङ्कर देउ बस भये
दुहुन्न के सुधि बुधि सब बिसराय॥३६॥

भजन

सिय सुख शशि प्रभु नयन चकोर। एकटक देखि रहे दश-
रथ सुत लगात न नयन न कोर॥ निज मन्न गुन्न बिचारि
कृपानिधि भयो कहा मन्न मोर। रघुबंशिन्न मन्न जात कु-
पथ न्नहिं करे कोइ यतन करोर॥ को जाने एजनक सुता
को होय व्याहन्ना मोर। जानि अनंग राग बस लक्ष्मण क-
हि न सकत प्रभु ओर॥ शङ्कर कह्यो नाथ चलिये अब फिरि
ऐसो प्रभु भोर॥३७॥

श्लोक

तां देव मायामिव चारु लोचना शुचिस्मितां कुण्डल म-
ण्डितानना म्। रमान्वितम्वापितहेम मेखला कुशस्त नी
नूपुर रत्न शोभिताम्॥३०॥ सुमध्यमां बिम्ब फलाधरद्यु-
तिं वराज कन्यांजिन कुन्द कुड्मलाम् दृष्ट्वा रघूणां प्रवरस्त
दानीं सुमोह रामः क्षणदाचरान्त कः॥३१॥ अन्योन्य मोहि
तं दृष्ट्वा लक्ष्मण श्च सखी जनः रामं प्रोवाच सीताच गच्छ
स्वरं वरम्॥३२॥

चौपाई

तब मुसक्याय लषन कर जोरे। एवमस्तु कहि रस सुख बोरे
नाथ गहरु बीती इत आये। फूलन हेत मुनीश पठाये॥
जानि विलम्ब मुनीश रिसाई। तातें बेगि चलो तहँ भाई॥
आवब फेरि भोर फुलवाई। गहि भावय यह लषन जनाई॥
इतहु सखिन्ह सिय मति गति देखी। मृदु मूरति पुनि बसि उर लेखी॥
धरि धीरज मन साधि ढिठाई। बोली संग सखी सुख पाई॥
गहरु भई देखत फुलवाई। ईकर फूल जात कुँभिलाई॥
पूजन गौरि सखी चलहु मन लाई। गहरु भये घर जननि रिसाई॥
दुहुँ किशोर सुन्दर दोउ भाई। आये एहि सगरी सुनि पाई॥
फिरि एहि फूलन हम जानी। तब देखब प्रिय पूजि भवानी॥
औरु सुनहु यह जनक किशोरी। तुम्ह कहँ सिसु लखी कर जोरी॥
धनुय यज्ञ हर जनक नृप राचा। तहँ आये भूपति सुनि साचा॥
देखन धनुय बाल संग लाये। सुनी मुनीश खबरि हम पाये॥
तहँ देखब घर बैठि झरोखे। मृदु मूरति शुचि ललित अनोखे॥
अबढ़ी कस जनक कुमारी। देखत कहे कहा नर नारी॥
हम जिय सकल मनोरथ जाना। सुनहु सो यतन मधुर प्रिय काना॥
चलहु उमा बर मन्दिर भामिनि। पूजहु मन क्रम तेहि गज गामिनि॥
दोहा। अस्तुति बिनय तुम्हारि सुनि हरषु उमा उर कूल।
तब मागब रघुबर कुँवर बर मोहि मिलहि अनुकूल॥
अस कहि युगुति सखिन्ह सम आवा। रसा मिलन पुनि मन तब भावा॥
खैंचि नयन साखा पुनि कीन्ही। पुनि पुनि चितय चलनु दुत दीन्ही॥
चलत जाति मग चलति न आगे। जनु मतङ्ग पद शाद्दल लागे॥
दुत उत पत धरत पद जाई। सखिन्ह सहित मन्दिर चलि आई॥
नयन बसी मूरति रघुराई। जहँ चितवति तहँ तस देखाई॥

धरि धीरज मन्दिर पद धारा · जात सरिवन कर दीन सहारा
देखि उमहिँ पद सिय शिर नावा · कर बर बारि प्रेम अन्हवावा
चन्दन अक्षत शीस चढ़ाये । पुजति दूत उत मन्त्र उचाये
दोहा फूल माल कर धरि अचल धूप दीप देखाय ।
भोजन धरत गिरी शक्ति यदीन बदन्त सुसक्याय ।

चौपाई

बिन्त गल माल धूप सिय दीन्ही · दीप देखाय बिन्त यश कीन्ही
हे गज बदन्त जन्त्रि सुख दायनि · शम्भु सुवदन्त्रि सुवन्त श्रुति गायनि
स्वाहा स्वधा रूप धरि त्राना । पालन करहु पुराण बखाना ॥
मातु प्रभाव कहँ नहिँ पावा । उपजत विश्व सकल श्रुति गावा
शिव बिरंचि हरि जात भुलाई । आन जीव गनती किमि आई
जासु कृपा पालन संधारा · रचत शम्भु हरि बिधि करि न्यारा
मंगल करण नाम मुनि गावा · पूजत कौन जगत सुख पावा
दोहा देव असुर मुनि दनुज पति भूप यक्ष नर नारि
कौन भजत जग मातु तोहि गावत यह श्रुति चारि ।

चौपाई

भंड असुर जब सुरन सतावा · जाय जन्त्रि तुम सबहि बचावा
दश कर जो अगुरन की पोरा · भये दश कुअवतार सजोरा ॥
मच्छ कच्छ वाराह नृसिंहा । वामन परशुराम बल बूहा ॥
दुन्हहिँ आदि करि सब अवतारा · माया सहित असुर तुम मारा
कौवेरी तुम शची भवानी · असुर शक्ति तुम ही मुनि ज्ञानी
तुम बिन्त नहिँ कछु सुनहु भवानी · मोहि बरदहु कृपा जिय जानी
रक्त बीज बल तुम हि सहारा · चंड मुंड जन्त्रि तुम मारा
महिषासुर अति प्रबल बखाना · मारा मातु सुन्त सब जाना
शुम्भनि शुम्भ महा बल वाना · मारि सुन्त सुख दीन महाना

करहु दया मोपैजियजानी · हरहु व्यथा जिय मातु भवानी ·
श्यामल गौरहिं मातु कछु चाह्यो · सुनि हरषी गिरिजा उर माह्यो
बिनय सुनत समुझत मुसकानी · पूजन करत सकल गति जानी
दोहा · गिरिहृदय पूजत सकल सुनि तुसिय हिय जस चाह्
होत मनोरथ सिद्ध द्रुत सुरतरु भवन सराह ॥

चौपाई

तुम मन गिरिवर हैते रघुराई · सीवन सहित मन्दिर चलि आई
पूजत जो गौरी श्याम मन मूरति । श्याम सुखद रघुबर मृदु सूरति
सो पूजत गृह भयो तुव काजा · जाव हृदय धरि सिय रघुराजा
मिलिहैं राम तोहिं पति सीता · सबन्ह होब सुत मन कछु भीता
सुनि शैल बचन नयन जल छाये · बार बार पद शीश नवाये
चली भवन उर मूरति राखी । दरश हेत पुनि पुनि अभिलाखी
लक्ष्मण राम देखि फुल फूल्यो · शाये करन मुनि हैं शत कूल्यो
पद बंदे देखु भाइ न शाई । बैठि शत्रुजयुत शशि छवि पाई ॥
जब सिय सहित सखी घर शाई · मातु मुदित मन हृदय लगाई
कहति न प्रीति पुरानि सयानी · हृदय बसाय रही धनु पानी

भजन

शब घर चलु कुजन कुमारि । चलहु पूजन शम्भु का को फूल गहि कर बारि ॥ गये रिस शति राजिका हैं गाहर
जानि हसारि । राज कुमर बिलोकि नयन न रही कोहि निहारि । फेरि ओस वे ऐड्यो ही नृप फुलवारि ॥ ई कुँवर
सुघर तुम्हरे सोहिनो सी डारि । लहै शबहम जानि सुन्दर गिरी चकृत निहारि ॥ बिना तुम पहिचान इन सो कहा
देति दिखारि । डरति शङ्कर जागि करयु ग बिनय करति तुम्हारि ॥३८॥

भजन

एकली सखी सन्देश सैं आई। दरश कराय सती गिरिजाकौ सिय सो कहि मूरति श्यन्द बधाई ॥ दै चन्दन बन माल सुदित मन धूपदीप नैवैद्य लगाई। दोउ कर जोरि करी अस्तुति सिय हे गिरिराज सुता जग माई ॥ लम्बोदर षटबदन जननि जग तारिणा बेद पुराण गाई। शङ्कर होय प्रसन्न दीजे बर सा तु मिलहि पति मोहि रघुराई ॥ ३९ ॥

भजन

पूजत भई प्रसन्न भवानी। देखि व प्रीति सिय भाव बि लोकत जगत मातु मुसक्यानी ॥ जाहु भवन सिय मिल हि राम बर गरब मन यह बानी। टोरहि धनुष राम श ङ्कर को सुनि शङ्कर हरषानी ॥ ४०

भजन

फिरी मन पूजि मनोरथ गौरि। मिलिहैं राम सोहि जा नी सिय भई भावती सारि ॥ शङ्कर ठीक दई नारद मुनि गये यही कहो भारि ॥

श्लोक

हे मान्यवेन्द्र सुर पूजित पादपद्म स्वच्छन्द भाव शरणा गत पूजनार्थम् संप्रेषितोसि मुनिना स्मर रामचन्द्र त्वं गच्छ गच्छ फल पुष्प युत: सखीभि: ।३३। लक्ष्मण स्य वच: श्रुत्वा युक्तं भावसमन्वितम् लक्ष्मणेन सह भ्रात्राय यो यत्र मुनीश्वर: ।३४। तां मान्यसे जन क जां प्रणिधाय रामो वीरानुजो मुनिवर शिर साव न न्दे योगेश्वरस्तमव लोक्य विचार्य्य सर्व पूर्णाशिर वं प्रणिदधौ रघुनन्दनाय ॥ ३५ ॥ जानकी चरित्र का

मेत्य सान्त्वं वरवारिणा पुष्पधूपादिनैवेद्यैस्तत स्तु-
ष्टाव नैमिजा ३६ विश्वेश्वरि त्वमसि विश्वजन्तस्य क
र्त्री त्वं पालयसीतथा प्रलयेपिहन्त्री त्वन्नामकीर्तन
समुक्तसद्भ क्तीर्ति र्देवाः सुरो भवति पुण्यजन्तेः प्रबन्धः
३७ मातस्त्वदङ्घ्रिकमलं विमलं हृदिस्थं यस्यास्तितस्य
भुवनं सकलं करस्थं योनामतेजपति मङ्गलदं चरित्यम्
ह्यद्य कं न परिसुचरितस्यगेहम् ३८ स्तुतिमाकर्ण्य
सादेवी सीतां प्रोवाच मङ्गलाम् माकुरुष्वात्र सन्देहम्
मोहि भविता प्रति: ३९ श्रुत्वाजनकजा रामं मेने सुर गु
रुं प्रतिम् जगाम भवनं मातुर्ववन्दे चरणा द्वयम् ४०

दोहा भोर भयेमिथिलेश तबआयसुदीन बुलाय ।
सभा सँवारहु बेगि सुसद्दतन्त्र वधि जनाय ।

चौपाई

सुनि नृपहुकुम सकलजन धाये आसन्न सकल सुपन्न के लाये
डगि तरणा मसन्नन्द लगाई । सिंहासन्न हेमन्न डर वाई ।
रशमरंगीत गलीचन्न डारे । ऊपर स्वेत बसन्न छबिन्यारे ।
शतरदान्न भरि भरि तहँ भारी । भरे गुलाब घटन रुपवारी ।
लाची लवंगा जाय फरनाना । भरि भरि धरे चौघड़न स्वाना
आसा करन्न सहस्र देरवाने । बस्त्र सुगन्ध पुरुष कीरवाने ।
गहिशस्त्र धागीरी नर कोई । परवा चँवर गहे जोइ सोई ।
मूँठिहु पुहुप आसि कर सोही । देखि सभा नरनागरि मोही
भाला साँगा गदे कोइ ठाढ़े । काधे ढाल बीर बर बाढ़े ।
गहे चाप शर कोइ नर बीरा । शिर मन्दील जरकसे चीरा ।
कमर कटार परतला काँधे । कोइ कोइ बीर शतघ्नी साधे
ठाढ़े बीर आश्वशसवारी । खूनत महि गहि नरवन्न बिदारी

दोहा गजगाहैं रेशमछाजीन्ह पेश पटडोरे ॥ ॥
कोतलशश्व समीपके सजिआये तहँभारे
सजे साजरेशम मुखडोरी। हेमकुमैल परीगलजोरी
मुखसोहतरतनन्ह पटबाँधी। कलगीशजबशीशछबिकाँधी
पूँजीशधपीछे पुछवारी। काटेसिकवारहत्नकशधियारी
गाढिपरीपेंजनीसुहाये। चढ़िचढ़िजन्नकबीरतहँआये
गजकसिसन्नमहाउतलाये। दूलतशकुशहुवदबधाये
हीराशिरसोहतगजभारी। परीजंजीरजड़ीरतनारी।
लगीगजन्नकीपाँतिसुहावै। बरतकजड़ीजरीकसिलावै
शस्त्रबाँधिचढ़िभटतहँआये। शेरदहेकाकटकसुहाये
टेढ़ीकसीशीशमन्दीरै। बैठेबीरभालहितिहीरै ॥
दोहा चढ़ीझाड़फन्नूसजहँचहुँदिशकोटिनिशाश।
चहुँशोरन्हतसवीरछबिशतरन्हकरीप्रकाश॥

चौपाई

जानिसभासिधिलेशबुलाये। शुतरसवारहुकुमसुनिआये
माथनायनृपशीशनिहारे। कवन्नहुकुममहराजहमारे
तबसिधिलेशकहीशसबानी। धनुषसभामटधरहिसोआनी
फिरेपुरुभूपन्नदेहुबुलावा। जैहैकाररणाभूपतिकुलशावा
सुनतहुकुमसबशुतरसवारे। धनुषराखिवपुरहुकुमपुकारे
यहसुनिजबनारिन्नपुरपाई। सजिसजिबैठिझरोखवन्नआई
सिवहुझरोखवलागीछाँवे। पाईबरणातभागीउमहि।शिरन्हाई
जबभूपन्नकहेंगयोबुलावा। साजिसाजिभूपसकलगराशवा
तारकशीपदचारणापधारे। शिरमन्दीरहीरगलडारे ।
सुशरुन्नसुधारघुरन्नासोहे। भूषणाबसन्नदेखिवसुरमोहे।
काँधपस्तलाजरितजड़ाऊ। मूँठिरुपहलूखड्गसुहाऊ ।

श्रवन गजन पालकिन्ह आये। करतन्ह की बपुकार सुहाये
भुके साथ सुजरत्न नृपकीन्हा। कोउ कोउ कीन्ह जुहार प्रवीन्हा
दोहा भुके साथ चक्रेश्वर दिशिपुरन्दर नृपनन्दि हाथि।
चमक भई बिजुली मनहु करन धनुष तरवारि

चौपाई

जब सब भूपसभा मिलि आये। जनक मान करि सबै बैठाये
देखि समाज सुखद मिथिलेशा। सुधि भई कहन इहां अवधेशा
रघुबंशिन सुत मुनि सेवा आये। मुनि हित निज सुत जनक पठाये
जाय साथ मुनि वर पद नाये। कौतुक धनुष नृपन कर गाये
साथ चले दुइ शिशु साथ लिवाई। चाहत मुनि दरशन नृपराई
मुनि मुनि भूप कुमार मृदु बानी। रामलखन तन सकल बखानी
उठे भूपसुत आयसु पाई। आगे मुनि पीछे दोउ भाई।
देखि दरि मुनि सभा उछाहू। सघन जनु पूरी नहिं राहू।
जनक रतन करि पहुंचे जाई। श्री मिथिलेश खबरि दई पाई
धाय आय चलि लीन्ह दुआर। करि पूजन मुनि सभहि सिधारे
दोहा देखत सकल मुनीश कहँ उठे सकल अवनीश
मिले जोरि कर शीश पद आशिष दीन्ह मुनीश

चौपाई

आशिष पाय निजासन आये। रामलखन करि सबहि जनाये
जब भूपन कारन यह जाना। यथा योग्य सब कीन्ह मिलाना
मुनि बैठे समीप शिशु दोऊ। चितवत रूप निरखि सब कोऊ
नाना भांति कथा बहु तेरी। कही मुनीश रहे नृप हेरी।
कछुक रुख पाय राजजन आये। सब भूपन कहँ माथ नवाये
दोहा शोधत महि मिथिलेश नृपप्रगटि भई यह बात
जानि शयो निज प्रात भे नारद मुनि तेहि काल

चौपाई

कही कथा नारद समुझाई। सुता जनक यह रमा कहाई
याके काज बिसुतनु धारी। होइहैं भूप रूप धनु धारी
दीजो ताहि ब्याहि जिय जानी। अस कहि सुर पुर गये मुनि ज्ञानी
तब मिथिलेश हृदय अनुमाना। मिलन काज यह धनु प्रणठाना
यह धनु कठिन शम्भु कर जानी। सकै चढ़ाय कवन अस प्रानी
त्रिभुवन नाथ बिना कोउ नाहीं। जो धनु शम्भु गहैं गहि बाहीं
जनक राज प्रण सुनत नरेशा। जो धनु गुण कर करहि धरेशा
देहुँ बिवाहि सुता सुख सारी। यह बिनती क्षिति पाल हमारी

भजन

भोर भये मिथिलेश बिचारी। आये भूप देश देशन्तर कीरक
रि सब बिधि ब्याह तयारी॥ देउ देखाय धनुष भूपन को क
हि अस कहि नृप सभा सवारी। गयो बोलाय सकल राज
न को जानि मुनिहुँ शिर शुलीन्ह हँकारी॥ शङ्कर आय
बैठि आसन पर सकल भूप सुन्दर व्रत धारी। ४२।

भजन

जनक मंत्री ठाढ़ो कर जोरे। सुनहुँ भूप दे कान बचन यह
अज एक हतु मोरि॥ प्रण मिथिलेश कियो ब्याहौं सिय
जो धनु सजै बहोरि। शङ्कर अस बलवान भूप जो सियहि
देउँ भ्रम छोरि॥ ४३॥

श्लोक

गंधा धार पद प्रकार पुरुवैर्हे मा सनैः सारसैः शस्त्रास्त्रप्रव
रैर्नरैः पवनदै व्यालोल बालध्वजैः शादर्शा वय वैर्वि-
चित्र रचनै र्नाना विधै र्वाहनै र्वाला भिर्जनकस्य सास
दपते र्वीभाति दृष्टा सभा। ४१। राजा ते प्रगृहीतगात्राः

सतुरगा दूता नृपान् समेत्यान्नित्युर्वस्त्र सरत्नहेमकट-
कैः शस्त्रास्त्रविद्यायुतान् तापग्लानिहरा सभां जनक
जः संभाष्य निन्ये मुनिराजेन्द्र प्रवरधनुर्धरासंत
थासानुजम्।४२। मैथिलेशो मुनिं दृष्ट्वा प्रणिपत्य
नृपैः सहसानुजं राघवं तत्र निनाय बलिभिर्वरम्
४३। सभातुवै देहपतेः समृद्धा मणिप्रवेकोत्तमर-
त्नचित्रा न्यस्तासना माल्यवती सुगंधा तामभ्यु
युस्तेनरराजपुत्राः।४४। यथासना न्याविशतां पुरस्तो
दुभौक्षितीशेश्वरजौ मुनीशौ बृहद्यशमात्योजनक
स्यतत्रप्रणम्यविधायपत्युःसलीलम्।४५। तथोपवि
ष्ठेषुनरेन्द्रजेषुविराजमानाभरणांबरेषुराजसारा
जवतीसमृद्धाग्रहैरिवद्यौर्विमलैरुपेता।४६। ततः
कथास्तेसमवायमुक्ताः कृत्वाविचित्राःपुरुषप्रवीराः
तस्थुर्मुहूर्तंपरिचिन्तयंतः बृहद्यशमात्यौसमुदीक्षमा-
णाः।४७। कथांतमासाद्यचमैथिलेनसंघट्टितश्चा
पयशःसुतायै तेराजसिंहाबचनंहशुश्रुवन्नमात्य
योःस्वयंवरंमहोदयम्।४८। श्रीमात्यावूचतुःप्रीत
ज्ञाराजसिंहस्यशृणवन्तुसकलानृपाःशैवधन्यंयोध-
नुःकुर्य्यात्प्रदद्यात्सुभगांसुतांस्म।४९

दोहा मुनिमत्रेणाकेवचननृपठेहरविकसनाय
करीयतनमनतत्रनिरखिहारेकरतउपाय

चौपाई

जबनउठ्योहरचापमहीते। कोउनृपउठेनशासनहीते
कोदबहुभूपउठेएकबारा।उठानचापसकलबलहारा
शासनबैठेमहीपलजादी।यशकीरतिजनुसकलमिटादी

देखि बज्रनक अस बचन सुनाये। नृप सुत कुजे हि हेत बुलाये
ब्याहहुँ सिय जिय यह प्रण कीन्हा। सो बिधि बिफल मोर कीन्हा
मंत्रिन्ह सकल कहा समुझाई। को कहि बार हजार गनाई
रहहु सकल कुल पूज्य हमारे। करब सकल हित ज्ञान तुम्हारे
बिधि देहन ब्याह सिया कर राचा। कारण प्रण समुझत मन ताचा
अब महि देखि समुझि जिय आई। नाह क प्रण कहि सबहि जनाई
रहा ब्याह सिय कर मैं जाना। सो सब यह मम मति अज्ञाना

दोहा गहि कर गुण चढ़ बो कठिन तिल भरि भूमि न छूटि
जाब करहु अनुचित हृदय ब्याह त्रास अब दूटि

चौपाई

अब जानी महि बीर न कोई। करहु न अबल नृप जोड़ु सोई
जो जनतेउँ महि बीर बिहीना। करतेउँ ब्याह सिय हि अधीना
ज्ञान शरीर सयश यह लागा। ही कुमारि सुता कुल दागा
अब न करब कोइ भूप बड़ाई। जहँ कोइ बीर जुरै समुदाई
जनक कहे अस बचन सकोधा। कस मसान मुनि भूमि सबोधा
काहु न बचन उतर नृप दीन्हा। समुझि सबन भूपन गर्व लीन्हा
मुनि अस कटुक लाय रा नृप बानी। सकुचित जनु घृत अनल समानी
बोले बचन भरे रिस केरे। अरुण नयन भू पति रुख हेरे

सुनहु जनक तुम भूमि प्रधाना। अतम ज्ञान रहा जग ज्ञाना
ती तुम कस अस धरि जड़ताई। देखे नृपन अस बानि सुनाई
जे जड़ जीव प्रगट संसारा। ते गये मन कर न बिचारा
जहँ ककुस्थ कुल कर नृप होई। तहँ अस बचन कहत न हि कोई
दोहा रघु समाज रघुबंश मणि बैठे कुँअर सब बेश।
अपे बचन अनुचित कहे मुनि प्रभु हत कलेश।

चौपाई

मैं सेवक रघुबर कर जाना। शपथ मोहि कहत हर भूपबर बाना।
प्रभु की प्रभुता जानत नहिं दासा। शपथ करहुं बल सकल प्रकाशा।
जो शायसु रघुबर कर पावौं। महि समेत यह चाप चढ़ावौं।
रवि मण्डल शशि सहित खगोला। खेलहुं जिमि कंदुक शिशु तोला।
सोखहुं सागर शर सम सोखी। पीहुं कहुं खगोल महि गोलहि मिलावौं। मेरु रेणु करि दिशन उड़ावौं।
शत्रुन कर बध शम बचन रुखाई। राखब नृप शपथी प्रभुताई।
मुनि सुनि बचन मृदुल कोहवानी। करि शीतल रघुपति रुख जानी।
चितय राम मुनि मुख करि साना। उदे कृपा निधि शायसु जाना।
दोहा बाँध्यो कटि पट कसि कर तूनु जुगुल भुज धनुहीं।
देखि नारि नर सुधा छवि बोले बचन निबाही।

चौपाई

सिय जिन रची नेही वर राचा। उचित ब्याह यह विधि गति साचा।
देखब जनक मत रुप सलोना। शर सुमिरत दुख कठिन कठोना।
कोउ कहै नारि नृपहि सम झावो। जाय सभा धनु बेगि उठावो।
अति कठोर शङ्कर धनु भारी। मृदु मूरति किशोर धनुधारी।
बड़े बड़े भूप रूप गहि हारे। रावण बान न जाहि सवारे।
सो किशोर धनु कहि बिधि लेहीं। तजि पराय सिय हित कस नृपदेहीं।
राम कहि सब शङ्कर हि मनावैं। कोउ कोउ नारि ज्ञान समुझावैं।
रघुबालक मृदु शरस मति कहऊ। तेज बिलोकि धीर धरि रहऊ।
पावक रबि बेदरब तनु धोरा। जासु तेज मतृणा कठिन सघोरा।
मुनि सागर पर सुत जल पीन्हा। महि मण्डल खण्डे पति शिर लीन्हा।
देखति सिय कर खचित लाडू। जिमि देखति धनु मति सकुचाई।
हृदय गरिव गिरिजा शब खेऊ। हरहु जनक मन दारुन दोऊ।

धनुष मृदुल करि बल प्रभु दीजै। कीरति हरण भूप मति दीजै
दोहा यहि विधि संकित नारि नर देखि बदन सिय कोर।
भरे नयन जल देखि प्रभु चितये धनु चहु फेर।

चौपाई

देखत सकल भूप नर नारी। जाय धनुष कर गहो खरारी
लेत चमक विजुली सम भयऊ। खुभत चाप बिन श्रम चढ़ि गयऊ
जब लगु बोलि नयन पुनि दीन्हे। धनुष द्वै खंड कृपा निधि कीन्हे
टूटत घोर भयो अति भारी। दीख भये नर नारि सुखारी
सानन्द सिय गुरु लखि बन समाई। मृदुल हंस सानि पद सीस नाई
भयो घोर सब बाजि भुअन माहीं। राम ब्याह सुनि बढ़ो उछाही

भजन

सुनि अस बचन उठे कोउ भूप। करी यतन तहँ जाय धनुष के कर गहिबे को रूप॥ उठ्यो न तन कहारि बैठे भूप कोई लखि साधी चुप। कोउ एक बार उठे हिलि मिलि नृप जिनहिं न नेक सकूप॥ शङ्कर भयो निराश जनक लखि बोले बचन अनूप॥४४॥

भजन

कोउ न भतल बीर रहोरी। चितये चहूँ दिशि घोर
पुनि तन जनक भूप अस बचन कहोरी॥ बिन हनुमान ज्ञान अपनो हठ करि नाहक प्रण हृदय गहोरी
रही कुमारि बारि सुन्दर घर कहत जनक दृग नीर बहोरी। शङ्कर सुनि लखि मण अंतर उर बचन जनक के गान सहोरी॥४५॥

भजन

पुरण क्रोध अरिषयाँ भरि आई। बुद्धि सो मित्र कह्यो

मन की दृढ़ करी कहायह नृप चतुराई ॥ श्रुत भारघुकु
ल भूषण जह तहं तुम काहु कहीव रुगाई। आयसु होय सो
हिं मुनि कह भूमि सहित धनु लेउं चढ़ाई ॥ करहु
रामकर खंड खंड न के कहु खगोल महिदेउ गिराई। जा
नतेजगावा र सबः पवन कह बन्धि जगविख बड़ाई ॥ श
ङ्कर सुनि मुसुकाय राम मुख चितय बचन कहि दीन्ह
उठाई ॥४६॥

भजन

उठे राम मुनि आयसु पाई। काक पक्ष राजत सुन्दर शि
र नयन कोर सोहै अरुणाई ॥ कस्यो पीत पट कटि परि
कर दृढ़ सीता गौरी गणेश मनाई। कोउ कहै कमठ कठो
र शम्भु धनु मृदु मूरति किशोर रघुराई ॥ शङ्कर श्री मि
थिलेश कुवांरि तह देखति लगि भोरख चित लाई ॥४७॥

दोहरा

राम सिय देखो भोरखे लगी। क्षण क्षण धनु प्रभु हेर
बिलोकति जनु भय भीति मृगी ॥ देखि मृदुल लोचन
बिशाल छवि रघुपति मोतिकुठगी। शङ्कर श्री रघुबीर देखि
छवि पूरुव प्रीति जगी ॥४८॥

भजन

कोउ कहै नाथ नृपहि समुझावो। सिय ब्याहै किशोर सु
न्दर वर धनुय सभा तें बेगि उठावो ॥ जो प्रण कियो किया
सुन्दर तुम सब प्रणयह मिथिलेश छुटावो। सिय लायक
सुन्दर दशरथ सुत कहि कहि ससकोइ सुतादेवावो ॥
शङ्का कोइ कहै भ्रम न करो यह होइ ब्याह शङ्कर ति मना
वो ॥ ४९ ॥

भजन

देखु काजोरि धनुष कर लीन्हा। खैंचि चढ़ायलियो घुन्नु न्दन टेरि खंड दुई कीन्हा॥ टूटत सोर भयो त्रिभुवन में मिटे खंड भू चीन्हा। मगर सगर रवल भले सिंधु सब जो शास्त्र मुनि पीन्हा॥ शङ्कर टेरि धनुष मिथिलापुर नर नारिन सुख दीन्हा। ५०।

चौपाई

कपी भूमि धनु टूटत भारी। घर घरानि हिमवान किन्नारी उठी डेराय उमा सुक मारी। जाय मिली सूरगल भुज डारी॥ मिलत हृदय शङ्कर सुख पायो। जब गिरिजा मिलि कंठ लगायो ब्रह्मानन्द मनहु सुख पावा। धनुष भंग दुख हृदय न आवा

श्लोक

दृभ कुंभ तुल्य कुच कुंभ युगायाः परिरंभ संभ्रम सुखेन भान्यायाः गिरि शोपि चाप दलने बहु मेनेन हि वस्तु हानि मनु शोचति कामी॥ ५०॥ श्रुत्वा भूपतयः क्षितौ श वचनं सामीप्य मारादगुः सामान्यं धनुषः करैर्न नमितु शक्ता धनुवीतदा कश्चिद्वुमितलेश्वितीश्वर कुलेनोप्य स्तिवीरः क्वचित् ज्ञातं ज्ञाने वेरणा भूमिपतेनानिर्वीर मुर्वीतलम्। ५०। सौमित्रिश्चनि शम्यगर्व वचनं एज्ञा तद्दीरितशोवाच श्रवलं प्रताप विदितो रामेस्थिते सानुजे किंचोक्तं बहुनाचजी णि धनुषा मेवादे भू मराडले सादित्यं रथ चारनं देव गणाये राजेन्द्र चान्यः कियान्। ५१। लक्ष्मणस्य वचः श्रुत्वा मुनीन्द्रो हर्ष संयुतः राम प्रोवाच सुखदं ह्यो धत्यं कुरुत द्रुतः। ५२। मुहुःश्रवन रामो युवतिजन सेनाकलकल

जटाजूट चके नृपति पति जाना परि वृद्ध ग्रही त्वा
माधिज्यं तदनुधनुर्गुण स्यतरसाद्विधा देवाः सर्वे
क्षितिपतिजनाहर्ष मग्नमन्।५३।

दोहा तबमिथिलापति सचिवतन कह्यो करुवसाज
डारि माल शुभ करगहि मह व्याहहि सिय रघुराज

चौपाई

सुनि नारितसिय साज सजाई धरिपटतन सचिवन युतलाई
बिन भूषण सुन्दर छबि छाई भूषण सहित सोकिमि कहिजाई
लालललितपद जहँ महिदीन्हे भूषन नयन सकलतहँ कीन्हे
रह्यो न ध्यान ज्ञान मन माही जहँ जहँ चरनतिरछि गड़ताही
नयन सरोज विलोकति जाही सुधिबुधि कछुनहीं लखिवताही
छूटे मुखजहँतहँ घुघुँघारे। सघन श्याम नहिं जातसँभारे
भूषन सदन नारि समलेखी जनक कुमारि नयन जबदेखी
करलीन्हे शुभ माल शमोली सखीविलोकि सभुहितबोली
देखहु सिय जिय दसुखदाई जिन शङ्कर चाप चढ़ाई।

दोहा महाराज शवधेश मणि दशरथ कुल प्रधान।
निरखिवाम गलमेलहु माललालितयुत मान

चौपाई

सुनिशशबचन जनकशलेखी माललालितरघुवरगलमेली
जयजय भईशसुर पुरमाही पुष्पवृष्टिमहिभइनभ माही
जनकदेखिवशानंदशति पनाकरि सतकार नृपनससुभावा
नगरभयोशानंदशति भारी गावत सकल भवनमहिनारी
नेगिनबसनरतनतहँ पाये जनकनगरशानंदशति छाये
बाजतनगरनिशानसुहाये बहुसुखकहनदूतसबधाये
बालवृद्धजिनजिनसुनि पाये करगहिसकलबेगिचलिशाये

दोहा एहि बिधि सब पुरनारि नर सजि सजि करति तयारि
तब भुकोर बादर तड़प तीक्षण चली बयारि

चौपाई

उठी धूरि कँव धन्न चट कारी। कारी अति भइ दिशन अँध्यारी
गये मूँदि लोचन सब केरे। देखि न परत निकट जन हेरे
भये बिकल पुर सब नर नारी। स्वस्ति मुनिन नर नारि पुकारी
थर थर सहि मराड़ल थहरान्ना। मरमन नारि नरन्न यह जान्ना
कोपत तन्न कहि बात न आई। रहे सकल गज बदन सन्नाई
शान्न भई जब सकल बयारी। नर नारिन्ह तब शोरि उघारी
दृत उत सयुग भये सन्नारी। उठि उठि जहँ तहँ रहे निहारी
तेजवान नर एक देखा। कांध कुठार धनुष कर बान्ना
मूजी भस्म मेखला धारी। मिरगचरम तूणी कटि भारी
जटा शीश सुन्दर अति राजै। पीपर दंड सुघर तनु भ्राजै
बाहिक मंडल कर जब देखा। परशुराम शाये मन लेखा
काँपि उठे सब भूप बिलोकी। बृक बिलोकि दुबल जिमि बोकी
सब धौं कहा रण बिधि रचा। सब बन्नाय सब दीन्ह तमाचा
दोहा बिकल भये नर नारि सब काहू लहो न धीर
जहँ तहँ छिपन नरेश लखि खर भरान्न सब भीर

चौपाई

तब मिथिलेश भेट गहि शागे। जाय गरिव शिर पद गहि लागे
लहे न भेद भृगु धनु जानी। बोले क्रोध बचन शशि सानी
परशु सुधारत शागे शायो। पुनि पुनि जनक बिनय अति लायो
बोले कौशिक नयन न हेरी। करि भृकुटी अति भाल केरी
कहु केहि हेतु जनक नृप शाये। समाचार सब जनक सुनाये
पुनि सुनीश यह बचन सुनावा। शरण नयन कोरन जल छावा

कारण सुना सकल नृप तोरा- कवन बता बभ्रूप धनु तोरा ।
देहुं कुठार शीश तकि घोरा। जेहि शर रिपु केरु शानन मोरा
ठाढ़े सि शम्भु धनुष करि जोरा- ताहि बताव मूढ़ जिमि चोरा
बेगि बताव मूढ़ तजि लाजू। नाहित मारत सहित समाजू
दोहा मोरगुरु करे धनुष जड़ धरि गृह कीन्ह बिनास ।
जानि मोर बल जग बिदित तदपि कीन्हि मन हास
परे बचन सस श्रवण जब शरुरा भई दृग कोर ।
कुटिल भई भृकुटी शधर फरकि उठो अति घोर
सुनि शस बचन सरोष युत क्षत्रिय नयन मुनि शोर
कहत सुमित्रा सुत बचन क्षमिये मोर निहोर

चौपाई

दोय नक कछु मुनि इन नृप केरो- नहिं मिथिलेश लेश जिय हेरो
कारण कवन मुनीश रिसाने- चहत नाथ हम जिय जाने
दूत बहुत धनुष सँग्रामा। क्षिति पालन भूपन यह कामा
शस समता एहि पर किमि ठानी- सो प्रसङ्ग कछु जात न जानी
धीरधरहु मुनि देव बुराई। नाहक नाथ करत द्विज ताई
देउ दास प्रभु खरच न होई। होत कृपिण द्विज सस सुकृत सोई
दोहा मुनि शस बचन सकोप मुनि बोले बचन कठोर
यह को को शिशु मूढ़ जड़ सुयश न जानत मोर

चौपाई

शम्भु धनुष समता जग कीन्ही- कृपिण कहत मोहि गति द्विज दीन्ही
कर तट सन धनु कहत जुरावो- धीर गुनी कहु बेगि बुलावो
कवन देश चलि यह शिशु आवा- बिदित मोर बल मुनि कुल पावा
बालु सँभारि मूढ़ शब बानी- शबतक क्षमी तोगि शिशु जानी
सुनि बोलि सुमन मुसक्याई- नाथ जानि रिस गति नहि पाई

हम मुनि शिशु दशरथ नृपको रघुबंशी रणा लोह करेरे ।।
धनुष पुरान छुअत प्रभु दीन्हा दीन्हि ताहि महिका यश लीन्हा
द्विज सुधे हम सुने पुराना। तुम हिं देखि अचरज जिय माना
श्रवन करहु रिस सुमुझि गुसाईं काहु जाय तप गारि कहुँ जाई
श्वास वृंद करणा नहिं इहां ओरा जाय मुखि लगी बायु झकोरा
सुनहु मुनीश सभा नृपकेरी वचन कहब नहिं कठिन कठोरी
जब कहु भूप जुरे समुदाई। शशिय देव द्विज नृद्विज ताई
परशु धनुष प्रभु तुम्हहिं न सोहै गुनहु नाथ द्विज सम जग कोहै
दोहा- जल तब वारि बारि धि पियत मुनिहिं न लागी वार।
गिरे भूमि जय विजय प्रभु कब द्विज लीन कुठार।
सुनत वचन जनु अनल मुख आहुति घृत सरसानि
मान लपेटे सट पदे बोले मुनि जिय जानि ।।-।।
चौपाई
मोहिं कहत शिशु कृपण सहन्ना महि सब जीति करी द्विज दान्ना
सहस बाहु महि अति बलवाना काटे भुज जिन भुजन बल जाना
हौं न बीर सकल महि जीती बचो भूप पद गहि करि प्रीती
ताहि निपट द्विज मोहिं बताया जीरण शिव धनु मोहिं सुनाया
जब सब महि जीती सब रामा बचो न भूप श्रम शठ बामा
तब रघुबंश बीर कह गयऊ देखत परशु कोन भट नयऊ
कुंड रुधिर भरि तरपण कीन्हा निज पितरन कहुं सुरपुर दीन्हा
जीति कुटिल नृप कीरति पाई बल दशरथ तन पूछ्यो जाई
दूध न छूट मातु तन केरो जान हु काह सुयश तुम मेरो
बाढ़े दुष्ट हनहुं बाहु पितु केरी सब विधि करत कहत अस मेरी
तू शिशु जड़ मोहिं जानत नाहीं ताते वचन सहत नहिं ताही
रवि प्रकाश महि मराड़ल जानी मूढ़ उलूक न विदित लुकानी

तापरबिकरोयनशावा। अस खलजानि मनाहिससुझावा
दोहा बचन सुनत समुझत लयन बोले बिहँसि बहोरि
नाथन सायस दीगनि करायव्यो कहते कोरि
चौपाई
सुनहु बिप्रयह बचन हमारा जोधनु तजि तन स्वर्गसिधारा
शिवकाटो बिधि शीश लजाना दीन्ह तुम्हहिं करि शिष्य बहाना
आपु बिदित बल चहुँदिशि ठाढ़ा जानि प्रताप मातु शिर काढ़ा
तापर धनुष गहे पर कीन्हा। कौन सो मान गुरु न धनु कीन्हा
समुझि धनुष मन अस अपमाना रघुबर कर तीरथ भल जाना
छोड़ि शरीर स्वर्ग चलि गयऊ। छूटे शर निरमल तन भयऊ
ताते नाथ तजहु अब शोचा धनुष तजन तन सब मन रोचा
दोहा सुनत बचन मुख खल भलेउ गहि कर कठिन कुठार
बोले भृगुपति लयन तन लाले चितय दिदार
मूढ़ न जानत मोहि शिशु बेगि जनक एहि टारु।
नाहिं त कर गहि देत अब एहि शिर कठिन कुठारु
चौपाई
जीजानत बल मोर क्षितीशा कहत न बचन कठिन अवनीशा
तून दीखि जड़ कठिन लराई चट चट बातें कहसि बनाई
देहौं शीश कुठार उठाई। भूलि जाय जड़ चपल चवाई।
कोटिन साथ अवधेश आवा जनक सान रघुबरहि बतावा
चितय गाधिसुत कहि मुनि ज्ञानी सनुज तोर मूरख अधिकानी
देखत छोट खोट तन केरो। छोड़त यहि मान कहि तेरो
मुनि पुनि बचन लयन मुसकाने भृगुपति काल मुनि जिय अकुलाने
मुनि तुम मम मुख बालु बहु गावा जद्यपि कहा तहौं तहँ आवा
करु एक कृपा गो कपरदी दूजी पाइहि चिंता मोरी ॥

दोहा लोभ भोरनिशदिन कहत मणिकरहीउपाय
ढूंढत तृणावन बीचना लोभहृदय ललचाय

चौपाई

पुनिपुनिजाय शासबन लावा कर शहि कठिन गरल धरि खावा
हिजतुमकठिन न कीनिलराई वारहजार सहस भुज गाई ।
जोतुमजीति सकल महिगाई सोसब सांचि नाथ मनशाई
तबनराम महिराम गुसाँई। लेहौजानि भट भट शाई ।।
बारबारकरपरशु सिधारी । नाहक नाथ क्रोध उर मारी ।
हमहिजजानि शीशपद नावे दीखबीर भयतन कन लावे
जोहिज होत शस्त्र कर धारी डरत नप्रभु हमसुनि करतारी
तपसयमहिज काज मुनीशा शस्त्र सस्त्र बांधत शवनीशा
जो कोउ होय नराशधिकारी ताहि देखावो कठिन कुठारी
हमरघुबंश कुँवरजगजाने। तेहिकुल भयेइन्द्र भय माने
इन्द्र सहाय दीन जिन जाई। नामककुस्थ बिदित गतिपाई
दोहा भयोधुधु शतशसुभट ताहि जीति संग्राम ।
लोकबिदित जिनयश लह्यो धुंधुमार नृपनाम

चौपाई

तुम्हहिं देखिजो भूपडेराने। तुम शपने मनशति भट माने
सो मुनीश कारण हमजाना जातेन्नपन्न युद्ध नहिंठाना
जोहिज धनुदेइ शति मारू। घालत नृपन कठिन श्रमभारू
रघुवंशी हिज धनुन सूरा। तातेप्रियशति प्रगट सहूरा ।
जोतुमकरी बीरबिन भूमी सोसब क्षत्र प्रतापबरखूमी ।
भागदेत पलट्यो मुनिनारी पूछबजाय भवन महतारी
मृगीन कतनु सिंह सुतजावा यहइतिहास पुरानन गावा
जो मुनीश शबशयसुपावौं। यहसम धनुयह जाय सगावौं

दोहा सुनत बचन अति कुटिल मुनि गहि कर कठिन कुठार
आयो करत सरोष अति हा हा भई पुकार ॥

चौपाई

कोसल बीर धीर जग माहीं। देखत जो न कुठार डेराहीं ॥
अबत गरभ सुनि नारिन केरे। भूपन रहत क्रोध दृग हेरे
बारबार द्विज मोहिं बतावै। रावण बारा जाहि शिर नावै
राम तोर भ्राता अघ खानी। अहै मृत्यु निकट एहि जानी
अनखवन्त देइ मातु पढ़वावा। सो बल खल एहि मोहिं जनावा
शिशु हि जानि छोड़त हम राजू। जिमि शिशु बिनि जानै गहि राजू
बि नजाने कुछु दोष नथाही। होन पतंग दीप यह चाही ॥
राम मोर बल शिशु हि सुनावा। काल पास तेहि बचावा
दोहा सुनत बचन रघुबश मणि बोले राजिव नयन
बरत अनल जनु वारि घट भूपन उर अति चैन

चौपाई

नाथ तुम हि शिशु जानत नाहीं। कीरति प्रगट तेहु पुर माहीं
सुनि तुम्हार यश उमा भवानी तुम मम सुत चाह्यो जिय जानी
नारिवीर सुमातु तुम्हारी। कीरति उमा कही धनि नारी
करी निक्षत्र भूमि प्रभु जानी। अश्व मेध कीए यज्ञ महानी
दीनि दान महि अति प्रभुताई। कोन नाथ यश सुनि हरषाई
कोसल बीर नाथ जग माहीं। चलि मुनीश जीत्यो जेहि नाहीं
अस प्रभु बेदित तिन्हहिं बिसरावा नाथ एही शिशु ता प्रगटावा
जो बालक अहि शगिनि कुगती। गहत न बीर कहत नर नारी
नाथ न दोष जनक कर अहई। तदपि नाथ भय कछु नहि कहई
दोष न नाथ कहू नृप केरा। हो सदोष प्रभु चरण न चेरा
क्षमहु नाथ यह मम शिशुताई। चरण गहु को शीश गति पाई

नाथ बिप्र सम को जग आना । इत जाहि बिधि हर भगवाना ।
दोहा भृगु हरि हिय माखो चरण मंद्रमा भई पार ।
यह शिशु जानत नहिं प्रभु सम महिमा नाथ तुम्हार ।
चौपाई
बिप्र तेज बड़ बानल भारी । जाय जरत जहँ लगि जल बारी ।
द्विज बर तेज प्रगट तिहुँ लोका । जाय न सस्त्र सिंधु जल शोका ।
कौशिक सुनहु मंद मति दीन्ही । बिधि हरि जाय बिनय तब कीन्ही ।
द्विज प्रभाव जानत भगवाना । त्रिभुवन वेद पुराण बखाना ।
को करि सकत बिप्र सम ताई । चरण चिन्ह कहुँ शिर तर जाई ।
सब बिधि बिधि जाहि दीन्ह बड़ाई । को समजो नहि इत प्रभुताई ।
क्षत्री हम एक गुण कछु पावा । सो सब बिप्र प्रताप बढ़ावा ।
सब प्रकार हम प्रभु मन हारे । द्विज ताप मुनीश धनु धारे ।
द्विज प्रताप ते हरि प्रभुताई । रमा सिन्धु सती हर पाई ।
बिप्र तेज लहि गरुड़ बिहारी । द्विज हि प्रताप भूमि शिर धारी ।
दोहा द्विज निन्दक जय विजय महि नाथ कबंध शयान ।
नारि अहिल्या पवन सुत पायो दुख बहु मान ।
मैं अपराधी नाथ कर सब बिधि सो गुन कीन्ह ।
तदपि नाथ क्षमिये सुमुखि बालक बचन प्रवीन ।
चौपाई
जो शिशु कहत अडर कछु बानी । यदपि अयोग मातु हर यानी ।
बचन मातु पितु धरहि कठोरा । उपजहि नरक अयश महि घोरा ।
सेवक करत सदा सेवकाई । भ्रम जिय उपजि भूलि यदि जाई ।
तौ न करत स्वामी उर क्रोधा । सब बिधि नाथ करत परबोधा ।
हम सेवक किंकर द्विज केरे । ह्वै कि फिरि कैसे प्रभु हेरे ।
दोहा शिशु जननी के गर्भ बस करत चरण सो घात ।

मातुनसमुझतिशठहृदयदूतमोहननात

चौपाई

जोप्रभुसघनकीनिलीकाई। शस्त्रगहेअभुजानिनपाई
जोनहोतधनुहाथकुठारा। गहतचरणाप्रभुआयतुम्हारा
तदपिदोषयहसबविधिमेरा। समरथकानकरतसनहेरा
अनलदिनेअनाथसुरसाखी। पूज्यसदासेवतजुगचहमीता
शङ्करभस्मचिताशिरधारी। चलिनसदाफिरेतविहारी
तदपिविमुविधिसेवतजाई। बालकयहनजानिगतिपाई
जोनाथप्रभुकीरिसजाई। करहुजोउचितहोहिप्रभुगाई
जड़अहअजड़जीवदुइभाती। तासेप्रियप्रभुअजड़सुहाती
तिनमेंपशुपशुतेनजानी। चारिबराततहेद्विजमुनिज्ञानी
ऐसेद्विजसमसोहिपियारा। नहिसुरविधिहरअगहमारा
जेहिमुखदेतक्षुधामसजाई तसनक्षुधादयअगनिसगाई
असरसबचनकहतभगवाना। सुनेकहतद्विजबचनपुराना
अजहमानिनाथमुनिकाना। करहुक्षमाप्रभुजानिअयाना
जोनजायरिसप्रभुएहिभाती। शीतलहोयनप्रभुयहछाती
यहप्रभुकंवकुठारतुम्हारा। सेवकसुखसबप्रभुनिस्तारा
दोहा कोप्रभुकीसमवीरमहि करहिसमुझिबलबाद
डूबतजहगजराजतहकापिपीलसंवाद ॥

चौपाई

असकहिभायचरणाधरिदीन्हा मुनिप्रसन्नदेउकरगहिलीन्हा
कह्योधन्यरघुकुलतुमभूषण। कह्योबचनसमुझतनहिदूषण
शीतलबाणिशमियरिसबोरा। चोधअनलमचलहउनमोरा
बारबारमुनिकंठलगावा। धनिदशरथजिनअसमुतजाया
होयरामहिकीर्तितुम्हारी। रहोसुखीजुतजननकुमारी

एकहिपित सुतलखिदुइभाती दरसिन भ्रमलक्षणहिदेखाती
लौकिकबातसत्यसबसांची सुरकुरबुधधनीपिशाची ।
चारलवारऊदारबखाने एकऊदरउपजतजगजाने ॥
कहेतुमकहेयहअनुजतुम्हारा गुरुतुम्हेसबहोतऊबारा
असकहिआशियदीन्हमुनीशा बहुप्रकारकहिवचनधनीशा
यहधनुमोरगहुकरभारी दरहिमोरभ्रमएमअपारी ॥
करधनुनाथबेगिहसिलयऊ चुवतैचापआपुचढ़ागयऊ
जानिमुनीशभयोअवतारा प्रगटनकीन हृदयलखिसारा
कीअस्तुतिबहुविधिमुनिज्ञानी समुझतकथाबुद्धिहरवानी
माथनायमुनिबिपिनिसिधारे नानारीसबसंयेमुरवारे
दोहा एहिविधिगवनेविपिनिमुनिउपज्योनगअनंद
सकलविलोकतनारिनरलोचनकरतआनंद

दादरा

देखिसियलाई सुभगजयमाल । दृतऊतलाजभरी
अमिवयनसौंदेखेदशरथलाल ॥ शङ्करडारिदईदश
रथसुतगलमुनिभयेनिहाल ॥५१।

भजनदादरा

धनुभजबदूटो भयोधनशोर । तिहुपुरभयोअनन्द
शोरसुनिडरेनिशाचरचोर ॥ सुनिशङ्कर भृगुपति
आयेअतिगहे परशुकरघोर । ५२ ।

भजन

तबलगुकहिनबढ़ीबयारि । ऊठी धूरिनदेखियत क
छुदिशानभातिमिरारि ॥ अरु अबलेअवाजुअरथर
कँपिऊठेनृपभारि । कहूकह्योनजीकवासे धनुष
टूटविचारि । शान्त वायु देखानर एक धनुषकाधे

डारि मेखला मृगचर्म मुंजी भस्म अंग सब धारी । परशु कोप दुर्वासा कैसे तृणिचारि ॥ जटा शीश विशाल सुन्दर दंड पिंग लधारि । कर कमंडल अक्षमाला जल भरे तीरथ बारि ॥ देखि भूप कुमार चीन्हे परशुरामहि हारि । भजत शङ्कर शङ्करहि सब होय नाथ न नारि ॥५३॥

भजन

जनक जब देखो परशु कर घोर । ऋषभ देख चृपति आतुर तेहि काल रहे कर जोर ॥ शङ्कर जिय धरधीर नृपन को देख अरुण दृग कोर ।५४

भजन

जनक कर ढाढ़े भटलखे । लेख मुनीश रुसौ सौ गुन समझ कहि शीश नये ॥ क्रोध भरे मुनि सुन तव वचन तहँ तुम्हरो कुल चिन्ये । रहो न धीर वीर काहू कर कुलि ढिग बेगि गये ॥ शङ्कर को धनु विचारि दोष नृप शूल हूको न भये ॥५५॥

भजन

बारबार मुनि परशु सँभारा । कैसे चढ़ा पिनाक शम्भु को कैसे कहु नृप खंडन करि डारा ॥ वेगि बताव लाव मम नयन मोर शत्रु वह भूप कहाए । सुनत सुयश मम भूतल खल मारहु शत्रु सहित परिवार ॥ यह मेरो गुरु कह सुन धनु को हि कारण यह दीरघ व्यवहार । शङ्कर को धनु भूमि पर दीखत जड़ यह मोर कुठार ॥ ५६ ॥

भजन

मृदु मुसकाय लखन उठि बोले । नृप सकुचे प्रति उत्तर शो

लीवज्जन्क नगर नर नागरि डोले ॥ तजहु क्रोध मुनि धीर धरहु तन चही द्विजन को मुनि अति भोले । नृपदा का रण्य मुनि नायक कहिये बचन सभारि रसोले ॥ शङ्कर देहु मगाय चाप दश सुबरण रतन जटित अनमोले ॥५७॥

भजन

सब कोइ यहि नयन नटारु। अनुजन तेरो राम खेटो ताहि वेगि सँभारु नाहिं कारण हि देत सबहम रैंचि शीश कुठारु ॥ बचन कुटिल कठोर बोलत रूप को अति चारु योन मोर प्रताप जानत विदित बल संसारु ॥ सबै बाढ़े छाँह केशिशु कहा जानत मारु । मारि शङ्ख बीर भूतल को उतारो भारु ॥५८॥

भजन

दूटो धनुष तन्हे दोष गुसाँई । भयो कलङ्क छुअत रघुबर को नाहक रारि बढ़ाई ॥ नाइ हृ तृण शिर मुनि भय रण छुअत अगिनि जरि जाई । हमरण काठिन कुठार दशरथ के राम लखण दोउ भाई ॥ तुम भृगुपति कुल पूज्य समुझि मन चरणन शीश नवाई । शङ्कर होय समर का तर नर सो प्रभु तुम्हहिं डेराई ॥५९॥

भजन

सुनि मुनि कटुक लखण की बानी । है साँचो कुमार जानत नहिं यह कुठार अभिमानी ॥ सहस बाहु बल वान जीति महि कीन्हो नृप बल वानी । करीनि क्षत्र भूमि सारी हम कीरति भुवन बखानी ॥ शङ्कर तजड़ एक बा लमहि मोर नव बल शठ जानी ॥६०॥

भजन

फिरिल क्ष न नुसकाय कहीरी । जो तुम करीनि क्षत्र

भूमि प्रभु सब साँची मैं मानी सहीरी ॥ तब भूतल रघुब-
श हँस प्रभु कवशिल्क सुत रामन हीरी । सब भट मेट
जानि लेहो बल को कहि बचन होद्द गुन हीरी ॥ शङ्कर
सुनत तड़पि लक्ष्मि मन पर तीक्षण धार कुठार गहीरी ६॥

भजन

यह शिशु देखत ही को छोटो । तीक्षण बचन कहत बोरे
विष है बालक पै खोटो ॥ कोऊ समुझाय टरु नयन ते
यह दशरथ को ढोटो । यह मेरो भुज बल जान्यो नहि
खाय भवन भयो मोटो ॥ शङ्कर को अस भट त्रिभुवन से
जोहि शिर दीन्हन सोटो ॥ ६७॥

भजन

कहत फिरि लषण बचन सुभ पाय । जो बल कियो ना-
थ समको मन सो हमरो बल आय ॥ ब्रह्म तेज ब्रत जप स-
यम में सो हम शापु डरेय । गयो पलटि पितु भाग दे
तप्रभु या पूछो प्रभु जाय ॥ शङ्कर तुम द्विज जान्यो नाहीं
रण को कौतुक उपाय ॥ ६८॥

भजन

कहँ तक कहूँ शिशु तोहि समुझाई । जा को परशु सुन-
त डोलत महि ते द्विज नि पट बनाई ॥ तोहि कुमार
जानि छोड़ तहूँ बल दशरथ सो पूछ्यो जाई । भयो
तोष बलवान भानु कुल तुम समय मूर कोटि पढ़ाई ।
छूटन शर बैदुध जननी को चट पट बाते कहत बनाई
देहौं परशु रचि शिर ऊपर भूलि जाय सब चतुर च-
वाई । शङ्कर जानि क्रोध रघुनन्दन बोले बचन म-
धुर शिशुनाई ॥ ६९॥

भजन

नाथ सकल यह दोष हमारो । ना कछु दोष जनक भूपन को यह प्रभु धनुष हमार व्यारो ॥ हम हुत्या थ शिशु जानि कृपानिधि विदित बली मुनि तुम्हहि बिसारो । जो जननी पि तुधरहि बालक्ष्य कैसे नाथ होय निरधारो ॥ शङ्कर शिशु जानत प्रभु नाही निभुजन बिदित प्रताप तुम्हारो ॥ ७० ॥

भजन

लक्ष्मन फिरि भूपन ओर पाई । वचन कहे मुनि जो रिस करि प्रभु कारन नाथ सुनो मन लाई । जषतेधनु काटेसि जननी शिर बदन शरा विधि शिर पछताई ॥ ताप त्यागि दियो मुनिवर तुमतजि फिरि सुरति कृपालु भुलाई । परधा पो धरो शङ्कर धनु अपने मन गलानि मीलाई ॥ रघुनन्दन तीरथ कर सुमुकत तजि शरीर सुन्दर गति पाई । शङ्कर चिंतय रामलक्ष्मन तन डपटि दियो चपि रहे चुपाई ॥ ७१ ॥

दादरा

हमरे द्विज तजि दूजा देवन दूजा । बाप कुठार गहे याही ते यह शिशु सन्मुख कूजा ॥ जो औतेउ मुनिवर की नाई कहत नाथ ऊठि पूजा । तदपि देव द्विज पूज्य हमारे रघुबंशिन रीजा ॥ शङ्कर या शिशु जानत नाही भुज प्रताप नाहीजा । ७२ ।

भजन

शासन दीजै क्षमा प्रभु कीजै मैं अपराध किये मुनिवा को जानत भुजबल बीजै ॥ यहै परशु कुठार कराल यहि चित

होय दया दीजै। कठिन कुठार धार प्रभु की मुनि कोन्ह अंजलि भीजै॥ शङ्कर गो द्विज हितमय नहि सो इह वंशि कहीजै ७३॥

भजन

नाथ हो रसबै विधि हो। हम क्षत्री गुण एक सुनो प्रभु तुम द्विज नव गुण न्यारे॥ समता होति कहा शिर पटकी परिये पाँव तुम्हारे। परशु सहित प्रभु नाम तिहारो केवल नाम हमारो॥ सरवरि कवन करै प्रभु तुम सो द्विज तापै धनु धारे। सहस्र बाहु बलवान तासु भुज काटि तुम प्रभु डारे॥ शङ्कर करी निक्षत्र भूमि सब करि अपचिति पितृ तारे॥ ७४॥

भजन

राम वचन सुनि सुनि मुसक्यार्द्। दियो धनुष निज रवि चि राम कर बिनहि प्रयास कृपाल चढ़ार्द्॥ जानि भयो अवतार बिनय करि चले बनहि मुनि शीश नवार्द्। भयो अनन्द सकल मिथिला पुर जनक अवध पुर खबरि पठार्द्॥ शङ्कर मुनि दशरथ कवशिल्या पुर जन सुनि आनँद न समार्द्॥ ७५॥

श्लोक

धनुरवं श्रुत्वा भृगुपतिरगादामलवनाद्धनुर्धारीस्कंधे परशुमृगचर्म्मामलपटम् वहत्याराद्गांडसजलजलपात्रं नृपतयो मुनिंदृष्ट्वारवं सपदि परिचक्रुर्विशरणाः ५४ दण्डवत्प्रणिपत्यादौ आनर्चजनको मुनिम् पृच्छोनज गृह्णे राजन्भंगंकेन कृतं धनुः॥ ५५॥ आद्वीपात्स्थितिपाः सुराश्चनृपतेयेचात्रह्यागताः जानंति प्रबलं सहस्र भुजदंयज्ञाधिपं भूमिदम् को मदः समुपागत स्तवपुरे

मावेतिवोनोपयं शीघ्रं वहि नृपं कुवरसमं तदद्यांशिरस्याम
राम। ५६। कोधं माकुरुमा कुरुप्रभु पदं नोतूलराशिं मुनेश्रु
रा भूपतयोऽग्निमंच कुशलाः संशप्यदाहूगतः जीर्णं
शम्भुधनुर्विधाय सगुणं लब्ध्वयशः किंधुवं रामेणा प्रव-
लेनचेच्चहृदयावरात्य मुने। ५७। यदिशरो भवा
न्नस्याद्वेदाग्यवती ध्रुवम् रेणुका वचनं श्रुत्वाचके
कोधतरं मुनिः ५८ पुनर्यदि वचो ब्रूयाद्भन्यां त्वामवि-
चारयन् शासमुद्कराग्राहिणामलं वेत्सि नोक्षितौ।५९
श्रुत्वादशरथिर्मुनिं रघुवरः प्रोवाच वाचोऽशुभ वा-
ल्लानोगणायतिसूपतयः पापंतपो भूयणाम् यंदेवी
गिरिजा शशंसतरसो चेति स्वयं वीरसूपायात्कः शरणं
नतं ममसदाज्ञात्याहि पूज्योद्विजः। ६०। श्रवेन्न कोप-
स्य मुनीन्द्र सांतेयदा कुदारं कुरु कण्ठ भूयणाम् न-
भानुजा भूपतयः कदाचिच्छूरव भूवुर्द्विजगोश्रुनित्य-
म्। ६१। सज्जन्तेश्रु भवेत्साधुः साधुत्वंतस्यकोगुणः
असज्जन्तेश्रुयः साधुः ससाधुरुच्यते। ६२। रघव-
स्य वचः श्रुत्वा मुनोद मुनिनन्दनः वैस्रवं प्रददौ-
चापमधिज्यं रघुनन्दनः चक्रे समवलोक्याथतुष्टाव
मुनिपुंगवः अद्यमेसफलं जन्म प्रतीतोसि ममप्रभो
।६३। ब्रह्मादिभिरलभ्यस्त्व प्रकृतेः पारगोमतः त्व-
यिजन्मादिषड्भावान सत्य ज्ञान समाः। ६४। इति
संस्तुत्यराजेन्द्रं जगाम मुनिपुंगवः प्रहर्षमतुलंत-
न्नलेभेरसकलाजनाः

इति श्री भाषा भूषणो रामव्याहोत्सवे शुक्ल महादेव
विरचिते प्रथम प्रकाशः॥



श्रीरामोल्लासायनम्

श्लोक

भाण्डे मेविद्धातुवैहरसुतो रम्बोदरोमिंददोवेनेयं परि
नोदितद्हिकथने शक्नोर्यशोवारिधेः गौरी भूधरल्लिता
शुकरशंकुर्वेमतिः आणदो मंडा भोजमुखः करीन्द्र वनो
विद्याविधिः कुरुडदः । १। रामो रमो मेरमणास्य एमेक
रोति एसेति रमो रमायाम् । रामस्य कामं रमणास्य
माया कामंदिसीलां कलहप्रियस्य । २। चरीकर्ति धाता
वी भर्ति विष्णुर्जगतीं हर्ति भूमण्डलं कालरुद्रः दरीधर्ति
सर्वं महान्तागराजो यदिच्छा विलासान्तुमस्तो मदेशीम्
। ३। पुनः प्रणम्यसानन्दं रमेशं विघ्नहारिणम् रामव्या
होत्सवार्थं स्वैकुर्वे सर्वमनोरमम् । ४। श्रीव्यतिश्रवीय
व्यंतिसुख भाजो भवंतितेप्रपढिव्यंतियोनित्यं भवे
त्सर्वजनप्रियः । ५। गोविन्दाश्रमस्वामिनारघुवर व्या
होत्सवं सुन्दरं भावाभ्यर्णा माशुदुःख शमनेसप्रेरितः
शङ्करः कुर्वेसर्वजनप्रियंरसरसं भावाङ्क चूडामणिविद्वा
यः क्षमतामसुयतिरतिदृष्ट्वादयासिन्धुना । ६। गोवि
न्दाश्रमस्वामिनंद्विजगुरुधीरं दयासागरं ब्रह्मानन्द ए
तयति व्रतपरवेदांग वेदप्रियम् नित्यधर्मरविप्रणा
म्य सकलां लीलां व्यथाहारिणीं कुर्वेएसविवाह सर्वं
विमलां सर्वांग शोभा वृताम् । ७।

२

दोहा सुनि कुम्भी सुत हरष अति फिरि मुनि सों कर जोरि
बोले कौहि विधि व्याह प्रभु भयो धनुष हर टोरि
हरषे मुनि नृप बचन सुनि लागे कहन उतसाह
जैहि विधि श्री रघुबीर कर भयो जनक पुर व्याह।
सोहि विधि गवने बिपिन तब भृगुपति कृपानिकेत
उपज्यो नगर अनन्द अति सिय रघुपति नृप हेत

चौपाई

तबमिथिलेश मनोरथ बिचारी। लीन पुरोहित निकट हँकारी
बसन भूषन द्रव्य अपार दीन्हा। दशरथ हित पाती कर दीन्हा
जाहु बिप्र दशरथ नृप पाहीं। मोर प्रणाम कहब द्विज ताहीं
तुम्हरी कृपा राम धनु तोरा। भयो तिहूँ पुर आनँद मोरा
व्याह सुता कर चहत भुवाल। कहब जोरि कर सकल हेवाल
साजि बरात कृपा करि आवहु। करि विवाह मोहि प्रभु निरबाहहु
दोहा सुनि द्विज बचन चले प्रभु कर लई पत्रिका हाथ।
चढ़ि रथ चल्यो अनन्द युत शर वीर लै साथ

चौपाई

विश्वामित्र खबरि जब पाई। बिप्रहि कह्यो संदेश बुलाई।
कहब दशरथ नृपति सों मेरी। आवहु बेगि कार बनहि देरी
रामलखन कारण अब जाना। चलत द्विजहि कीन्हो सनमाना
कहब दंडवति प्रभु सों मेरी। मातन विनय कहब कर जोरी
भाइन सहित कुशलता जाई। कहब विप्र प्रति प्रीति बढ़ाई
जो कोहि मिलय बिप्र द्विज साढ़ी। कहब दंडवति शीश नवाई
दासी दास प्रजा नृप केरी। पूछब कुशल जाय कहि मेरी
पुनि अवधेश चरण द्विज देवी। कहब विनय दृढ़ कर सम लेवी
दोहा प्रजापाल महराज नृप श्री अवधेश कृपाल।

चहत तुम्हारे प्रभु दरशा॰ राम लषन दोउ बाल

चौपाई

हृदय लगाय शिशुन ससुझाई॰ चल्यो विप्र शुभ सुनृप पाई
देखत गिरिवर नदी तलावा॰ सानँद सहित अवध पुर आवा
देखी शुभ मह॰ फुलवाई॰ भयो चकित सुख उर न समाई
श्री अवध शहर जब आवा॰ हर्षाण चलि खबरि जनावा
भयो दूकुम लाव दुहुँ बेगी॰ सुनि शुभ खबरि चले सब नेगी
शासन्नेदय नृप की मनमान्। पठ्यो कुशल शुभ कुल भान्
कहव विप्र को हेतु कराणा॰ शाये॰ कवन देश को हि भूप पठाये
सुनि दुहुँ बचन पाणि धरि शीशा॰ बोल्यो बचन प्रेम रस पागे

दोहा॰ श्री मिथिलेश नरेन्द्र प्रभु महाराज सुख आज।
राम ब्याहि सिय हित गवन्न करहु समेत समाज॥

चौपाई

सुनि शुभ बचन पत्रि का बाची॰ सुनी बात मानी नृप साँची
सबहि सुनाय जाय रनवासे॰ समाचार कहि सकल शकासे
सुनत ब्याह राणी हरषानी॰ ब्याह उछाह कहत सब बानी
गुरु बशिष्ठ कहँ सकल जनावा॰ समाचार पुर बासिन पावा
गुरु बशिष्ठ सुनि सुख चलि शाये॰ महाराज गुरु मिलि सुख पाये
पती वाचि महीप सुनाई। सुनि सुख अवध रह्यो शीत छाई
की विचार गुरु भूप लिखाई॰ लिखि लिखि पाती नृपन पठाई
जानि बरात भूप सब शाये। की शादर नरेश बिलमाये॥

दोहा॰ गज रथ शुभ तुरग रथ गज नर सुतर सवार॥
पूरि गई चहुँ दिशि अवध मिलत न पुरुष शुमार
श्री अवध शोभा लोकि पुरंधरी चहुँ तरफान॥
निज बाहन साजन हुकुम दीन्हो होत। भहान

चौपाई

सजि सजि सकटन्ह लन्हि मिठाई। आगे कूच महीपक राई ।
आगे नर बहु गहे कुदारी। चले गहे कोउ करन कुठारी ।
तिन्ह मारग समजाय बनाई। तहँ ते लतन मगा कीन्हि छुटाई
भुतर सवा राये चलि आगे। रसद जोगि मारग नित्र जागे
तेहि अवसर दशरथ दरवाजे। बाजन अमित प्रकारन बाजे
मागि बिदा द्विज धन गृह जाई। जनक राज कह बरि जनाई
भयो अनन्द सुनत तिहि थलेशा। भुअ नृपन कर मिटह कलेशा
अगवानहि पुत्रन्ह आनेशा। कोई कोइ मारग पुरुष देखाना
श्री अवधेश डुकुम यह दीन्हा। साजहु सकल बरात नवीना
गनिन भूषण सकल सवारे। अमरेशहु जनु अवध पधारे
दोहा॰ चढ़ी सकल महलन्ह तन लगी झरोखन आय
मनहु कोटि रजनीश रवि सिज मिलन हरषाय

चौपाई

सजे बीर कर खड्ग रु पहलू। अश्व गजेन्द्र मत्त मद दहलू
भाला साँग शाँग भल सोहा। लगी कटार कर द कर लोहा
शिर सन्दीप बमन तन काछे। परे पर तला कोंध न आछे
पिचा कसे कर न द स्ताना। पद पन्ह ही सियाह तन बाना
चढ़ि चढ़ि गजन तुरंगन भारी। साजत कोइ महीप असवारी
सुशकी अबलख सबज लाले। कोइ कुम्मैत तुरंग हे वाले
नकुना कोइ सुरखा कासि साजे। संमुद अश्व साजे दरवाजे
श्याम करण कासि अश्व सवारे। साजन लगे भूप दरबारे ।
हंस बरण कोइ स्याह सलोने। गंग सन्द ली बोरवार दहोने
कोइ शरिवया कसे अहिखूने। सिरगा रंग सजे दुतदूने ।
चालि चौधरा रंग सुहावा। पंच कल्यान बरण तन भावा

जरदा गरी ताजी साजे । पचँग तुरँग तुरँग सुराजे ॥
फुलवारिया कंजु कल भाये॰ चवन चीनिवास अश्व सुहाये
कोइ कुम्मैत तेलिया घोड़े। स्याह सपेद रतन साजे जोड़े ।
दोहा॰ खुले पेटारे खींच वर भूषण साजन साज ।
पहिरावन लागे सकल निज निज अश्व समाज।

चौपाई

कोतल हेत अश्व कोइ आये॰ देखत चाल सकल मन भाये
झिलमिल जीन पोश सब बाँधे॰ गंडा सचन कसे अति काँधे
पट्टा मुख धरि कलगी सोही॰ हय कलँगी लखि लखि सब मोही
पेश बन्द गँदार सुहाये। गज गाह कसि ललित बँधाये ।
दुमची ललित लसत कल सारी॰ पैजनियाँ बाजत घुटुआरी
पेजीन पोश तन सोहे। देखत तुरँग नारि नर मोहे ॥
डोरी रेशम ललित लगाम॰ बोलत कहत ललित वर नाम
अस कोतल तस नरन सवारी॰ उछलत मनहुँ मिरग बन चारी
बोलत तिरछे जात सवारू। इदुदुद गहे एक धन वारू ।
दोहा बोलत उछलत नरवन महि खनत नृपद्वार
भये सकल सक दिशि तुरग सोहत सहित सवार

चौपाई

छयल छबीले बीर असवारी॰ फेरत अश्व कसे तरवारी ।
निकसि सवार बहिर पुर आये। तब दशरथ नृप गजन सजाये
परी जीन तन झूल सुहाई। जनु गिरिवर पर सहित उड़ाई
बाँधे झूल सिरी अति सोहै। हेम जँजीर हीर नर मोहै ।।
परी दुमेल सेल सुघराई। हौदा हेम ललित कसवाई ॥
पील वान अंकुश कर साधे॰ चढ़े वीर मन्दीरन बाँधे ।
परे चौकड़े कुरा डल सोहे। हेम भूषण लखि नर मोहे

चन्दन भालरुमाल सुहाये। गोपगुंज अम्बर छवि छाये
दोहा शरदहेक करकदक शुभ अङ्गद लसत अपार
झूमत गजन्ह विराज भए आये नृप दरबार।
चौपाई
कुंकुम दीन्ह अवधेश बुलाई। गज तुरग बल कूच कराई
तुरत सजे अयरथ बानन हेम जटित अश्वन गजमानन
बाँधे हेम ध्वज घंटन बजाये। सजि सजि आसन सबन बनाये
बैठे सकल बराती आई। पैदा सैन कूच करवाई ॥
श्री शत्रुघ्न पहिर सब भूषण। निकसे चढ़ि तुरग अरिदूषण
भरत साजि गज रथ चढ़ि सोहे। देखत रूप नारि नर मोहे
दीन्ह दान द्विजन कहँ दीन्हे। सोरन बसन मान दय कीन्हे
निकसी बरात बहिर पुर आई। भूषन भूपति रवबी जनाई
दोहा सजे भूप सगरे सुघर निज निज सैन बनाय।
कोइ गज अश्वन रथ न चढ़ि चले कुंकुम नरपाय
चौपाई
जब रथ चढ़ि नरेश सब आये। दशरथ भूप हृदय सुख पाये
निज सारथी कुंकुम जब पावा। श्री अवधेश का जरथ लावा
पहिरे अभूषण सुन्दर नाना। पहिरि बसन दीन्हे द्विज दाना
सेवक गन प्रजन मनोरथ पाये। दय दय बसन अनन्द बढ़ाये
गुरु बशिष्ठ नर जान चढ़ाये। बामदेव आदिक रथ पाये
चोपदार हत उत सब धाये। चली बरात कुंकुम जब पाये
श्री अवधेश हेम रथ सोहे। लखि पुरहूत अवध पुर मोहे।
कोउ न धीर धरत नर नारी। आनँद उमड़ि चल्यो पुर वारी
मङ्गल गावत सब मग नारी। चली बरात न मिलति शुमारी
आसा बसम गहे अगारी। डंका चोपन दार पुकारी ॥

दोहा॥ आगे अश्व वोरवारिया साजि कोतल थनवार।
जेरबन्द बाँधे लसित चपल दुशालन दार॥
चढ़े बीर सुन्दर गजन झुकत न सनतन जोर।
कसी जर कसी पागशिर ठघरत नयनन कोर।
तेहि पीछे सुन्दर चतुर लागे तुरग सवार॥
कसे परतलन शसि सुघर कम्बर लगी कटार।
बाजत गाजपीठिन मधुर घंटा भूषण शोर॥
सुन्नत बाटिकन खगन रव कीन्हो एक मिलघोर
चले अश्व पीछे सुघर रथ गजरथ समुदाय।
बाजत रथ जंगा झनक कहत न बात सुनाय
कसी कटा ली चतुर नर सुतरचवक दे दार।
झब्बन झुमकन झूमरिन झलकनि झूमनवार
कोदुसर बानन साधिकर टोगी चढ़े सरसाय।
आगे कीन्हे सबन कर जहँ तहँ रव बाजनाय
जब सब चली बरात मग दरबी श्री अवधेश।
भूपन कर सनमान की सब मिलि चले नरेश
पीछे श्री अवधेश चलि आनद उर न समाय
कुड़ धुमड़ कनचोपदय मुनि पद शीश नवाय
असन बसन सनमान कारि मग सब कर अवधेश
एक बाहन पुर नहत नर एक पुर श्री मिथिलेश।

भजन

नगर नगर नृप खबरि पढ़ाई। भेजी कृपा रावि के कयनृ
प मैं सगरे नृप लीन बुलाई॥ आये जानि उछाह अव-
ध पुर गजरथ साजि बरात बनाई। साजि बरात मिलि चली
जनक पुर गुरु बशिष्ठ संग लीन लिवाई॥ षड्रंग राजतुरंग

सुन्दरारथ बाजिरही बीरणा सुरनाई ॥ १ ॥

श्लोक

गतेसीतातातेद्विजवरमले सादरतयानगर्व्यौ भूपस्य
श्रीदशरथस्याशुबिज्ञने। बने एसेज्ञानीस्वजनसुरव
दातानरमणिकरे दत्वापत्रं कुशलसुतनारिप्रदरवि
म् ॥१॥ प्रेषयामास राजेन्द्ररविवंश शिरवामणा। लेखि
पित्वेति चैहित्वे सुतसैन्य समन्वितः ।२। युग्मम् २
गत्वा ब्राह्मणासत्तमोनृपपुरीतां कोशला सुन्दरा पत्रंव
र्ण समन्वितं शुभकारणेन्द्रोपुत्रयोः चरव्यौहर्षकरं
परंचकुशलंहद्धारघूणापतीराज्ञीभ्यः कथयांबभूवगु
रवेसर्वाः सुखंलेभिरे ॥ ३॥ प्रेषयामासपत्राणिराजे-
न्द्रः स्वर्षिशासनात् भूपेभ्यश्चागताः श्रुत्वाव्या-
होत्सवमनामयं। ४। तुरंगैर्गजेन्द्रैरथैर्मानवैस्तेमि
लित्वानरेशोजलान्नप्रदानैः बचोभिश्चमानंधनै
श्चापिचक्रेददोस्थानमानन्ददंभिन्नभिन्नम् ।५।
ततोऽलंचक्रुर्गजेन्द्रान्तुरंगान्रथान्मानवान्मान
वेन्द्रस्यराज्ञः बचस्तेनिशम्योढकान्सर्वबीरान्स-
हर्षंचलेभेविलोक्याश्वयुजान् । ६। शत्रुघ्नो भरत-
श्च भूपणायुतः सेन्यनृपैः संयुतोलेभेतत्र तुरंगमत्त
गजकन्यामाशुशोभासलम् चेलुस्तेमिथिलेशराज
जनगर्वद त्वाधनंभूमियाविप्रेभ्यः प्रविलोक्यते
सुरगणाजग्मुः परंविस्मयम् ॥ ७ ॥

चौपाई

कावादेतशत्रव को कोई। कोइ मृगचलनिचलतबरजोई
कोइदुलकी कसिअतिदवराये कहूंसंगाम भूपलगावाये

चलेदुगा मत्त कोइ मगाजाही। जनुपिंजरन्ते बाजउड़ाही
दाबेगजन्त मद्दावतजाई। हूलत अंकुश शीश शूदेवाई।
मानहुँ गिरि सपक्ष महिराजे। शुतरसवार शुतालै भाजे।
चलत सकलडोलत महिकैसे। लघुतरणी गजेन्द्र चढ़ि जैसे
न भताड़ी सम भूमि पयादे। तन सुन्दर सोहत सब सादे
देखि बरात पथिक पथि जाई। नानारी पूंछति अति धाई
कहव बरात कहां यहजाही। कवन भूप यहकवन बुलाई
दोहा श्रीदशरथ अवधेश नृप महाराज को जाय।
जनकराज मिथिलेश घर सजि बरात यहजाय
भजन
मगन मग पूंछै सबैनारि। कवन नगर की यह बरात प्रभु देखि परत नृप भारि॥ कवन नगर को जाति डगर सब पूंछत सुघर निहारि। श्रीदशरथ जाति जनक पुर व्याहन जनक कुमारि॥२॥
श्लोक
कस्येयं नर भूषणास्य नृपतेर्वै वाहिकी सुन्दरी सेना
भूपवरैः सहैम वसना वाहादिभिः संयुता पुर्य्यां
कस्य च यातिकोपि पुरुष श्चरव्यो जनेभ्यो मुदं स-
र्वं तत्र निशम्य पांथ मनुजा भूपस्य ते लेभिरे॥३॥
दोहा लगा न दिवस मनजानि नृप चलत दिकन मगा पपु
जनक भूमि भस मंज करि पहुंचे अमर प्रतापु॥
चौपाई
रहि विधि चलि बरात निवरानी। जनक नगर नर देखन देखानी
ढाढ़ी कस बाहन कीन्हे। गज तुरंग रथ रकदि गदीन्हे
पहिरि बसन तन भूषण साजे। कोतल अश्व छकत राजे

खंभर परीजनक पुरमाहीं । वहु अनन्द काहुज्ञात सो नाहीं
जनक भूप अवन जब जाना। नेगिन्ह पठये देखाय बिताना ।
तिन्ह तुम्ह सब मण्डप अनन देखाये। सजे बनाय चंदोअन छाये ।
लागी झाड़ गिलास फनूसें । लसैं बिछाइ गलीचन धूसें ।
गाहे नगिरहन लगित सुहाये। बैठक साज सुघर धरवाये
दोहा- उतरे सकल नरेश तहं जनत मशाल पराल ।
बालगीत तब लगुन्ह राय माथन वायो हाल ।
बालगीत कहं कह्यो नृपद शरथ कुल जनाय
जाव राम लक्ष्मन सहित लावहु बेगि बुलाय
चौपाई
महाराज कर अवन जाई। राम लखन कहं जाय सुनाई ।
सुनि पितु वचन तुरत उठि धाये- अनुज सहित दशरथ पहं आये
हरषि भूप देखु कर गहि लीन्हा- करत प्रणाम नृपति जब चीन्हा
हृदय लगाय द्विजन धन दीन्हा- ब्रह्मानन्द मनहुं रस पीन्हा ।
पूछि कुशल अपनी कहि गाई- जेहि बिधि मुनि वरयज्ञ कराई
कह्यो ताड़का बध क्रम लाई। जस सुबाहु नभई निदेवाई ।
पुनि मारीच कथा सधानी। गौतम नारि प्रसंग बखानी ।
धनुष भंग भृगु पति आगमन- गमन प्रसन्न क्रोध कर समन
सुनि हरषे दशरथ सुत बानी। तेजवंत मति गति मन जानी
दोहा तेहि अवसर मिथिलेश कर आयो दूत बरवानि ।
करहु तयारी नाथ अब दीन्ह बेगि अगवानि ॥
चौपाई
सुनि अस बचन बरात सजाई। अश्व गज अन नर बरन बनाई
सजि जनाति उत सब नृप आये- भूपति देखि महा सुख पाये
बाजनि निशान बजी सहनाई। घर घर रह्यो अनंद अति छाई

पूजि गरीश नरेश बिचारी। बर बस्त्र रत्न चि कीन्हि तयारी।
पीत पाग ज़रकशी बँधाई। आँगी आपीत ललित पहिराई
ब्याह योग भूषण पहिराये। सब सुधार बर माथ धराये।
शुभ दिन शुभ्र जोशन बाँधे। पीत बसन सोहत बर काँधे
सुंदरी भाँति भाँति पहिराई। पद पनही ज़रदोज़ सुहाई।
दोहा गुंज गोप मणि कराऊ धरि शृंज़न खौरि लगाय।
कंकन कर गुरु बाँधि दृढ़ सांता पुच बनाय॥
हेम कटक कर शति सुधर जुलुफ जुगुल शिर काँ
चढ़े पालकी लषण युत श्रीशवधेश बिचारि॥

चौपाई

बाजा ललित शुभ्र सब बाजे। शासा बल्लम शधिक बिराजे।
सजि सजि भूप रूप शस वारी। शगावानी की कीन्हि तयारी।
गहि शबदागीरिन कोइ आये। पंखन गहि गलाफ बिलगाये
जरीदार गहि बान निशाना। दय करि कुड़म धाम चुपवाना
शश्वन गजन्न बराती साजे। सजि सजि भूप रूप नृप काजे।
जब मिथिलेश खबरि शस पाई। शगवानी हित सैन बुलाई
टीरि सकल पुर प्रजा बुलाये। जासा शिर मन्दीर बँधाये॥
जगी मशाल लाल बहु नाना। आये लेन सकल शगवाना
दूत उत बीरट तन हि टारे। लगा रकीन्ह महाउत डारे।
तब मिथिलेश कुकुम पकुचावा। कवन हेत शति देर लगावा
दोहा शात शवाजी छूटि शति बहु दिशि बढ़्यो शनन्द
भयो दिवस जनु तेज चलि उदय कोटि रवि चन्द

भजन

जनक नगर बरात नियरानी। कोतल करि तुरग सुन्दरग
जगजरथ तुरग सवारि देखानी॥ खबर भा पर्यो सुनत

मिथिलापुर नर नागरि सुनि शीतहरा बानी। शङ्कर सुनि मिथिलेश पठय जनक कारि सतकार लई शगवानी ॥३॥

श्लोक

मिथिलेश पुरी मेत्य राजा दशरथः परान् रामदृष्ट्वा मुदं लेभे नरदेव समन्वितः ।९। श्रुत्वा श्री मिथिलाधिपो नरवरैः सेवा मलं भूपते श्चक्रे प्रीति समन्वितो दशरथस्यानन्ददैः सामगैः बाहैः सर्व जनो नरेन्द्र सहितो रामेण सर्वद्धितो हारे तत्र जगाम नीति कुशलो ले भे सुदृ जानकी ॥ १०॥

चौपाई

शगवानी करि द्वारे शाये। जनक कुमारि पूजि बर पाये। सखी महल चढ़ि देखन धाई। सजि साजि लगी करोखन शाई। कोइ कहै सखि बरात यह देखो। शपन जन्म सुफल करि लेखो। देखो रथ तुरग गज शाली। सुतर सवार सुघर दृढ़ चाली। बनगा गज शजब बनि शावा। देखत रूप ललित मन भावा। सोरहि रूप राम सखि धारे। सोहत नर वाहन रतनारे ॥ धनि सीता जिन शस बर पावा। सुन्दर रूप जासु जग गावा। देखि मदन तन गयो लुभाई। नागरि किमि गनती सखि शाई। दोहा एहि बिधि बेखत महल चढ़ि नगर नारि कर वृन्द। भयो द्वार शगवानि को उतरे करुणा कन्द ॥

भजन

शाली री बरात जनक पुर शाई। गज रथ तुरग साजि सुन्दर दल बाजिरही बीणा सहनाई ॥ मुनि लक्ष्मि सन्त रघुबीर सखी री चढ़े चढ़े गज सन्त मिले चलि जाई। घर घर गलिन गलिन बागन में कोलाहल शब्द न समाई ॥

शोभाहि रूप धर्यो रघुनन्दन शङ्कर सोउपमा किमि गाई॥४॥

श्लोक

गजेन्द्र मन्द गामिनि प्रसन्न चित्त कामिनि श्रुतेर्ज्ञगाम रा-
घवः पितुः समीप मादरान् नतः प्रपश्यतामलं विशाल
भूपबालकं गजेन्द्र बालसुन्दरं सुजापबाण भूषणम्॥५॥

चौपाई

मिलेजनक दशरथ अति भाई। भेंट गरिवनिज बिनय सुनाई
नाथ भयो पावन कुल मेरो। जानब मोहि शुभ प्रभु चेरो।
दशरथ कही जनक तन बानी। शतानन्द तुम शतमज्ञानी
तब पुनि जनक पानि युग जोरी। नाथ सुनहु कछु बचन निहोरी
सुता एक मोरि जग जानी। सीता नाम रूप गुण खानी।
सोमैं चहत राम कहँ दीन्हे। शोभहु एक नृपति तन चीन्हे
सो लक्षिमन नहिं दीन्ह प्रभु चहऊँ। समरथ जानि शत्रुशत्रु कहऊँ
शत्रुघ्न एक मोरि दुइ कन्या। त्रिभुवन कहत जिन्हे लगि धन्या
दोहा भरत शत्रुहन को तिन्ह हिं दीन्ह चहत महराज।
बिनय नाथ सुनि कहु सोइ हो इक्ष्वाकु समाज

चौपाई

सुनि दशरथ मिथिलापति बानी। धन्य धन्य कहि योग्य बखानी
पावन कुल अति यह नृपति केरो। कोन कहत राजन सँगतेरो
आजु धन्य रघुकुल भयो पावन। लाये बिदेह भूप के दावन
भई अवध यश धरनि मिथिलेशू। भयो पुनीत अवध पतिदेशू
यह संबंध मोहि अति भावा। कृपा दृष्टि मुनि शीश लगावा
तब वशिष्ठ कह सकल जनावा। मुनि शतबचन मुनिहु सुख पावा
गुरु बशिष्ठ कुल कीनि बड़ाई। रहे भूप दोउ शीश नवाई।
भए गुरुहि मिथिलापति दीन्ही। पूजा बहु प्रकार नृप कीन्ही

मिलिकरिठीकलवटितहँआये जहँनरेशजनवास बनाये
दोहा· एहिबिधिउतरे भूपतहँगजरथदीनलगाय।
रथिन महाउतसकलभटआसन्नहेबनाय
घरघरजननेगिनसकलकह्योप्रसंगबनाय
नगरप्रगट भईबातयहपुलकानन्दरह्योछाय

भजन

मिलेजनकदशरथजबआये। हैदुइसुतानाथहमरेतेए·
मलयनको चहतदिवाये॥ हैमम अनुजसुताताके
प्रभुदुइतिनहूके व्याहउपाये। दयशत्रुघ्न भरत
को चाहत पैहोइहै प्रभुआपकराये॥ अङ्कर सुनि
हरषेदशरथनृपसबवृत्तांत बशिष्ठ जनाये।५।

श्लोक

जनकोदशरथंतत्रबबन्देशिरसानृपम् सुतानृजे·
न्द्र चत्वारि सुते भ्योदातुमुत्सहे। ६। श्रुत्वाबचो
मृतमयमिथिलेश्वरस्य लेभेमुदरघुकुलेन्द्रमारिण
र्महात्मा चरत्यौनतो मुनिवरायतपोऽन्वितायं
संसारताप शमनं कमनीयमाशु।७।

चौपाई

लगनबशिष्ठसुधरणीतसोधी·नामबिचारि सारिशवरोधी
मिलेरामसब भाइन साजे। बनरा बनिबनि व्याहनकाजे
मबुशवानृपजनकमंगाई। जनवासे सब सज्जि पढाई
रंगरंगपागनागशिरपेचा। तोरन भाल शीसकलंगीपेचा
तनजामासुन्दर पहिराये। बसनशभूषन योग्य सजाये
कुलदेवतनमाथतिननाये। गुरुबशिष्ठदयशीशपाये
जबनागरिहालशमजाना सुनिसुनिनगरलोगहरषाना

दूत भूपएक अवधपठावा। एहिनिमग्र असंगत तब पावा।
दोहा बालबृद्ध नरनारिसब अनंद उरन समाय।
जहँदेखौतहँ पंथ घर हरष रह्यो अति छाय।

भजन

जनकपुर प्रगट बात यह भई। भये विवाह सकल बालन के भोर लगन धरि गई॥ भोर भये सब सजे कुअर नृप राम सुन त चुप लई। मिले राम लक्षिमन सब जन को फेरि गुरुहि शिर नई॥ अङ्गन औरन्ह साज सजे सब भाय भेय करि कई॥ ६॥

श्लोक

वृत्तांतं सकलं ज्ञात्वा मिथिलापुरवासिनः विलोक्य सकलान् बालान् लेभिरेह्य चलं मुदम्। ८। पृथक् पृथक् तान्मनुजेन्द्र भूषणाः समभ्यधित्वा सुतरान्नृपः सुतान् ववन्दतुस्तं मुनिमासुरणवौकरीन्द्र बाला विव भूषणाग्न्वितौ॥ ९॥

चौपाई

नारिन सकल देखि सुख पाये। कहत धन्य जननी जिन जाये
देखहु सब दशरथ के जाये। कुअर विशाल दरस मन भाये
राम लषन सजि रूप बनाये। भरत शत्रुहन दोउ शिशु आये
देखहु बार लगत घुँघुआरे। गौर बिशाल नयन रतनारे
साँवर सुघर ललित दोउ भाई। धन्नि सखि भाग दरश हम पाई
ई बनरा बिशाल बनि आये। धन्नि यह मातु पिता जिन जाये
धन्नि अति जनक सुता सुकमारी। जेहि पति यश गावत श्रुति चारी
कवशिल्या सरिस अति तप कीन्हा। तेहि कारण विधि अस सुत दीन्हा
दोहा सुनी जनक कर अनुज नृप जी दुइ सुता बिशाल

जनकसुता दुहुसवनका होइहि ब्याह रशाल॥

भजन

बनरा बरचारि सजेसजनी । शिर पीत पगा तन पीत झँगा
भूषण मुक्ता का ढेक छनी ॥ शवधेश लाल सुन्दर बि-
शाल राजत कर सुदरी नवरतनी । सुनि शार्दूल सखी हो दु
हे बिवाह मिथिलेश कुमारि कीजे भरानी ॥ शङ्कर ध-
नि मातु पिता जिनके जवजन्म भयो धनि सोरजनी ।७।

श्लोक

नार्य्यस्ता: शमदोत्तमा: सुवसनारत्नान्विता बुद्धि
दाऊचुः पश्यत सानुजं रघुवरं भोरवः सुन्दरम् ध-
न्या हैमवती क्षितौ शजनकी सा कौशला पुण्यदा यस्यो
गोत्र कुलं च धन्य मभवद्धन्य: पिता सानुज: ।७।

चौपाई

सबनारिन भूषण पट धारी । गई जनक मन्दिर सुकमारी
ब्याह काज की करी तयारी । भरि भरि रतन नेह मन चुधारी
तेहि शवसर दशरथ सुनि पाये । बिश्वामित्र दरश कहँ आये
शाप मिले मुनि वा कहँ जाई । पूजि चरण कर भेंट देराई
दोउ कर जोरि बिनय शति कीन्ही । नाथ प्रताप कीरति मुहँ दीन्ही
मुनि शशि शव सब प्रगट जनावा । फिरि प्रभु सुतन्ह दरश हम पावा
प्रभुहि प्रताप शम्भु धनु तोरा । मरिहि शाचर करि शति जोरा

दोहा प्रभु प्रताप बड़वा शनल दुरयो निश्चर खल पारि
जयसकल करुणाशयन प्रभु तप्यो शबि स्तारि
तप बिमान धरि कीरति करि तोरि शकु सुरलोक
पहुँचायो शबतक लसत शमर शमर पति शोक
शस कहि भूप प्रणाम करि बहु बिधि शाशिव पाय

तेहि अवसर गुरु जानि तहँ भेट करी मुनि राय

चौपाई

बिश्वामित्र बशिष्ठ मिलापू। भयो ज्ञान को बचन प्रलापू
मुनि सब कथा शादि तेगाई। कुशल पूछि यज्ञ शाला आई।
कह्यो ताड़का बध पुनगाई। पुनि सुबाहु मारीच लराई।
जेहि विधि धनु राघव धीरा। परशुराम शागमन सजीरा
सबे मुनि बशिष्ठ मुनि बानी। सकल साधु मुनिवर मन मानी
तब सब कहे गरीश मनाई। कब वह लगन धरी शुभ शाई
नगर भागि सजि सकल दुशाला। धीधरि घट धरि दीप उजाला
बन्दनवार पताकन सोहे। पुरलोग भूप नरन मन मोहे
देह सरबत दुरगाजन वसंग गयो देखावत बिचारि।
मुनि समेत हरषे नृपति भूपति प्रीति निहारि

भजन

बिश्वामित्र दशरथ भेट। मिले कर लै भेट दशरथ
चरण करण लपेट॥ नाथ तवतप सकल मम बल
पक्ष बल जिमि रवेट। नाथ सकल कुमार शङ्कर क
रबशपनी फेट॥८॥

श्लोक

बिश्वामित्रं दशरथो ववन्दे मुनि सत्तमम् निधाय
सकलां पूजां ददा वाशी मुनिर्नृपम॥ ११॥ बिश्वा
मित्रो बशिष्ठ श्च मिलित्वा ययतु र्मुदम् नरमा
ण्यो भवानीजं समानचुः सुरवाय ताः॥ १२॥

भजन

बिश्वामित्र बशिष्ठ मिलेजब। यज्ञ शादि तारब
मुनि पतनी धनुष कथा सगरी मुनि कहि तब॥ भये

प्रसन्न सुनत मुनिवर तब परशुराम आगमन कह्यो सब।
शङ्कर सुनि हरषे संघके सब कवन लगन ब्याही होइहै कब।

श्लोक

गृहे गृहे जगुर्नार्य्यो रामचन्द्र वरोत्सवम् कदा पाणिं ग्रहं
दृग्भिः दृक्ष्यामि सकले शिवे ॥ १३ ॥

चौपाई

तेहि अवसर नृप लगन पढ़ाई। गुरु बशिष्ठ पठि नृपहि सुनाई
उतरहि चवक बहि जन पुराई। सतानन्द बिधि सकल बनाई
कीन्ह सब साज राज जन आये। समाचार दशरथहि सुनाये
पृथक पृथक शुभ स्तंभ सँवारे। पण्डित पृथक वेद बिस्तारे
नाथ राज यह लगन पढ़ाई। चढ़ब चढ़ाव मुदित मन लाई

श्लोक

मणिं दृष्ट्वा तुरामो वै च पाणा सस्मरिष्यति वीरो जन
न्यामसच राज्ञो दशरथस्य चेति रामायणात्।२।

श्लोक

सुनि शुभ लगन महीपति बोल्हा। साज कुसाज चढ़ाव नवीना
गये साजि लय नवल चढ़ाऊ। भूषण बसन रतन सब नाऊ
उतरे जाय भवन सब नेगी। लागे करन चढ़ाव सबेगी।
गणपति पूजि सुता तहँ आनी। सब सब बिधि उठाय मुनि ज्ञानी
दधि दूर्व सब बिधि सकल चढ़ावा। चूड़ा मणि शिर नृपति बँधावा
सिय शिर शोभित चूड़ा मणि सोही। श्री महमनि मातु लखि मोही
पदम पदम हीरा कडु बाँधे। सोहहि सुता सकल शुभ साधे॥
यथा योग्य सब चढ़े चढ़ाऊ। बढ़ो सकल पुर आनँद बाऊ
नेगिन उभय पक्ष धन पाये। चढ़ि चढ़ाव जन बासन आये
दोहा फिरि सब भाँति सँवारि गृह ब्याह लगन कर काज।

मुनिनेगीपठये जनक जहँ दशरथ महराज ॥

चौपाई

चितवतढाढ़ भये कर जोरी। नाथ सुनहु बिनती यह मोरी।
श्रीमिथिलेश नाथ पठवावा। शुभ शुभाय दास इत आवा।
बिनय भूप कहि प्रभुहि पठाई। चहत नाथ हम प्रभुहि जनाई
सब बिधि सुन्दर भई तयारी। कुँअर पठावहु अवध बिहारी
लगन काज महराज कुमारा। श्री अवधेश मुनीश बिचारा
सुनि अस बचन पालकी साजी। भूप हुकुम सब शिशुन बजाई
मग मग सब बीथिन्ह सजिया री। लागी झाड़ गिलास सवारी
सजे सवार पठावन हेतू। बाजा बान ललित शुभ केतू
दोहा शासा बस्त्र मनि गन गहि शब्दा गी रि लगाय।
धूक नगारन कारे चले चोपदार शिर नाय ॥

चौपाई

चले सवार पालकी घेरी। नहु नहु महिवू नत बहु तेरी ॥
शातश बाजि चहूँ दिशि छूटी। फुलवाई जहँ तहँ गहि लूटी
हार पठाय लवटि जन आये। जनक शिशुन घर मकल बुलाये
चरण धोय कुलदेव पुजाये। मंडप तरु सब तहँ शिशु लाये
पूजि गणेश शगिनि धरवाई। वेद मंत्र पढ़ि द्विज जगाई
नारि सहित मिथिलेश हु आये। मंडप बाँधि गाँथि हर बाये ॥
शास्त्रोचार दुहूँ दिशि भयेऊ। सब बिधि मुनिन सुरवन निज कहेऊ
कन्या दान रतन युत दीन्हे। भाँवरि फिरत हरष अति कीन्हे
पढ़त वेद सिन्दूर लगावा। पाणि ग्रहण सब बालन पावा
भई निछावरि नेगिन पाई। कोछ डारि भूपति हर बाई
दोहा बिप्रन पाये दान शति मणि धन हेम लसास
बारी टारी रामयुत जागनि जागमिनी जाम ॥

दोहा बातीदारिकृपानिधी॰नुज॰समेतबिचारि ।
गवनेजहँश्रवधेशनृपबचना शुभचारि ॥

भजन

साँझ दुआर कराय मुदितमन । करिगणेश पूजन दुरगा
कर पहिरायो उपवीत शिशुन तन ॥ चढ़ो चढ़ाव आव सु-
न्दर करि लगन सुधाय धरी सुन्दर क्षन । गये लिवाय सा-
ज बाजन जन जहँ मंडप शुभ रच्यो विविधि घन ॥ श-
ङ्ख सिंघ हि जगाय लाय तह जनक दियो दय दान सहि-
त धन ॥ १० ॥

श्लोक

गत्वाऽपगृह्यादिकेयु सकलान् रामादि बालब्रजान्
सानन्देऽथ मलेऽथ लग्न रघुवरान् सम्पूज्यदेवाधियान्
सानन्दो जनको ददौ धनयुता रामाय सीता भजाम्
न्येभ्यश्च सुता स्तथा जनक जास्तेश्च सुदं लेभिरे ।१३।

चौपाई

चढ़ि पालकिन जबै मग गये । बाजा बहु विधि जन बजाये ।
जयजय भई सकल पुर माही । सुख उमंग काहू जात सो नाही ।
बरषै फूल सखी मग माही । मङ्गलमय सुर जनु बधू देखाही ।
जगी रोशनी सब पुर राजे । उमरावती देखि छबि लाजे ।
शतशबाजि ललित छुटवाई । देखि नारि नर रहे लुभाई ।
सप्त स्वरन मय गति बाजी । सुनत भये जन जागरि राजी ।
भाइन सहित राम जनवासे । मुदित सबार तुरंगन पासे ।
उतरे मोतिन रतन जड़ाऊ । भूषण धरि दशरथ नृप पाऊ ।
दोहा पाये भूषण सुतन लखि हरषे श्रीश्रवधेश ।
गोद लिये बैठाय सुत रह्यो न तन छन लेश ।

दोहा वृद्ध भये पाये तनय विछुरनि बिरह मिटाय
बालसुखाये भूपतहं तनसुख कहा न जाय

भजन

एहि बिधि ब्याहि सुता सब दीन्ही। करि भवरी लय गई
सखी सब भीतर नारि महीन्ही ॥ बाती साजि धरी दी-
पक मे अंजन सखिन यह कीन्ही ॥११॥

भजन

मेलहु राज कुमार यह बाती। हेम कील गहि कर मेलहु
प्रभु होय न अंगुली राती॥ लौकिक रीति प्रीति की सु-
न्दर बर बनरी सुख भाती। भवरा लेहु मिलावजाव
फिरि रहीं तनक प्रभु राती॥ शङ्कर सुनि मुसक्याय चि-
तय प्रभु सिय सुनि सुनि सकुचाती॥

श्लोक

एकी कृत्य दयानिधी रघुवरो नारी गणैः प्रेरितो ले भेसो
बिम लं सुरवेद्युति करं वैवर्ति के सानुजः ताः यद दुर्धन
भवणादि सकलं सगृह्य वाहे स्तदापि चे सामस्त काय
सादा तया प्रीतान्मुनि भ्या मज म॥१४॥

चौपाई

भोग भये नृप कीनि तयारी। भानु सकल व्यंजन रस न्यारी
पात पठय तहं दीन्हि कलऊ। घर व्यंजन साजे रस केऊ।
अमवा भातु अमिलिया न्यारी। पनवा भटवन सहित सुधारी
पोदिना अनेक रसाज बनाई। मसंगी रस बरो सिधाई।
बरा पनेउ छा गलगा सोहे। खरिका मरनि घृत अवगोहे।
साल नकहे तक कोटि गनाई। सखिन सकल मिलि विविधि बनाई
डारिकपूर बारि धर वावा। जनवासे जन जेंवन पठावा॥

आय्यो राज भूपतिसों कीन्ही-जनक कही विनती कहि दीन्ही
दोहा सुनि शतधनु नरेश तब लिये साथ सब भूप।
साजि साज आये हरषि गिरि विमला नूप॥

चौपाई

जनक सकल गहि भूप उतारे। करि मोजन आसन बैठारे।
छोरहु बसन कृपा प्रभु कीजे। मन्दिर बिमल चरण मम दीजे
उठे सुयश बन्दी जन गाये। जनक तनय पद धोय सिधाये
लय लय मन्दिर गये नरेशा। ये आये मिथिला पति देशा।
बैठे हेम पीठ सब जाई। सुतन सहित अति प्रीति बढ़ाई
जल भरि पात्र बिमल तहँ लाये। शोदन दुदल सकल धरवाये
धरे कटोरन घृत करि ताते। मूरनि पापड़ अधिक हरषाते
कर जोरे मिथिलापति ठाढ़े। भोजन करहु कृपा करि बाढ़े
दोहा लगे भोग परसत विमल नाना व्यंजन खाय।
बरदेरवावत भूप सब सचयो जनक सिधाय

चौपाई

आनन्दित द्विज सुखवन्त नृप कीन्ही। भूषन नयन सामग्री लीन्ही
आये भूप आये दरवाजे। पान खात पुनि बाजन बाजे
जहँ तहँ राग रागिनी पुर जारी। देखत होत सुखी नर नारी।
जनक राज सुत चल्यो पठावन। लायो भूप यथा विधि पावन
भये सबार भूप सब आये। जनक वासि आनन्द अति पाये।
सेवक सज्जन दई लगाई। लेटे भूप रूप सुखदाई॥
सोये सब तन आलस बुझाने। आये लोग भूप जन जाने
जनक जनाय तिन सकल जेवाये। भोजन करी सुन्दर सुख पाये
दोहा यहि विधि सोये नारि नर करि भोजन सुख पाय
भयो भोर साजन लगे विधि बढ़ात नरवाय॥४॥

दोहा लगे शमेना चढ़ दिशि तम्बू झमक कनात।
होति तयारी द्वार तहँ उतरे जहँ तहँ नात ॥ ।
परे चवकडे अवराकर कटक हेम द्युति भ्राज ।
घूमत जन मिथि लेश कर जनु विदि मति के काज

भजन

वाती दारि कृपानिधि शाटे। दीन्हो नेग पाय दशरथ को
लेन्हू पकराढ लगाये ॥ दये सोशाय कुशर भूपति तहँ हो
तसकार जगाये। प्रात शन्हाय पूजि सुर मुनि गुरु नेगी
जनक पढाये ॥ भयो तयार भात मन्दिर मे शसकहि
माथ नवाये। चली बरात गई मन्दिर मे जनक सबन
बैठाये ॥ शङ्कन सकल परसि व्यंजन तहँ करि हित
न्हपति जेवाये ॥ १२ ॥

भजन

खाय बरात भात सब शाई। भोर भये लखि जनक बढ़ार
की सब बिधि साज बनाई ॥ शङ्का सुनि हरषी नागरि स
ब उर शानन्द रह्यो छाई। ॥ १३ ॥

श्लोक

कारया मास राजेन्द्रो व्यञ्जनानि गृहे तदा नानाबि
धानि राजेन्द्रो नानाय प्रददौ स्वयम् ।१५। काशी शो
मगधेश्वरो मधुपतिः पाचाल देशाधिपो राजा सिंधु
पतिः कलिंग सुखदो बंगेश्वरो भूपतिः कैकेयी तन
यस्य मातृजनको मत्स्याधिपः पार्वतो दृष्ट्वा शात प
योनिधि दशरथः सर्वे मुदं लेभिरे ॥१६॥ व्यञ्जनानि
खलु संति बहूनि पीति दत्त ममले खलुचान्यत इन्द्रदत्त
पय सो सवमीश चातको नहि पयोधि समा वसु ॥१७॥

जनक पक्षात श्लोक स्तुति

कन्यां कांक्षति नैव कोपि कुशलो हे दारिकां तापितु
र्ब्रूमो रामदिलीपरंतिमुनिवो राज भ वैयुः कथम्
नो चेन्मात रुवाच हा जनकजा श्यामा विना राघवा
ह्यागस्याः सुरवेदनये न सकले पूतं कुलं नैमिजम्। १८।

श्लोक दशरथ पक्षात

धन्यं जात रघुकुल मलंदात मान प्रसन्नं कांत सर्व
वर सुता तनकजा चूड़ा मणी कामदम् मरंधन बु-
धाधिप त्व भवतः सारज्ञ चूड़ामणो ब्रह्मानन्द रघूस्व
किंप्रकथयेलब्धं चयद्यत्सुरवम्। १९। मुक्तासवैरसा
न्सर्वे गत्वा स्थानं सुरवादिदम् सुखु पुलोकपाः काले
तत्यजु. शयनं शुभम्। २०।

चौपाई

भईतयारी सकल बनाई। सजी सलोनी शमर सिढाई
ऊपट नदव तन लटु सन्हवाये नेगिन रतन शभूषण पाये
साजेदरवावन्नत संग लाई करिविधि नृपबरात नेवताई
शस्तुति भईदुहूंदिशि भारी। नेवतिगये घर कीन्हि तयारी
सजीकलेकु पोचन नाना। हेमथार सुन्दर जन जाना
सुरवासेवा भेट सिढाई। पूरी पाण पुआ धराई॥ ॥ ॥
बृतापीवा पन्न सतराई। लवकीजिमं। कन्दसरसोई
भरेकोल मेलघृत पागे। व्यंत कपोय सेमरस लागे
खोड़ा मेथी मरशा चनाकार चवराई फल फूल।
पालबघोई शाक बहु शमित शमल बरमूल।

चौपाई

शमित शचार शधिक घर वाये सरवा तेल ससाल भराये

चटनी तले करौंदा न्यारे। बहु फल धरे खटाई डारे ।
खीरडार मेवा घृत साजी। कोन्ह देखत नर राजी ॥
धरी शरकरा कन्द पिसाई। भरि भरि धरे धेम धर नराई ॥
मिसिरी कला कन्द बनवाई लाये सेरहु बहु हिलवाई
बहु गिन्न भरि भरि चली मिठाई। जामे अन्न न लेश मिलाई
अन्न मिठाई भरि धरवाई। कंचन रूप धार भरवाई ॥
खाझा खुरमा भरी पिराकी। माठ मठुलिया पातन ठाकी
दोहा मीठो खोआ रस भरी कोई मसाले दार ।५।
धरी शठकुली बिबिधि विधि भूपति भूप बिचारि

चौपाई

लड्डू लेडुई शक्का डारी। छोंदी रसिक मुलायम भारी
मोती चूर पान धरि न्यारे। बूंदी पपची सकल सँवारे ॥
शिव गौरि भरुआ मासू बनाई। पृथक पृथक सब जनक पठाई
कहँ तक सब कोहँ कहि सुरवाई। जो भेजी मिथिलेश मिठाई
बीरा बिधि बहु साजि पठाई। भूपति देखि रहे हरषाई ॥
पढ़य कलेऊ फिरि जनआये। जनक राज की अरज जनाये
आयसु होय नाथ कर जोई। बालक चलै कलेवन सोई
भई रजाय पालकी साजी। चले कुमार मधुर धुनि बाजी।
दोहा। सजे शश्व गज शुतर संग बस्तु अशान निशान
आये सकल नरेश घर गहे धनुष कर बान ॥

चौपाई

जबु यदुवर बारे सम्बन्ध पुरपाई। चली सकल तन साज बनाई
आई सब जुरि जुरि तहँ नारी। उतरे जहँ सब अवध बिहारी
बालक लाय भवन बैठारे। सानि जानि तन बसन उतारे
चउक पूरि शासन धन नाना। धोवत चरण कीन्ह सनमाना

गड्या पाच छोट धी न्यारे । भाँति भाँति धरि पाच सँवारे
तिन महँ भोजन नाना भाँती । घरे जनक सुत दृग करि पाती
परसत ऊ आनँद सब कोरे । बैठीं नारि चहूँ दिशि धोरे ॥
नेगशाय मिथिलेश दिवाये । दरवत शिशु अनन्द उर छाये
दोहा लीन्हे अमल अमोल बा भूषण तन सँवारि
चितये राम सबन कह्यो जेंवहु गावत गारि

भजन

घर घर सजी भोर सब सोवयो । हिलि मिलि चली जनक मन्दिर को सफल करन निज शोवयो ॥ कोइ कोइ गोद लिये सुन्दर शिशु दिये शीश गा तरिवयो । लीन्हे हेम जटित मुदित कर भरी रतन मधु दरिवयो ॥ शङ्ख बसन रतन तन सुन्दर कसे हेम कर रविवयो ॥१५॥

श्लोक

नाय्यो धार्य्य विभूषणानि सकल वस्त्रं च नानाविधं भुत्वा दाशरथौ च बरान्नृपगृहे संभाग्य कान्सुन्दरान् शृङ्गारमुः शशि भानना : सुजघनाः कुम्भस्तनी : सत्वरं नेत्र शोंग कटाक्ष भूविलसितैः श्रोपत्यतान्जीघ्रे ॥२१

चौपाई

नारी सुनत शटपटी जानी । मन मुसक्याय रहे धनु पानी
लषण चितये इत उत मुसक्याने । नारिन हीद गही शिशु भाने
चितये शत्रुहन सान चलाई । कोउ कोउ नारि गई सकुचाई
भरत शीश निज लीन नवाई । रघुनन्दन समता दरशाई
नारिन सब यह मन अनुमाना । ईदृङ् ढीठ बाल जिय जाना
अब अपने मन करहिं विचारा । कवन जतन पावब हम पारा
एक सखि कह्यो न बालो शाली । पुरुष सकल उतारि कुचाली

है केतक चंचल यह बाला॰ परो न नारि चपल के पाला
जब भोजन करि सरिवन्त सोई॰ तब मज्जन हित उपहास सहिताई
दोहा॰ नारि सिखन गज नर सकल लाज कटेहु राजानु॰
जो न्हि कसै सरिवटोरि तहँ तो जीतो गज भानु

भजन

नेवति बरात पान पहुचाये॰ पर पक वान्न पठय मुदित मन बालकु सब नृप भवन बुलाये॥ जीमन गई सरिवया मन्दिर कहँ तिन्ह दरशन अपनी मगा पाये॰ एहि विधि गये जनक मन्दिर कहँ सरिवयन्हि लिलि मिलि मङ्गल गावे॥ शङ्क चरण धोय आदर सों भोजन हित चव का बैठाये॥१५॥

श्लोक

लक्ष्मणाः सानुजस्तत्र जहास भृकुटी दृशैः नार्य्यः संवीक्ष्यतं मेने चपलं सानुजं वरम्॥२२॥ भोजनातेच पलतोहरिष्ये बचनैरलम् विलज्जायं जरं जेतु नारी सिंहचकः प्रभुः॥२३॥

चौपाई

रामहि बिलोकि सानुदर शाई॰ भोजन करन लगे सब भाई
कोमल करल घु ग्रास सँवारे॰ तनक तनक परसत पनवारे
शीश जुलुफ मुग श्याम छलारी॰ हलकनि निरखि भईबस नारी
मुंदरिन झलक पलक पराजी॰ जनहु कमल भृंगी अनुरागी
जेहि करबीच कटोरन डारैं॰ नारि ललित कर नयन निहारैं
जल करि पान शचय सब भाई॰ सादर बैठ पलँग पर शाई॰
पीहरि बसन शिरपागु सँवारी॰ भाल जाल सोहत रतनारी
पान लगाय सरिवन्त दीन्हा॰ कछु जिय हसनि ठसन करि कीन्हा

दोहा कोइएक नागरि चतुर प्रीतिजानत हासबिचार
पलँग लागि लक्ष्मन निकट बोली फेरि दिदार

भजन

जेवत राम सकल मिलि भाई। देखि रूप सब ठगी जनक पुर
ज्ञानदृऊरत्न समाई ॥ की भोजन शुचि वाय राज सुतदी
न्हो पलँग बिछाई। लाची लौंग पान रतनन की सुदित
भरि भरि पाई ॥ घेरि लियो चहुँ ओर नागिरा करतोहा
सठिठाई। शङ्कन कोइएक नारि चतुर पुर निकट बैठि हँ
सि जाई ॥ १६ ॥

श्लोक

स्वङ्गेषु चतुर्वु दिक्षु प्रमदा श्चोयेत्य सुन्द्र बता न्सान
न्द प्रद दुर्लभ सहिता न्ता म्बूल युता न्फलान् पप्रच्छु
कुशलं स्वसुर्भवनज मातु र्भकुत्यादि भिस्ताजहसुः
सरसं वचो मिथिलजा : प्राचुः सरोजाननाः ॥ २४ ॥

दोहा शुचि सुखदय चितय नय कह्यो बचन एक बाल।
रीति लखण हम जोरि कर जानत चहति हि वाल
मातु के तक भगिनी तथा पित भगिनी रघुराज ।
कौतिक बयस निज मातु तन कहो छोड़ि सब लाज

चौपाई

शोर हुएक सुना इतिहासा। कहत बनत नहिं रघुकुल हासा
तुम्हरे कुल रघुवर सुनि पाये। सगर भये त्रिभुवन यश छाये
तिनके सुनी लखण दुइ नारी। लोक बिदित यश रूप उदारी
सुनि एक नारि एक सुत जावा। साठि सहस्र सुनि एक उपजावा
दुइ सब प्रभु सगरे न्रप केरे। की कहुँ शोर भये न्रप तेरे ॥
धनि यह उदर धन्य वह नारी। सुनि शुचि रज लागत प्रभु भारी

हमरो सुनत अगाध हराना। हम भाई सुनी पैसा वन हीं माना
तुम लक्षिमन सुनि कहियो साची। कैसे नारि कहा वह बाची।
एतनी कहि नागरि मुसक्यानी। लक्षिमन सुनि बुधि बतुर बखानी
दोहा दीखी नागरि ढीठ जन बोचित यत्न अगाध।
बोले रघुपति पाय रुख कीरति रूप अगाध॥

भजन

तुम्हरे कुल एक सराह भयेरी। हम पूछत यह साँच कृपानिधि दीउ कर शीश नयेरी॥ साढि सहस्र सुत एक नारि ते भूपति नाथ लयेरी। साढि सहस्र सुत साढि सहस्र के की भूपति हितयेरी॥ अङ्कुर धनि वह नारि कृपानिधि हम सुनि मन हरयेरी॥१७॥

श्लोक

शसीन्दा जा रघुवर कुले लोक लज्जाव्रतो भे नाव्यौतस्य बभूवतुश्चसगरा पैक: प्रियायास्तया शन्यायाः खलु शयतेष्ठितलेन त्रा भवत ब्रूहि भो सत्यं षष्ठिस हस्र पुत्रगणा के मृत्वा भयंजायते॥ २५॥

चौपाई

तिरछे नयन मृदुल मुसक्याने। बोले बचन प्रीति रस साने
हमरे कुल तप ब्रत की नारी। जाये सुत सुर मुनि हित कारी
यह व्यभिचार न देश हमारे। शस्त सुनि यत सबै देश तुम्हारे
तुम्हरो बचन जानि हम पावा। बोलत भयउ बचन दुरभावा
नयन कहत भृकुटी यह देशा। नारि नडहा प्रगट यह पेशा
रघुबंशी बल बिदित जहाना। उपजै एक सत तहां सुत नाना
तुम्हरो होय सुत बहु मंदहा। चलहु अवध तजि देश बिदेहा
सुनि कोउ नागरि अधिक सकुचानी। रसना दशन दाबि मुसक्यानी

दोहा सुनि लक्ष्मनके बचन ऋषि नागरि ढीठ महान
तिरछे जयन नचाय हँसि बोली चतुर जहान ॥

भजन

लक्ष्मन सुनत मृदुल मुसक्याने । रघुवंशी बलवान
भूपसबहि प्रति यश विदित जहाने ॥ हमरे दरशन नारि
चपल ऋषि देश तुम्हारे वाने । जल दुरगुण सगरे तुम्हरे
सखि होत न बीर महाने ॥ शङ्कर चलहु रघुकुल
बल नाहक सुत न सिहाने । १८ ।

श्लोक

राजानोगुण संयुता : समदना रूपान्विता मानदा : शा-
स्त्र व्याकरणावतादि मधुया बीरा गना भोगदा : सास
का नहितत्र चाचसकला जानामि दृग्भर्मुदा युष्मा-
कं वचनैश्चयश्च ततो गत्वा पुरीं कोशलाम् । २६ ॥

चौपाई

सुनहु लखन तुम ढीठ सलोने - देहु उतर सुनि बैन हँसोने
वीर भये रघुकुल हम जाने । जहँ तहँ सुने पुरान बखाने
भे युवनाश्व एक हि कुल जानी - गरभ रह्यो मुनि कथन बखानी
नारिन के सुनिये तन जगमाहीं - होत गरभ पुरुषन कहुँ नाहीं
नाथ भयो सुत कुसतिन कैरे - सत्य जु होत कथा सुनि मेरे
सान्धाता तिन कहँ जग जाना - यह प्रसंग भाई विदित जहाना
नारि कवच कर कहा प्रसंगा - क्षत्र नाश परि भयो बन भगा
दोहा - यस कहि चितई लखन तन दीदा मुसक्याय
यह प्रसंग साँचो अथ वा झूठो देव बताय ॥
यस बीरता प्रभु सुनी - मुनि सुनि जिय सकुचाय
केहि बिधि उपज्यो गर्भ प्रभु साँचो देव बताय ॥

मुनि बोले शत्रुघ्न तब मृदुल मृदुल मुसक्याय
मधुर सुधा बर रस भरे रघुबर की पाय ॥
मंत्र मुनीश प्रताप सो भयो गर्भ का ह्रास ।
ब्रह्मा सृष्टि प्रसिद्ध जग भंच मुनीश प्रकास ॥
रघुकुल भे सुत जीवते नहिं बिदहते बीर ।
तुम्हरे कृपनि मिते भये जनक बिदेह शरीर
यथा योग्य उत्तर सुनत बोली नारि बिशाल
ज्ञान भाव कर्मि भेष प्रति टेढ़ि भृकुटि कर्मि भाल
दृष्टि नारि कहन नयन सो भाई साधि गरूर ।
कहन लगी सुन्दर बचन जानु कि भरी शऊर ॥

चौपाई

बे नीर बोलि बदन दरसावा घूघुर पटकर मृदुल उढावा ।
मधुर मधुर स्वर बचन उचारे नयन बाण रघुबर उर मारे ।
दे बालक दोउ चपल सरीरी सुनि चतुराई न जाति बरीरी ।
सुन्दर बचन मिसरी बन भाई तुम्हरे कुल अस सुनी बड़ाई
पुरुष बली नारी जग जानी जिन की कथा पुराण बखानी
सुत सुनी चन्द्रावति नाम । रघुकन्या सुन्दर रस धाम ॥
जासु सुत मुनिवत सुत जाये । नासकेतु जग नाम कहाये
बली भूप रघुकुल बहुतेरे । भये कुमारे सुत तेहि केरे ॥
कौने मुनि कीन्हो कस संगा भयो कहा रस शमित प्रसंगा
दोहा होत सुता सुत सबन के जैसी जग की रीति । ॥
यह कुल की सुनि यह कथा बाढ़ति जिय अति भीति
नासकेतु तेहि नाम परि यह प्रसंग मम साच ।
होय कहो कौनी जतन भोगी इन्द्रिय पाच ॥
अस भारी रघुबीरता हम जानति सब बीर ।

तुम बालक रघुवंश मणि सुन्दर चतुर शरीर
कहो कवन यह शूरता सुता संग यह हाल ।
करहु प्रशंसा बालतुम रघुकुल नाथ कृपाल

चौपाई

सुनत जनक नागरि की बानी विहँसे लखि चातुरि जिय जानी
शचरज कवन तुम्हैं सुनि भयऊ तप प्रताप नामा सुत लयऊ
बिधवत भोग कहू कुल कीन्हा यह प्रसंग सुत सुत कहि दीन्हा
जानत सन्ध सन्ध सब जोती तुमहि सकल लागत अस होती
पाप भोग हमरे कुल नाहीं यह प्रसंग मिथिला पुर माहीं ।

दोहा प्रशंसति लछिमन के बचन सुनि कानन सखी मुसक्याय
हमने चहत रघुवीरतन चितई ओट अड़ाय ॥

भजन

यह सुनि एक सखी मुसक्यानी हमहूँ एक सुनी मानी न-
हिं अस होती जिय जानी ॥ सुनि यत रघुकुल सुता भई
कोइ सुन्दर रूप बखानी । ताके नाम ते उपज्यो सुत रूप
वान अति ज्ञानी ॥ नाम परो जग नास केत तेहि तेज पु-
ञ्ज को खानी । सबके होत सुता सुत सजनी जैसी रीति
जहानी ॥ यहि कुल की शङ्का हम सजनी कहत प्रसंग
डेरानी ॥ २७ ॥

श्लोक

कन्या वभूव विमला रघुजा कुलेना चन्द्रावती शुभन
सः पुरुषाभिरामा पुत्र श्रुत गुणावती जनया वभूवने
यकथा शुभ तरी भुवि नाम केतुम ॥२८॥

चौपाई

नागरि एक रही तह पीछे चितई घूँघुट खोलि तिरीछे ॥

गुञ्जहु मेल करावहु सोई। कंचुकि बसन न ओट छपाई
भृकुटि बिलास सीस तट डोले। कुराड लसत रुरा कपोल न डोले
दामिनि सी बिच लीदुति छाई। देखि कवन अस जोन लुभाई ६
बिहँस नयन चंचल दरसाये। रोमावली अजब छबि छाये
अजन नारि कर कर मृदु दावी। बदन झिकोरि भृकुटि भावी
कहन लगी हरा कार चलाई। लाल सुनहु यह कान लगाई
भूल बस अब न जनक पुर आये। बहुत बरन हम नाचन चाये
दोहा तुम बालक जानत नहीं हम अस दरस के हास।
तुम से हमरे ढीठ न घूमत निसदिन पास॥
नारि चारि जहँ होय मिलि कामहि पुरुष हजार
तुम रस हस समुझत नहीं लाग अबेन दिदार॥
हमरे लोचन बाण मित मृग पुरुष बलवान
जो बेधब होइहो बिकल रहो फिरि न भिहान
अस कहि हेरी बिहँस कसि फेरी भौंह कटीलि।
देखि सकल भाइन भई बुद्धि कढीन ताढीलि॥
भाव रसि कहँसि सखिन तन बोली चातुर नारि
रहहु रहहु चुप ढीठ अति बालक ढीठ बिचारि

चौपाई

देति वृथा सखि हेर मिलाई। रघुबंशन बिन कवन चलाई
हे जानत नहिं नारि न प्रीती। नाहक जाति शिशुन तुम कीती
जा बन दिग जागरि बहु नेरे। ए हे कुल पुरुष पुरुष घनेरे
यद्यपि हमरे हे कुल समनाते। तदपि क कुस्थ बशहि अधिकाते
सुनान तुम इल कारति हासा। नारि भेष कपि बुध कहे गासा
बुध ते सुत पुरुरव उपजावा। यह सुनि शरम मोहि सखि आवा
तप बीरता महान बरवानी। यह बीरता सबी हम जानी॥

पुरुष न कतहुँ पुरुष संग कीन्हा ईभाई को बीर तप चीन्हा
नारि ताड़का बध इन कीन्ही नारि न सकल सिखा यन दीन्ही
दोहा यह सुनि सब बिहँसी रबसी गानी नयन्ह दुरावाय
लषन भृकुटि भई सुनि रामहिं सकुचाय
फिरि बोली सांवरी सखी लषन भृकुटी की बात
कहिन पुरानन मुख सुनी यह भयो कैसो नात

भजन

नागरि एक ढीठ कर जोरी। हँसि बोली पूछो चाहति प्रभु
बात नाथ कछु थोरी ॥ सुनि यत रूप इल भयो बिहि
कुल रिसन कारब सुनि मोरी। पुरुष ते भयो नारि श्रुति
सुन्दर देवी बुध मति भोरी ॥ शङ्कर पुरु सुत भयो जा
नि फिरी गैले बुधहु सो टोरी ।२१।

श्लोक

इलोप्यासी द्रा जा रघुरूप कुले कारणा तथा गतान स्त्री
ता सा मदन शरविद्धा गर्वि मना बुधं कृत्वा पुत्रं पुरुष
जन वत्सा प्रति मलं कथयं की दृभा रघुवर मुदाश्चर्य्य
मरिवलम् ॥२६॥

दोहा सुनत बचन रिपदवन्त तब जानि चपलता नारि
मुख रुमाल दय बिहसि रसि चित येदत दिदारी

चौपाई

तब शुचु उतर बधीन्हा तुम नागरि हम सरवी कुलीना
बहुत क देश गये सब देखे नागरि ढीठ जनक पुर लेखे
मोल लई सगरी तुम नारी सुना ब्याहि विक्रय दरसाई ॥
पुरुष पुरुष चेरे हम साँचे। कबहु न नारि दंड लखि नाचे
शाप प्रताप भये इन नारी पिता तज्यो शसतद्प बिचारी

तुम्हरे पति धनदै तुम्हैं लावा। मिथिलदेश जब सुनात सपावा
नारि पुरुष तब दूत हि देखा। करतीं ज्ञान पुरुष मन माना
बिन लीन्हे कोइ सुता न देई। मन माना बर सो धन लेई
जब मिथिलेश राम बल लीन्हा। ब्याहि सुता अपनी तब दीन्हा
तुम्हरे शिरन्ह मुकुट पति केरो। चहत नाथ संग अवध बसेरो
हम रघुबंश कुमार जग जाने। छुअत न नारि शाप भय माने
तबते तुम भइ नारि कुलीना। मोरहु लेत कतहु परबीना
दोहा। सब सुनानि मिथिराज कर बिषय रही धरि देह।
ऐसो बिषय बिचारु सखि जेहि सुत भयो बिदेह॥
तुम नयनन की सान की प्रगट करति निज कर्म
हम रघुबंशी विदित जग करत न भूलि अधर्म।

चौपाई

निज नृपबिषय सुनो सब नारी। देवन कहेनि मिनि मिथिलधारी
जब बिजय श्रुघ्न जनावा। कोइ मुनि नारि लाज भय पावा
कोइ कहै तुम चुप रहहु सयानी। कथा मोरि रघुकुल सब जानी
मोरे सुनहु जय अवध दीन्हा। कैकेयी बिवाह जब कीन्हा
कैकय सो दशरथ अस कहेऊ। देहु सुता मोहि जब अस चहेऊ
तब कैकय अस बात जनाई। सुता तनय जो होय सहाई
ताको राज्य तिलक जो देहू। यह प्रण करहु सुता मम लेहू
तब दशरथ प्रण करि नृप ब्याही। कैकय रानि मोरि कस नाही
अब दूसर व्यभिचार जनावा। ताको सुनहु पुरान न गावा
हमरे भूप रूप गुण खानी। नारि रहत घर बीच बखानी
यह व्यभिचार यदपि नहि देशा। करतब कतहु विचारि नरेशा
दोहा। सुनहु प्रगट व्यभिचार यह प्रगट मही जन जान।
दिसन कर बर रघुबंश मणि सुनि कुल रीति निदान

हमनारी प्यारी मदन करति बुद्धिबल हीन ।
पुरुषजा नुनारी करत सो व्यभिचार धुरीन ॥
जो नारी सँग पुरुष निज की लावे चालि दास ।
सो प्रति रिज प्रति लोक सब यहि बड़े नकर काम

चौपाई

सुनहु सुनी हम यह नहिं मानी अब प्रभु तुम सब कहो बखानी
महाराज दशरथ की रानी । के कय राज सुता जग जानी ॥
सुने के शत्रुन के घुघुराले । पिंछ मयूर य था सुकुमारे ॥
रूप देखि दशरथ नृप मोहे । नयन कटील मृगी जनु सोहे ॥
बाँकी भौंह करत तिरछीली । नयन मरोर पुरुष हिय हीली
भुज बर मूल शकरा प्रति गोरे । मुख सरोज शशि दुति कर चोरे
भाल लाल सुन्दर सुकमारा । गधे के शमन हु भ्रम जारा ॥
कम्बु कण्ठ लखि को न लुभाई । राजत शुभ जब शधर शुहाई

दोहा मेरु शिखर जनु शीश शुभ मोती गन शुभतार
बदन निशाकर कच जलद नयन मृगी गति जाम

चौपाई

कण्ठ मूल गिरि निकरि सुहाई । रोमावली नदी बहि शाई ॥
नाभि भ्रमर बर सुघर बनाई । देखत को न चकित होय जाई
उदर गभीर सिन्धु चलि शाई । बंक जञ्जीर कटि सुघर बधाई
केहरि कटि नित खीन सोहावी । ऊरु तटनि घाट सवारी
गुल्फ गोल जनु बूद सुहाये । शुरुण चरण पकज छबि छाये
कर सुन्दर शंगुली सुकुमारी । भूषण को कहे राज दुलारी ।
रोमावली नदी तट वारा । ललित शोज मनहु चकवारा ॥
मुख शशि लखि न होत एक ठोरी । सुनहु लखन यह बात सो मोरी
दोहा ऐसे रूप विलोकि नृप कीन्ह्यो चलि माँगि

लाये निजमन्दिर सुघर देखि वरूप गये डारि ॥
करत भोग बीते दिवस बहुत प्रबल त्रिय जानि।
मनही मन अनुमान करि अस बुधि धरि कियो मानि

चौपाई

महाराज करि भोग अपारा। नारि नई नृप वयस विचारा
राधेलि बाय युद्ध निसि राजा संग कथ कई सहित समाजा
लसि गई रही कथ कथी रानी हमन कहति मुनि अति बिनबानी
उह कहुँ आवहु कीन नरेशा भयो वृद्ध अस तहँ अवधेशा
एक दिवस अयन सुनी नृप सोये जान नरयो कवन हम कोये
नीद नरयन रानि कहिं आई। काम व्यथा उर अति जो हि छाई
तेहि अवसर अति कोइ एक आवा रानी भूपहि नि कट बचावा
जेहि विधि लीन बचाय विचारी सो भाई हम कहि सकति न नारी
पय अनुमान सकल हम कीन्हा सुघर नारि नर कस तजि दीन्हा
दोहा अस कहि हँसी नचाय दृग अस कहि अति व्यभिचार
हमरे नृप रानी सहित योगी ज्ञान अपार ॥२॥
सुनत बचन सकुचेस कल श्री अवधेश कुमार
फिरि रिपुदवन बिचारि उर दीन्हो उतर अपार।
तुम्हरे नृप कर ज्ञान हम जानो सकल बिचारि
अस कीन्हो टारेधनुष देउ सुता सुकुमारि।
जो कोइ नीच चढ़ाय धनु लेतो सुता तुम्हारि
कस कीरति होती सकल देखो हृदय बिचारि
तुम्हरे देश प्रगट जवन जस मरजाद सुचाल।
सो हम सब अस सुनि लखी गाय लखो नृप हाल
एसे उजे व्याहत सुता ताहि देश की नारि ।
करति बड़ाई नगर की ता पर ढीठ अपारि

भजन शत्रुघ्न

सुता देहु मोरे कहूं नालीन । सो मन जानि ससुभि ना
गरितु मज़बन होहु परबीन ॥ तुम लै बीर्य्य हमे सिय
दीन्ही ताते भई कुलीन । शङ्कर लयन सुनत चित
नयनन कह्यो नकुल बल क्षीन ॥ २२ ॥

श्लोक

कैकेयी शुभगा सती मगमयच्छ्रुत्वा नरेशस्तदा रू
पागारतरां नरेन्द्र सुरवदां श्यामां पचके तथा बुद्ध
व्याज तयाविवाह ममलां देवासुरे व्याहवे सुप्तं दैत्य
वधान्मुमोचसुबचा वृत्या कयानो श्रुतम् ॥ २३ ॥ शत्रु
घ्न (ऽ) बीर्य्ये शुल्के न साद्दत्ता सीता रूपवती सुता कुरु
ध्वस्व नृपस्य लेप्रस सा नगरस्यच ॥ ३२ ॥

होहा सुनत हांस बानी सुघर जनक बधू मुसक्याय
हाव भाव करि लयन तन हृदय हरषाय

चौपाई

शार्दूल मुनि श्रम निकट सयानी बैठि चतुर जोरे युग पानी
नाथ श्रज कछु कीन्ही चहई प्रभु सकुचाय प्रगट नहि कहई
दाय ज्ञ को उदय सुता बिवाहे को उलय देत जगत दुइ राहे
गाधि ऋचीक मुनि हित ब्याही श्याम कराल श्रश्व सगाही
होनी सब भूतल प्रभु भाई श्रनहोनी सुनि जिय सकुचाई
हम एक मुनी समुझि नहि मानी राजधिराज धनी कुल जानी
पूछो चहति कहत सकुचाऊं कहौ नाथ श्राय सुजो पाऊं
तब रघुबीर धीर मुसक्याने कहो जो तुम नारिन मन भाने
तब बोली चितई मुसक्यानी मुख पट दय पूछत हरषानी
होहा दूत द्वत सुघर बिलोकि हृगरा मन नयन दय प्रगट

श्रान सरिवन तन मृदुल कर करि घूँघुट कर कोर

चौपाई

राम नयन तन नयन लगाई। नासा मोर चपल मस खाई
सुनहु नाथ यह बात न बीनी। सुनी कृपा निधि भई अधीनी
भगिनी शांता सुनी तुम्हारे। कोइ लइ गयो कृपाल कुमारे
होउ नहीं श्रान उन दीन्ही। यह सुनी लिकि पानि धि कीन्ही
की पितु दई कि संग कहुं लागी। की कहुं रूप देखि गई ठागी
सुनत नाथ कछु नहिं कहि जाई। हंसु सकल यह हास बलाई
सुनि सकुचे कहुं उतर न पावा। शांता पुत्र कोध अति आवा
दोहा कुछु बिहसउ कुछु रिस भरयो नागेसु भाव अपार
चितवत रिस भूली सकल लागत नारि दिदार॥
तदपि जानि अवसर सुघर दीनउतर समुझाय
चितय सदन लखन कुमर बुधि बल निज दास्य

भजन

यह सुनि जनक बधू शिर नाई। ईसउ सत्य कहो रघुनन्द
न सुनि प्रभु जिय नहिं आई॥ हमहू सुनी एक अचरज
की पूँछत करति ढिठाई। सुनी एक तुम्हरी भगिनी प्र-
भु शांता नाम कहाई॥ तिन को कोई कुमारे लै गयो
अङ्क फेरि बुलाई॥ २३॥

श्लोक

बभूव कन्या भगिनी रघोः कुलेसा श्रूयते नाथ तवाभा
न्विता शांता विवाहं च विना गता भुवं वरं वरेण्यं पुन
रागता गृहम्॥३३॥ प्रियानकिं भूप वरस्य वाथ वा कुभा
गीवापि यमातृहीना रूपेरा कश्चित्सुरो सुमोह-
ता मादाय यातः कथयस्व सुप्रियम॥ ३४॥

निशम्य गीतं रघुवंश भूषणो विहस्य नो वाच कथामृ-
ता सवम् शांता सुतो बाल तयाविचित्रं वचः श्रमा-
रां भजगाद सुन्दरम् ॥२५॥

चौपाई

जोन होत यह कुल अति पावन सुरसरिता समानेहुँ पुनि भावन
तुम्हरो दाग लाग को धोतो जोन सखी महि यह कुल होतो
मातु पिता जाने बिन कोई। सुना बिवाह करत नर जोई ॥
होय स्वयंवर को न कहई वैदिकुलु नर प्रीति नलहई
सो बिनि मातु पिता की दीन्ही कन्या सो रघुबंशिन लीन्ही
सुनी जनक महि सो धत पाई अस करि ब्याह कवन जस गाई
रंगिन समान भानुकुल जानी तुम्हहि कीन पावन मन मानी
ऐसेहु कुल हि दोष तुम दीन्हा देखयही सिय कर गहि लीन्हा
दोहा सुनत बचन बोली हसी देखत ही को छोट ।
बिय बोगे बालक बरो हि सज्जनी जर खोट ॥

भजन

सुनु सखि जो न यह कुल होतो। पावन सुरसरिता सम
सुन्दर तुम्हरो दाग को धोतो ॥ मातु पिता बिनि जाने
सिया को पाणि गहो को छोतो। रंगिन तेज इन रघुवं-
शिन को दूजो समान नृप कोतो ॥ शङ्कर मुनी जनक
पाई बिय सो धत महि हा जोतो ॥ २५ ॥

श्लोक

यदि भवेन्नरपो: कुल भूषणो भुवि दिवा कदेवनदी समः
नृपतिरा सुतासरतीगदि भवति को वरयेद्विचक्षणा: ३८

चौपाई

बोली शब्द कहि सुधा सयानी सुनहु सभासिक कुलघु दानी

ईकुमार शृंगी मुनि केरा। सुनहु हाल जानो सब मेरो
रोम पाद मन हृदय बिचारी। बोलि बेश्य न कह्यो हंकारी
शृंगी मुनि तप करत अपारा। गिरत न तपजरि महि कछु धारा
तिन्हहि मोहु लावहु मम राजा। हाव भाव करि तजि तन लाजा
शाप सुगहि गणि कान मन लाई। लय सब साज गई शिर नाई
फल रस अन्न मिठाइन केरे। खात बहुत तन मदन घनेरे
पहुँची जाय जहाँ मुनिराई। उतरी नव तन बनाव बिठाई
पिता गयो जब बन फल काजा। शान चढ़ाय ललित रस बाजा
पहुँची जाय निकट मुनि केरे। नाचत गावत गीत सवेरे ॥
देखत रूप नयन मुनि वाला। रह्यो निहारि भाल तन माला
जिन्हहि न ज्ञान नारि नर केरा। पायो न चीन्ह जदपि बहु हेरा
मुनि जान्यो कोइ मुनि सुत आयो। शास न अघ देत अंत धायो
तब गणिका कन कहि बात बुझाई। अस न चाल हमरे बन भाई
हम काहू को लेन न शासन। अस प्रेरेउ तिय ही व्रत खासन
दोहा। तब शृंगी मुनि शानि फल दीन्हे शादर लाय ॥
कटु कै जानि खाये न तिन इत उत दीन चलाय
शपन मधुर फल दीन जब खाये मूछन लाग।
कहूँ उपजत तब हँसि कह्यो हमरे बन अस बाग ॥
फिरि बोली मुसक्याय कहि हमरे कुल यह चाल।
शृंगि सिखावत मिलत सब गृह बिधि होत निहाल

चौपाई

अस कहि मधुर साल खवाये। बिहँसि भुजन महि कराठ लगाये
चुम्बन करत कपोल मिलाई। मुनिकर पकरि कुचन बिहँसाई
इतना कीनि निज शाश्रम शाई। ज्ञानि मुनी शपिताहि डराई
तबलगु मुनि पितु फल लेइ आये। देखत सुत गत शंति भय पाये

पूछन लाग कहा सुत श्राजू। धोयेनचमस पौत्र नहिं काजू
बैठे कहा मनहु बवराने। हालन कछुक सुनहु हम जाने
मुनिपितु बचन कहन सब लागे आजु पिता हमरी बड़ भागे
कोटि मुनिन सुत श्राये बन मोरे कहत न बनत रूप उन कोरे
चलत होति पद धुनि श्रति नीकी नूपुर रसोलि श्रगुरि बन ही की
बसन श्रमोल सुघर तन सोहे। जटा बिशाल चित्त कामिन मोहे॥
कंचन सेली लालित बधाई। कहि न जाति भृकुटि न कुटिलाई
पंकज नयन श्रवण लगु भाई। कोन जात श्रस रूप सुभाई॥
श्रवण श्रमोल गोल दुति न्यारी। पूछी श्रजब परी तहँ बारी॥
पातमुक्त गुंजन दुग नाई॥ श्रधर लाल राजति श्रुरणाई
दोहा श्रमृत बचन बोलत लालित चपल नयन सुकुमार
श्रस न इहन बन बाल कहुँ तिरछे लसत दिदार॥

चौपाई

जाति न करठ कही सुघराई। श्रति बालइमि माल सुहाई
हृदय कसे टारि न श्रति सोहे। गोल बधे दुइ दुइ फल कोहे॥
जिन्हहि परसि हम श्रति सुख पावा बारबार मुनि हृदय लगावा
श्रावति श्रंग सुगन्ध श्रपारा थिर न रहत जिमि कर हर पारा
तब तेपितु मोहि कछुक न भावा जबते श्रस मुनि श्रंग लगावा
जाब पिता हम गेहि बन श्राज जहँ श्रस मुनि बन फल कर साजू
मुनि बोले मन समुझि मुनीशा जानि हृदय यह चरित यतीशा
चुप चुप हहु न श्रब श्रस कहेऊ। मुनि श्राश्रम तप कोहि न हरेऊ
श्राये इहा छली श्रति पापी। धरि धरि रूप स्वयं नहि जापी
तुम न जाव उन मग छल खानी उदालि श्रम मुनि कुल गुरु ज्ञानी
श्रस कहि इत उत दृढ़ भय ऊ। मिले न तब पुनि फिरि कहुँ गयेऊ
दोहा सुनो फेरि बिलोकि तहँ श्राई सकल विचारि ।

देखिरूपअगललितत हँबोलेमुनिभ्रमदारि ।
जबलगुमम पितुदूत नवन तबलगुमोहिसिखाय
चलहुसुतधरिनावचित्रय नृपढिगदीन्हिलगाय
तिन्हमुन्निते प्रगट्योसखीयहबालकमति ढीठ ।
कहतबचनसुनिमुहिसखीलागत मनःप्रतिसीठ

चौपाई

पिता बैश्यनजाय लुभावा-बेनीदेखिजदाज्ञिन गावा ।
पितानारितर चीन्हिनपावा-कबतेतुमबुधिवत कह्यवा॥
तदपिहमारेपुज्यतुम तुमसोंकहतिनबात ।
करजोरतिद्विजजानिहमजानिनातकरनात

चौपाई

हमलक्षिमनतनःप्रजजनावेजोमुनिहृदयदुसहनहिपावै
सुनियत प्रभुएकबातहमारी-रानीबहुतराजघरवारी ।
करिहैकाहबृद्धनरनारू।दहुजनकघरकछुकपठारू
नीकबस्तुजबःपानखवावै-नागानीकतेबैसबगावै ॥
हमनारिनगतिलघननजानी-बसतीसकलपतिब्रतमानी
दोहा सुनतबचनहरषेलघननागरिढीठमहान ।
बोलेचतुरबिचारिमनकरतसखिनकरमान

भजन

सखीकोईबोलीमधुरमुसक्याय । भाईकोईसत्यक
ही मतिसजनीबालकःधिकरिसाय ॥ है ज्ञाता
सुतदेखिलेवसबमृगीजातिकरःपाय । इनकेपित
हिनारिचलिबनतेलाईमीठखवाय॥ पितानारि
नरजानिनपायोसोतुम काबतलाय । तुमहौपूज्य
कहतिनातुमसोंपतितुम्होरेपाय॥ हमकरतीएक

श्रवन्न लवन सोंजो कीरदयाऊनाय। सुनी बहुत रानी दशरथके गयो नृपशापबुझाय॥ शङ्कर कछुक जनक मन्दिरमें हित कीदेवपठाय॥२५॥

श्लोक

श्रयं शाता पुत्रो न कुरु सखिहासं मृदुतरं मृगी पुत्राज्ञतः कथय यदिवा क्षारघुवरम् श्रयेशस प्राचुर्दशरथ नृपस्यामलतयावरानार्य्यो राज्ञ रघुवर विदेहिस्व मनसा॥२७॥ मुदाबृद्धस्यालेमदन वरदेहामल सुखं सदा पूज्योऽस्माभिर्मदन शर विद्धाच्छुभतर तदा ताभिः कश्चिन्नृपतिजनकः सौख्य मतुलं सदा यास्यत्या शुस्व समबलदाय प्रवयसा॥२८॥

चौपाई

योगी रानी कहा लै करिहैं। मिलि नारिन कैसे निस्तरिहैं जो कोइ होय वहाँ बर नारी। लेत जाय सँग श्रवध विहारी जो गुण ज्ञान नारि कुप्रिय लागे। हृदय मनोज व्यथा नित जागे योगी रहत विषय रस हीना। नारिन कंत संयोग कभीना सन्यासी ढिग बसत उदासी। सभा जनक जहँ ज्ञान प्रकासी नाक छुवहाँ जगत व्यवहारा। लोक रीति नहिं सुयश प्रचारा इन्द्री देह न भान मिताई। कहु तुह नारि करहि का जाई दोहा समदरसी मुनि जनक कह धोखेहु नारि न जाय
नारि नारि के संग बसि किमि लहै सुखसमुदाय

चौपाई

हम सखि सुनी भूपशति ज्ञानी ब्रह्मानन्द रहति मति सानी जानत नारि भेद कछु नाहीं। जाति न सिखवायन श्रस मति काहीं निसु दिन परमहंस तहँ जावै। श्रातम ज्ञान विचार सुनावै

जो कहुँ होति भेद मति प्यारी ज्ञान सुता कस करत घरारी
हमैं उदय यह कछु नाहीं। असबिचारि देखो मन माहीं
ज्ञातमज्ञान पाय दृढ़ तरिहैं नाउहारही एही तप करिहैं
बातन ज्ञान इहां कछु जारी बसत समाज दिगंबर धारी
सन्यासिन की लगी समाजा तहं कहं इह नारिन का काजा
दोहा बायु रोधि षट चक्र सब बेधि कुंडलिनी नाल
प्राणायाम रहत नृपति करिहैं कहा तहँ बाल
भजन
योगी रानी कहा लै करिहैं। लषन कही मुसक्याय सखिन सों हैं ऊ की हमरे संग चलिहैं॥ पढ़ि ज्ञातमन्त्र ज्ञान यति न सोते नारिन कैसे निस्तरिहैं। हमैं उदय यह नाहीं कछु नाउहारही एही तप करिहैं॥ शङ्कर तुम चाहौ तो चलो सब श्री शंखधे शंखबल सबभरिहैं॥३६।
श्लोक
ज्ञातमज्ञानविसारदोहि जनको योगाधिपः किंनृपो
नारी शास्त्रधनः करिष्यतिवरं नादेयमग्रे प्रिये
नो तत्र स्वपुरे विदेहनगरे स्थास्यंति योगान्विताः
कश्चिद्दस्तुमम स्वधाधरधरो श्रुत्वा गता विस्मयम्॥३६।
चौपाई
सुनि एक चतुर लषन चतुराई घूंघुट खोलि निकट तहं आई
बेंदी भाल सिंदूर लगाई। कहि न जाति मुख सुन्दरताई
झुमकन झूमकि झिकोर लगाई बेनी सुघर पीठ पर आई
सब नारिन हँसि सान चलाई लषन नागरिहं सिखि बात सुनाई
हाव भाव करि हंस दरसाये गाम खोलि दृग भृकुटि लगाये
पूछो चहति बात एक थोरी सिखन कबहुं सुनि चुप मोरी

लक्ष्मन नृपदशरथको की न्ही कामप्रबलतासहिहमलीन्ही
पैसबजगतप्रधानबखानी।जेहिबिधिभोगकरतनिजानी
तुम्हरेनगरभवनमुनिआये।पूजिसबनृपभवनबसाये
दोहा भवनबसेरानिनलखेगेमुनिरूपलुभाय ।
रानिनको अपनीसुनीबासिकियोधीरखवाय
चौपाई
उनकीजतन भयेसब भाई।यहकसिकथाकहेसमझाई
ऐसिप्रबलताहमसबजानी अस तुम्हरीसबकथाबखानी
अससुनिज्ञानसखीमुसक्यानी।रानिनकीनिभलीहमजानी
बसनअसनधनरूपलुगाई।निकटजननसबजातिलुभाई
ऊँचनीचमनकछुनाबिचारा।बिषयनारिकहँश्रधकपियारा
सुतनकाजभलकीन्ह छुपाई।रानिनकीसखी यहचतुराई
बृद्धनृपतिकेहिबिधिसुतहोते जोनमुनिहुरानिनहिगसोते
पतिकीओटसबैछिपजाई।जियतपतिहिसबसतीहेकहाई
रीतियहीराजनघरमाही।जातिबिचारसखीकछुनाही
तुम्हहिअचभवलागत भाई।देखिजननकघरचालसुभाई
राजालतानारितृनजारी जेहिढिगलपटिजातिसुकुमारी
दोहा यहनहाँसहमलखनकछुकहतिनबातबनाय
जबघरजाबकृपालतबमातनपूछबजाय।
सोरानिनकछुदोषनहिराजनघरअसरीति ।।
नृपओरनकीनारितन उनघरओरन प्रीति ॥
कोइकोइराजनकेभवनसुन्दरनारिसुभाय।
होनिपतिब्रतजिमिजनकभवनधरमदरसाय
ऐसीप्रबलाहम सुनीतुम्हरेनृपकीलाल।
तुमजानतनहिनारिगुनकरमचतुरनहिचाल

जेतनी नारि महीप घरतीं सब हृदय विचारी ।
करतीं प्रीति छिपाय घर पुरुषन निज़र चुहारी
भजन

नागरि वैदेही ढिग एक आय। राज कुमार बिशाल जहँ तहँ दियो पान लगाय ॥ नाथ पूछो चहति प्रभुक छु सुनो कान लगाय। सुनो तुम्हरो नगर कोइ मुनि भूप लीन बुलाय ॥ बसे तुम्हरो भवन सुनियत महा आदर पाय। देखि रानिन के सुघरतन मुनिहु गये लुभाय ॥ मुनिन की न्हो आपनी बस मधुर बोल खवाय। सुनी उनही की जतन तुम भयेई सब भाय ॥ कैसिया सब कथा लक्षिमन सांचे देव बताय। बिहँसि बोली एक नागरि मधुर अति मुसक्याय ॥ बसन असन सुबदन धन सो नागरि बसहो बजाय। भली भार्या कीन रानिन जतन सुतन उपाय ॥ कैसेई सुत होन सजनी नृपति गयो बुढ़ाय ॥ एही रीति प्रचार राजन भवन भवन देखाय। तुम्हहिं सुनत अचंभ लागत देखि जनक घराय ॥ देखि अपने भूप की महाराज लाज लजाय ॥ और रानिन के सकल दुःसुने दीख सुभाय। तुम हमारे पुन्य लक्षि मन कहत हम सकुचाय ॥ टसन फाक करतीं हम जाय पूछब माय २७

श्लोक

आहूता मुनयोनृपेन्द्र भवने राज्ञातथो घुर्मुदा कौशिल्या मयणचेतागुणावती रूपान्विता मानदाम् दृष्ट्वा तेमधुपायसेन वचनैर्बस्यात्व माचक्रिरे तेभ्योवै भवतांवभूवसुखद सज्जन्म सर्वा व्रतम् ४१ राज्ञीभिः सकलैकृते शुभतरैकाचित्सरीता सखीनोचे हृद्धतस्य

पुत्रजननस्याद्यहिराज्ञः कथम् राज्ञा मैव भवने गृहे शु
भतरेवार्तेयमा श्रूयतेदृष्ट्वा श्रीजनकालयस्थ सकल
मेनेचधर्मवृतम् ४· कुलकम् ॥ ४१

चौपाई

असमुनि पुनिरिपुदवनहिठाढ़ी परमिनारितनबचन सुनाढ़ी
सुनहुनागितुमसबविधिज्ञानी खोटोखरोरूपलखिवभानी
जोसुतहोतसोपितुगुणधारी यहप्रसगजानतनरनारी
हमसबभायपितागुणपाये राजनगुणसबहृदयटिकाये
हमरीभूल सुनहुयहनारी यहप्रसगहमसकलविचारी
सुनेरहेयोगीकोइआये । तुम्हरेपुरविदेहबिलमाये ॥
कोईदिगम्बरतनअबधूता जिननकियोकहुनारिधरूता
जिनकहुनारिरूपनहिदेखा हमरेजियअसलेखा
सगतकरतइहाकोजाने । रानिहिदेखिकरीपहिचाने
बलीकामगतिजातिनजानी जेहिशिवकाबसकीनअयानी
कहुयोगीकाभयोप्रसगू । फहुरानिहसोयोगभयोभगू
याहितेजनकभयेअतिज्ञानी अगतमज्ञानयातिनसमजानी
दोहा राजनउरअसज्ञानकहुसुनासबविनिमिथिलेश
साचोयहसबिदेखुलखिवकुमप्रगटएहिदेश
असउत्तरशत्रुघ्नजबदीन्ही हसेकुमार । ॰ ।
भोरसखीसुनिबयनतबअतिनिकटउदार ॥

भजन

शत्रुदमनअसबचनकहोरी। रहोचुपायकहीबहुतक
तुमकथाबृथानागरिबुधिथोरी । हमहोतेकहुमुनि
नतनयसबिकछुतनहोतिमुनिनचिन्हरी ॥ ज-
नकभवनअतयोगीबहुतिनसोसगभयोकहुचोरी

शङ्कर नृपज्ञानी याही सो कहि कहि बचन करे को होरी ॥२८॥

श्लोक

शत्रुघ्नः कथयामास कथां हासानुरूपिणीम् पितुर्गुणा भवत्पालि कथयति मनीषिणा :।४२॥

चौपाई

मृदु मुसक्याय सानंद सार्इ॰ पनी सुपला प्रगट जनार्इ
भीतर बसन ब्योम सम राखा ऊपर स्वच्छ बचन यह भाखा
भूषन देखहु लालहमारे। सहित उरोज कछुक दुति न्यारे
खन खन सुनि धुनि पुनि सबहीं बैठी बिहसि राम चित तीरे
बिथे बार कार मुख ग्राये। ग्रावत छूटन फेरि बधाये ॥
कुछु भुजगल कुछु पीठ सुहाये कछुक उरोजन इत उत छाये
तेहि भुजउलटि बिहसि कसि बाँधे सम्बाडंबर तन काँधे
चितवत राम सोग्रधिक लजाने यह धौं काहु कहे भय माने
देखि दिढाई॰ अनुज सब भये चकित सब गात
कहै कवन यह हाल सखि॰ प्रगट उर भीति न जात

चौपाई

तिरछे चितव ग्रान सो बोली रहहु रहहु जानहु कह भोली
ग्रबुध कौसब कुशल भलाई जानहि ग्रवधहि टसरार्इ ॥
कहत कसब कहि हौं सखि गाई ईकुल की सब चालु भुलाई
रघुबंशिन कुल॰ स सब स्वाता कर त सुमार पार नहि पाता
ईजी कछिउ करन यह दोषा सुनत तनु मुहि सखि भयो कुछु मोषा
ग्रनहीनी एक सुनि सकुचानी दिवोदास एक भूप बरवानी
तिन की नारि गुर्भ्हि पति कीन्हा रूप ग्रापि निज गुरु कहँ दीन्हा
तिन ते ग्रहम पुत्र भयो ज्ञानी निकट रहे रघुकुल॰ अनुमानी

सखि भेद समय दीपहमारा यह भयो रघुबंशिन व्योहारा
नारिन के उत पात न जानै नारि कृति पति नेहि मन मानै
गौतम नारि इन्द्र पति कीन्हा तुलसी नाहु सो नहि चित दीन्हा
दोहा देखहु नारि सुभाव सखि मैं सब देउ लखाय ॥
कहत बाल पितु परत सिर शुचि साची सब गाय

चौपाई

उदय बदरि कथा तजि देऊ। ईपूछैं मातै निज भेऊ ॥
नृप गोरे गोरी सब रानी। गौर श्याम सुत का पहिचानी
दुइ सुत चपल शांत दुइ भाई। याकै सी शत्रुघ्न बताई ॥
बात बड़े न की कहत न कोई। नृपति न बंश देखो योइ सोई
हम जानत यस कथा पुरानी। परो प्रसंग कही तब बानी
दोहा शम्भु कपाली नगिन तन चिता भस्म सरि वदेखु
प्रेत संग बिहरत तदपि जगत पूज्य शस लेखु।
परशुराम नृप मातु कर काट्यो शीश महान
वामन करि छल नृपति तन गावत तदपि प्रधान
यस कहि मुसक्यानी सकल निज तन देख बुलाल
काहि परेउ बाल प्रभु यह कस कहहु हवाल

चौपाई

सुनि लक्ष्मन पुनि गुनि मुसक्याने गुरुपति कीन्ह मन माने
एक यनु मान होति जिय मोरे सब भाई बानी सुन तोरे ॥
निमि दय शाप गुरु हि हरि मारा हतो कछु का निन व्यभिचारा
यह बड़ पाप निमि हु सरिव कीन्हा दय यस शाप यश मिहि लीन्हा
सुनि सुनि गुनि मन को हस कुचानी ढीठ जानि लक्ष्मन हि चुपानी

भजन

सब सखि ज्ञान दे ई बातैं। नयन नचाय कहो एक नागरि

अब पूछौ कुशलातैं ॥ कहत कि सब कै होएहि कुल
की रघुकुल एसोइ बातैं । अनहोनी सुनि एक सखी
हम कहिन सकति सकुचातैं ॥ दिवोदास नृपगनि
सरवीरी गुरु सो कियो पतिन्हातैं । गुरु ते भयो अश्म सु-
त सुन्दर ललित मनोहर गातैं ॥ ईकुमार जानत क-
छु नाहीं नारिन के उतपातैं । दूरि कथा सखि जानस-
कल देउ ई पूछौं निज मातैं ॥ नृप गौरे गोरी रानी सब दुइ
सुत श्याम कहातैं । नहिं कोइ बात बड़ेन की चालत
देखी ऋषिन की जातैं ॥ शङ्कर चिंतय चिंतय रघुव
सो कही कथा मुसक्यातैं ॥२६॥

श्लोक

वार्तेयं कुरुमा भजस्य भवनं तां बूहि बालव्रतेकोश-
ल्यं रघुवंशजस्य सकलो त्वं प्रच्छ पातिव्रतम् स्वस्यां
गस्य नृपस्य सर्वमनिशं वृत्तं कुलस्येदृशम् पार्यास्य-
स्मिन्बबालबचसा नानाविधाहास्यदा ॥४५॥ दिवो-
दासो राजा यएष सखिकुले सर्वसुखदेवभूवस्वानंदः
सकलसुखदातुश्चनृपतेः सुतेनारी श्यामा पति
मनसरूपा गुणनिधेर्गुणैश्चकेतस्माद्भवदमलस्या-
श्मतनयः ॥४५॥ बालाः सर्वे नजानंतिनारीणांमन-
चेष्टितम् नारी सुचरितं लोके बिद्वांसोबिबिदुर्नहि ॥४६॥
राज्ञः श्यामा नवैश्या सो राजादशरथः सखि कुतो
वभवतुः श्यामौ गौरौ श्यामतरावुभौ ॥४७॥ तेजीय-
सानदोषाय शिवंयस्य कपालिनम् ऋषीणांज-
न्मचोपेन्द्रराक्षसकुलापहम् ॥४८॥

दोहा कुंतीसुत सुनिहरषि अति चितय द्रौपदी ओर

फिरि पूछन लागे मुनिहि कथा जनक पुर सोर ॥
जेहि बिधि कीन्ह हास रस मिलि मिथिला पुर नारि
कहहु सकल मुनि करि कृपा हरषि नरमुनि सुख कारि
मुनि मुनि बचन नरेश के अति हरषे मन लाय ।
कहन लगे चित लाय सब कथा प्रसंग बनाय ॥
जबन बचन नागरि दियो शरमानी तेहि ज्ञानि
ज्ञान चतुर अति ढीठ पुनि कर बैठि हरषानि ॥

चौपाई

बोलि उठी तब वह बिहँसाई । अस तुम सरिबन कहौ बलि जाई
अस अवसर फिरि सखि कब होई । तब बचन कहत कछु गोई
जो न होति सीता सुकुमारी । इन के होत दास कहँ नारी ॥
धनि मिथिलेश नृपति सरि मोरे । जिन की जतन भूप अस जोरे
हम हू बड़ भागिनि जिय जाना । कीन्ह कछुक तप पूर्व महाना
जिन नयनन हम अस सुख पावा । मिले राम यश श्रुति जेहि गावा
ईषु कुमार मार दुति लाजै । नयन बिशाल लाल अति भ्राजै
देख बदन सकल बदन सु घराई । को न नारि सरि जाय सुभाई
हौं हा बोलत मृदुल रसीले । सखि बचन ललित अभिलाषे
एहि मिसि बोलत सखि कुमार रूप राशि के धाम ॥

चौपाई

एहि अवसर सखि जो न बतानी । कहि सिन सुधा चतुर कछु बानी
सो फिरि जब जेहि रघुराई । शिर धुनि धुनि गृह निज पछताई
हम बिधि हरि हर हृदय मनावैं । जनम जनम अस गति अस पावैं
हम भई कहब जबन मन भाई । कर बन रिस मुनि गुनि घराई
मुनि रघुबीर भक्ति रस बानी । बोले कृपा सिंधु लखि कानी
सखि तुम सकल सयानि सलोनी । बानी कहति अजब रस होनी

नारिबचन सुन्दर अस कहई। चतुर सुनत अति सुखरु वलहई
जोन नारि कछु कौसल माना। लागत नीकन काज बिताना
दोहा तुम्हरे वचन विशाल सुनि हमरे जिय आनन्द।
ई बालक जानत न कछु एतन हम सब सन्द॥

चौपाई

अस रुख पाय चतुर मुसक्यानी। छूटि गई भय अति हरषानी
जिमि सरिव कहँ नृप कछु बोलौ। कवन दोष रघुकुल कहि देवौ
त्यहि दरपि दृग सान लगाई। लागी कहन जवन जिय आई।
प्रथम हि नारि सुभाव देखावा। रुज बन नयन की सान चलावा
एहँ भरी तन अति जमुहानी। हाव भाव करि चतुर सयानी
अगल चक बहुत कसुकुमारी। बसन सकल सँग बैठि सिधारी
एक कर पान मान करि दीन्हा। भुज बल लागि पलँग तन कीन्हा
कसत बसन पद कर कटि नीके। भाव राम जाने सब जी के
नागरि चिज उरोज पट ताने। अर्द्धनि कट भाव भर माने
दोहा। क्षण उरोज चितवति सुधर छण रघुबर की ओर
खजरीटसे चलत दृग चपल नारि की कोर॥

चौपाई

पूँछि कुशल कहि अति सुघराई। कहि नागिन तन प्रगट जनाई
तुम सरिव कह तिन कहौ हँसोली। सब बातैं लाय कछु मोली
एहि कुल की सब कहि बैलाय क। सुनहु कथा सुन्दर रघुनाय क
तुम्हरे कुल मुचकुन्द नरेशा। भयो प्रताप पुञ्ज अवधेशा
पचाशत भगिनी तिन केरी। सौभरि कह पति कियो सबेरी
अति जरजर तन सुन्दर नाहीं। कह देखि वे लौ भी मन माहीं
पृथक न इन्हैं मिलै बा नीके। कवन मनोरथ पाये जी के॥
की दायज न हार घुराई। की मुनि छलि लय गये लिवाई

दोहा तुम्हरे कुल रघुवंश मणि सीतल सहज सुभाय
कानिन कछु देखी सुनी नारि सोहि सँग जाय
रघुकुल की सगरी सुतन मन भाने पति कीन
को जानै निज पतिन के रही नरही आधीन॥
असलक्षिमन योगिन कियो तुम्हरो कुल वस भोग
हमरी कुल की तुम कहत भयो कहूँ यह योग

भजन

कहूँ सबि कहो सब कहे बनायक। एहि कुल की सब कथा अचंभित हैं सुनि हसबे दायक॥ कहुसुचु कुन्द भयो एहि कुल मे बली महा बल पायक। तिन के सुत हतो पचाशत तिन सौ भरि कियो नायक॥ तिन्हहूँ न मिले पृथक भतल पति शङ्कर ऐसो बर पाय कै॥३०॥

दोहा. सुनि नागरि कर वचन अस बोले लवन कुमार
तुम नागरि पुर चतुर अति देहु कहत दिदार॥

चौपाई

कित तुम बैठि बात अस सीखी कहति वदन पण्डित सम लेखी
पूरब ही जानी चतुराई। सँग मुनी अस मिथिला पुर आई॥
कहूँ बिदेह नृप की ठकुराई कस न नारि वस जाय लुभाई॥
जो कहुँ होत न पति रघुवंशी नारि सुभाव कुभाव विध्वंसी
तौ नहोत नागरि पुढीढी करत न वचन विचारि बसीढी
तुम हू हृदय अस चतुर विचारो अपने हृ मन कस सिहारो
पुरवासी मुनि लीन मिलाई श्री मिथिलेश राजि सेवकाई
रक बरात बुलाय सयानी दायज एक देहु मन मानी
सुता चारि नृप ब्याहि समानी श्री अवधेश सूध अति जानी
तुम कर्बनेश अति भई उदारा। चतुर ढीढी तुम दारा॥

दोहा छत्रकरिधनुषदुएयधरमुनि पदसेदमिलाय
दई सुतासगरी चतुर बातै कहहुबनाय ॥
सुनहुउदारीसकलतुमरघुवंशिनवि तलाय
भये बलीरघुपतिचतुरद्विजसाधुनसुखदाय
कौत्सगएकआयोनगरद्विजपाठिवेदअपार।
गुरुहिदेनधनकह्योअति चौदासूरशुमार
आयोअवधनपीगुणीदेखदुखुकहेआय
सबसुदीन्हेबैठिनृपसरयूतटकुशलाद।
मृगामयकरकउवायनृपद्विजाहिधनदीन
आदरकरिबैठायतब पूछीकुशलप्रबीन ॥
कह्योसकलमुनिभूपतबधनुपतिवरिएभय
बरषिदियोसुबरणरूपतिदै संगदीनलदाय
तिन्हहिकृपिणातुमकहतिश्रुतिनिजनृपकहतिउदार
कैसेजानेजाहिकहु बिनिपुराणबिस्तार ॥

श्लोक

मुचुकुन्दस्यपंचासद्भगिन्यो नृप भूषणाः बभ्रुवुःसौ
भरिंचकुःपतिंवृद्धतरंमुनिम् ॥५०॥ तासांनपतयोलो-
केचान्यरूपंविचक्षणाः प्राप्ताः श्रुत्वासुरेन्द्रा माः
प्राप्तमाश्वर्य्यमुत्तमम् ॥५१॥

भजन

तबलोमशमनमनयुगतिबनाई। सुधेनृपविदेहपा-
लकपुरकमनकरीअसहासगढिठाई ॥जोकछुहोत
वीररघुकुलनृपभूलिजातिसबचतुरचवाई। घरवि-
लमायदईदायजाकछुव्याहिसुतासगचारिलगाई॥ य-
हसुनहुउदारजानतनृपकोहकरीमनसमुझिचुपाई॥३१॥

श्लोक

विदेहोन जानातिकश्चित्क्षती शो ऽप तस्याः स्त्रियो
मैथिलेचप्रगल्भाः धनंराघवो व्यत्र राज्ये यदिस्यान्न
स्वल्पसुता वाददद्राजसिंहः ॥५२॥

दोहा सुनिलक्ष्मिनकरबचनप्रसकोइएकचतुरसयानि
नागरिनाईनिकटचलि सुन्दररूपमहानि ॥९॥

चौपाई

बेनी पानगुहेशिर भारी । लागी भ्रूम पीठरतनारी ॥
गुजमोतीगुहिछरनबनाई-एंडिनजनुगुंजनछबिछाई
लगीकसीकसनिसुघराई।जरदलालमिलितनिनबँधाई
पीठिकसनिराजतिछबिन्यारी ओढ़े झीनलसनिअंगसारी
बेनीनागिन सीसिकचारी-रेशमरसनिकसनिमनुहारी
शिरबाँधे भ्रूमरिरतनारी-तहँलालीछबिमाँगसवारी
पाटीगूँधे भालपरछाई। गूँधे फूलमालतिन सुहाई ॥
बेंदीभालरबरिछबिबेना-सेंदुरबिन्दु भयेबसिकेना
भृकुटीकुटिलधनुवजनुभारी बिनिरोदाजनुबधिकसवारी
कटियौंशरबेंदि याअतिसोहै बिचबिचरतन भूमरनपोहै
ढगकरणतहँफूलसुहाये।झुमकनझुकिकुण्डलनहँराये
दोहा बारीन्यारीपातयुत श्रवणालचनि सुकुमार ।
झलककपोलनरतन छबिराजतललितसिंगार

चौपाई

सुतरबदनलाचीमुखन्यारी-लालीपानअधरछबिकारी
दुंगुरझाड़भृकुटिदोउबीचा-राजतछबिकपोलरससींचा
सुकनासाशशिबदनसलोना-नासाबेधमदनजनुटोना
हेमरतनतहँसीकसुहाई।जनुपकजगुंजनछबिछाई

नासा भरणा रचित कुलफारी लटकन झलकहलक छबि न्यारी
बाँके नयन कारुत नारे। काजर कोर रसिक अरुणारे ॥
खितपत जनु कवधा उजियारी चमकि जाति बिजुली जनु तारी
देखत कमल मृगी दृगलाजै खंजन चपल अनंग बिराजै
चिबुक कपोल गाड़ हँसि पाही ग्रीवन मन मन मज्जा कही
त्रियमुख शशि प्रभु नयन चकोरा निरखत अनुज सहित त्रिय भोरा
कर पगुरी हँसि अधर लगाई। जनु शशि रवि मत राहु भखाई
सुदरि न रत नरही छबि छाई। शशि कलंक जनु रजब सुहाई
मेहदी बूंद छलागि देवाई। रंजित नख बन सुधा अरुणाई
छापे ललित मुदरी घुघुआरी कर पहुंची निगुरी बिहारी
दोहा हाथ जड़ित हथ फूल बाबगली परी पनारि।
रतन जटित ककना चुरी दाड़िव का मन हारि ॥

चौपाई

पट्टी पंत्र भुजन देउ सोही। तैंतबारि राजति गुरा पोही
बाँगी भुज भुज गोल ललाई। बाँह भरी सुख गोरि सुटाई।
सती गुंज गोप छबि न्यारी बंदी अमल पचलरी भारी
चन्द्रहार दुलरी अति नीकी। मणि नग हमेल केलि पति जी की
कंठसिरी रस मगल सेली। बैठि सची जनु सुधर सकेली
बाँगी जरद लाल रत नारी। काढ़ि न गुरोजन बदन सँवारी
बाँगड़ोल तरवन रवन झनकारी। जनु सुरतरु द्रुम परणा बयारी
नाभि गभीर उदर चिकनाई। पातरि कटि त्रिबली छबि छाई
नीवी कसनि नाभि पर न्यारी सारनि बसन घुमारणि भारी
रेशम जड़ित नीवि मुकतारी झब्बन झमकरमक रसकारी
दोहा चुनी चुनारी भावरी गोटन लही लदाव।
गुरवर लचक झिकारपट ऊरुन बनी छपाव ॥

चौपाई

रंभोरू सुन्दर शति नारी। देखत कोन होत मन हारी ॥
गुलुफ सरुग मनुइन्द्र वधूटी कइन छान झाझन मन लूटी
नूपुर पायल गूजरि न्यारी शुभ पद्म पान वरण छवि कारी
घुघुरू पद पोरिवन सुघराई लाल शंगूरिन नखन सुहाई
एड़ि न शरुण महाउरराजे बैठी निकट शय तजि लाजे
रोमालि बदन भुकि नयन देखाये फेरि वदन पट शोट छपाये
वैदिलचक मुख कारि धनीचे चितयहीं सकुचनि दृगमीचे
सब नारिन मिलि प्रभुहि जनावा नाथ चहति कछु वधू सुनावा
शय सुहोय सकुचि कछु कहई प्रभु भय मानि चुप होय रहई
दोहा मुनि विहसे राजिव नयन बोले शति हरषाय ॥
कहय वधू तुम सब वचन जो कछु गऊ भुलाय।
तुम न लजराना मानो कछु कहि तुम दीन जनाय
कहत कथा सब कहि हो वचन नारिन के समुदाय
चौपाई
तब बोली घूघुट धरि शोटा घूघुट गहे शगूरिन पोटा ॥
भिल मिलान लोचन शति भासी सारी बीच मीन जनु वासी
तरल तरीना चमक सुहाई जनु रवि बिम्ब झलक छवि छाई
हम कछु शज करत शिरनाई गिरिन कहु वह मम पर घुराई
हमरे नृपति बरात बुलाई एक दाय जो संग चालि लगाई
तदपि नाथ शपनी सम जानी दीन्ही व्याहि सुता नृप ज्ञानी
देश देश भूपन सब जाना दूत धनुष सब लोक बखाना
शवत मग बरात जग जानी दूत मग न बच्यो कहु प्रानी
गज रथ तुरग पुरुष पुर शये हम हू नाथ दास शस पाये ॥
हम हि दास कस होत गुसाई जो न जनक शस करत बड़ाई

राजु भई पावन मोहि भूपा॰ राये तुम सम सुधा अनूपा
दोहा॰ तदपि लोक की रीति अस भूप सभा दीखि बिचारि
अपन रूप सुन्दर समुझि बिहसत ज्ञान निहारि
अपने दोष निरखत नर राय सुपि बेलु शकारे।
अवरेन कारसरूप सहज देखन देत बिचारि

चौपाई

रघुबंशी जब कहत कहानी॰ ब्याहन की तब सुनि जिय ज्ञानी
कबहुन कुल सम ममता जिय मानी॰ सुता न दीनि दहेज न पानी
कबहुन सुनी नाथ यह बोली॰ नृप कुमार आये चढ़ि डोली
अंध ब्यवन जरजर बर माना॰ दय सरजाति मन कुल जाना
ऐसेउ बरहि मातु पितु देई। जो पैंदहुज सब कछु लेई।
एक बिवाह उरन अस कीन्हा॰ रोम पाद कृत हरिहि मिसि दीन्हा
ज्ञानि सुता नृप रोस बिरानी॰ ध्रुगी सुनिहि दीन्ह जिय मानी
दोहा॰ पुनहूं काटो काम निज दय कुरूप बर पाय ॥२॥
तदपि हमहि रघुनाथ प्रभु लोभी कहत बनाय
औरहु सुनहु बिवाह प्रभु जोहि बिधि भये बिचारि
कहब सकल सुनि नाथ यह बानी कहब सभारि

चौपाई

सौभरि एक सुने हहु ज्ञानी॰ मत्स्य मगन रिव वृधि बैरागी
ऐसेहु बर कहु मिलन थोरा॰ तिनहूं को रघुकुल नहि होरा
हमरे भूप नहस मुनि माने॰ नागा नीच सकल पहिचाने।
अति कुरूप जल जन्तु बिषयानी॰ ताहि पचास सुता दइ ज्ञानी
नाम केतु की मातु कुमारी॰ जायो कुमर कुमारे नारी।
यह दायज तुम्हरो हम जाना॰ मैं अपने घर सुना पुराना
सुनि अस बचन युगुति रस साने॰ नागनि चतुर लेन मन माने

सबमकुचेरघुबरमुसक्याने॰नागरिकुलकलंकसबजाने
कछुदूफिरिनउत्तरकछुआवा॰भरतचतुरकछुबचनसुनावा
दोहा॰कछुमुदैकछुमुसभरेकछुरूवेकछुसूर ।
मृदुलबिहँसिबोलेललितबाणीसुधासहूर ।।

भजन

घूँघटशोदबिहँसिएकबोली। तुम्हरेहारकबोनसुनी
प्रभुनृपचढ़िआयोडोली ।। कबहुनब्याहभयोरंजन
कुलादयदायजकुलतोली । अधव्यवनेकोबिन
दायजएकएकअंगीलरिवभोली ।। सौभरिशतिजा
जाकोदीन्हीबहुतकरूपशमोली। रघुबंशिनकीहू
मसबजानतिऐसीकथाहँसोली ।। शङ्कनकह्योराम
लक्ष्मिमनतनशैरकैहौरवाली ॥२२॥

श्लोक

बराययोग्यायकुलब्रतायस्वबंशतुल्यायकदापिरा
घवाः ददुःकुमारीःप्रतिपाद्यनोत्सबंजानामिराजे
न्कुलोद्भवब्रतम् ।।५२।। यानमारुहा घुष्मांक
कुलेनाद्यापिभूपति॰कश्चिद्विवाहायधनी भुतेमुनि
सुरवादले॥५४॥च्यवनायददौयैकांवृद्धायब्रह्मचारिणो
शंगिरोचविरक्तायधनागावर्जितायवै॥५५ददौसोभर्त्य
कांचित्कांचित्स्वच्छन्दचारिणी ईदृशीसमबस्थातेत
थापिकुरुवेबलम्॥५६॥श्रुत्वलोक्यकुलंरघुबंशजो
कथयसिप्रबलेजनकेरूपम् कृपिणामत्रकुलेनभवा
दृशामुनिभिरीड्यतेश्रुतिगोचराः॥५७॥

चौपाई

सुनहुसखीसबमनचितलाई।हमरेकुलब्रतकठिनदेरवाई

जोनर जोमन ग़ास लगाई फिरिनजातहमरेकुल ग़ाई ।
तनुधन बाम सुतासुत ग्रामा लहत ग़वध पुर पूरण कामा
कहतकहम सब कहिसमुझाई अम्बरीष गति श्रुतिमुनिगाई
भये भगीरथ त्रिभुवनजाना जेहि प्रताप सब जगत पुराना
रघुजोकौत्स मुनिहि धनदीन्हा घरनग्रानि धनपति यश कीन्हा
सगर प्रतापबिदित जग भारी सागर खोदे ग़मित किये वारी
धुन्धु मार यश सबजगजाना मार्यो धुन्धु दैत्य बलवाना
दोहा बली बिदित रघुवंश मणि इन्द्र हिदई सहाय ।
नृगदानी त्रिभुवन बिदित लोभी तिन्हहिं बताय
तुम ग़बला जानतिनही रघुबंशिन कुलरीति ।
जिनजान्यो भूपन सुतन तिन किय रघुकुलप्रीति

चौपाई

तदपि सुनो गरीब ममबानी लोभी तुम कुल कहतिबखानी
तदपि बिनारघुकुलसुनु नारी ज़नक व्यथा नृप कहुन निवारी
सब नृपहारिगये तजिग़सा। धनुयज्ञ दृढ़ प्रगट इतिहासा
सबराजन की सुता बिचारी करती प्रीति यही कुल सारी
जेहिपद चरम चरम महिजानी रीति यही सब लोक बखानी
रविकुल यहपावन जगगीता जानिप्रीति कीन्ही मनसीता
सब यहमर्म ज्ञानकीजाना तातेरघुबंशी मन माना
तुम्हरेदेश नारि केचेरे। पुरुष सकल देखे दृगहेरे ।।
परिहतहूहू भक्त नकोई शक्ति उपाशक सबजोइसोई
यहकारणको जानतनाहीं सीताजानि रामप्रभुग्याहीं
दोहा सुनत भरतके ग़सबचन ग़रथ भरे गंभीर ।
समुझिचूप साधी सबन उपजीलाज ग़रीर ।।
प्रभुजानो नारीसकल सुनि ग़स गईलजाय

सबसकुचे रघुबर मुसक्याने। नगरि कुलकलंक सब जाने
कादु दूफिरि नुउतर कछु आवा। भरत चतुर कछु बचन सुनावा
दोहा॰ कुछु मुदे कुछु सभरे कुछु रूवे कुछु सूर।
मृदुल बिहँसि बोले ललित वाणी सुधा सहूर॥

भजन

घँघुट ओट बिहँसि एक बोली। तुम्हरे हार कबो न सुनी
प्रभु नृप चढ़िआयो डोली॥ कबहु न ब्याह भयो एजन
कुल दय दायज कुल तोली। अंधे व्यवने को बिन
दायज एक एक मैं गीलरि भोली॥ सौ भरि अति जर
जर को दीन्ही बहुत कछु मोली। रघुबंशिन की ह
म सब जानति ऐसी कथा हँ सोली॥ शङ्कन कह्यो राम
लक्ष्मन तन ओर कहे हो रवाली॥३२॥

श्लोक

वराय योग्याय कुलव्रताय स्वबंश तुल्याय कदापि रा-
घवाः दद्युः कुमारीः प्रति पाल्यनोत्सवं जानामि राजे-
न्द्र कुलोद्भवं व्रतम्॥५२॥ यान माहुः हा युष्माकं-
कुलेनाद्यापि भूपति। कश्चिद्विवाह्यधनी श्रुते मुनि
सुरवादले॥५४॥ च्यवनायददौ वै कांवृद्धायब्रह्मचारिणे
शृंगिणोचविरक्तायधनागावर्जितायवै॥५५ददौ सौभर्य
काचित्काचित्स्वच्छन्दचारिणी ईदृशी समवस्थातेत-
थापिकुरुये बलम्॥५६॥ज्ञानवलोक्य कुलं रघुबंशजं
कथयसि प्रबलेजनके रपम् कृपिणा मच कुलेन भवा
दृशा मुनिभिरीड्यनरे श्रुतिगोचराः॥५७॥

चौपाई

सुनहु सखी सब मनचित लाई। हमरे कुलव्रत कठिन देखाई

जोना जोमन ग़ाम लगाई फिरि न जात हमरे कुल ग़ाई ।
तन धन बाम सुता सुत ग्रामा लहत ग़वध पुर पूरण कामा
कहत कहम सब कीहि सम मुक्ताई ग्रम बरीष गति श्रुति मुनि गाई
भये भगीरथ त्रि भुवन जाना जेहि प्रताप सब प्रगट पुराना
रघुजो कौत्स मुनिहि धन दीन्हा घर न ग्रानि धन पति यश कीन्हा
सगर प्रताप बिदित जग भारी सागर खोदे ग़मित किये बारी
धुन्धु मार यश सब जग जाना मार्यो धुन्धु दैत्य बलवाना
दीह बली बिदित खट्वाग ग़ति इन्द्रहि दई सहाय ।
नृग दानी त्रि भुवन बिदित लोभी तिन्हहि बताय
तुम ग़ बला जान तिनही रघुबंशिन कुल रीति ।
जिन जान्यो भूपन सुतन तिन किय रघुकुल प्रीति

चौपाई

तदपि सुनौ गरीब मम बानी लोभी तुम कुल कहति बखानी
तदपि बिना रघुकुल सुनु नारी ज़नक व्यथा नृप कहुन निवारी
सब नृप हारि गये तजि ग़सा। धनुष न टर प्रगट ई तहासा
सब राजन की सुता बिचारी करती प्रीति यही कुल सारी
जेहि पद चरम चरम महि जानी रीति यही सब लोक बखानी
ए बिकुल यह पावन जग मीता जानि प्रीति कीन्ही मन सीता
सब यह मर्म ज्ञान की जाना तातें रघुबंशी मन माना
तुम्हरे देश नारि के चेरे । पुरुष सकल देखे दृग हेरे ।।
परिडत हू हा भक्त न कोई शक्ति उपाशक सब जो ड सोई
यह कारण को ड जानत नाही सीता जानि ए मम प्रभु ग्याही
दोह सुनत भरत के ग़ सब वचन ग़रथ भरे गंभीर ।
समुझि चूप साधी सबन उपजी लाज ग़ शरीर ।।
प्रभु जानो नारी सकल सुनि ग़स गईल जाय

अंतरजामी निरखि सब बोले बचन हँसाय

भजन

सगरी भरत कही तुम जीती। ताहूपै रघुबंशिहि न बिसरीती॥ सबरजन की सुता समुझि मन करतीं यहि कुल प्रीती। जेहि पद चरम चरम मय समुझत महि सगरी यह रीती॥ यह कुलरवि पावन श्रुति सुन्दर कीरति पूरि रही ती। शङ्कर तुम कछु जानति नाहीं जानति सिय दुलही ती॥३३॥

श्लोक

जिगाया शुनजानी ध्वेकुलंरिपु भया यहम् अस्माकं जानकी लोके जानाति रघुवंशजम्॥५८॥ अकरोत्पति मालोच्य राघवं सुखरूपिणम् अस्मान् वाप्य निशं सरव्यैः श्रुत्वा तत्सीं ब भूवतुः॥५९॥

दोहा मधुर बचन रघुबंशमणि बोलत ललित अमोल
भईं सकल आनन्द श्रुति चितय राम दृगलोल॥

चौपाई

तब हँसि हँसि प्रभु बात सिधारी। बोले बचन सकल भयहारी
जे तुम बचन कहे सरीदे। सुनत हृदय लागत श्रुति मीठे
धनि हम आजु जहाँ तुम आई। अवसर लरिवधर कोइ न मिसाई
जो न होत अवसर अस आजू। तब इहँ कहनाहिं न कर काजू
धनि तुम नारि प्रीति धनि जानी। आपु कहिउ हँसि बेहित बानी
यह व्यवहार आजु सब केरो। कहति नारि जानत जिय मेरो
तुम्हरे बचन हृदय सुखकारी। सकल सनी तुम चतुर बिचारी
जब हम जाब अवध पुर प्यारी। तुम बिनि सरिवत हैं सब दुखभारी
दोहा जिय आवत सरिवत तुम्हहि हम अवध पुरी लय जान

वसनशसन शासनहसनदयारखनुसनमान
मृदुलसुधारसयश भरी सुनि वाणी प्रभुकेरि
भई मगन दाड़िमदशन क्षरा क्षरा पुष्पेरि
हमे न कुछु प्रभुकरुचुर प्रभुहिन होय कलंक
शशिपूरणासम बशप्रभुदेदु नारि नरदश ।
एहिविधि शायसुपायसबगई भवनहरषाय।
प्रभुवयननयनन फसीं चातुशुद्ध शुभाय
करीतयारी साजिफिरिजेवन काज बढ़ार ।
बोले धोय पद बन्द तब बैठे शासन डार ।।

चौपाई

भरिजल पात्र करीसम धोरैं। दय पनवारनेग बिनिसोरैं
भई निछावरिसब पुरजानी धनिदशरथ चहुँदिशि भइबानी
भरीमसालेदारकचवरी। पारुसकृत लखतजन पवरी
तरकारी शचारपरसाये। लवरा भाँति भाँतिन केलाये
परसतफिरिदेखवायकचवरी। जबनलई काहू नर शवरी
तबदधिदध धरिलय शागे परसतबीरसुहागिनलागे
परसिसरकारासबहिजिवाये फिरिपूरीदेखावजनलाये
जबनलई पूरी नर काहू। फिरिसरकरा देखवाय निवाहू।
परसिबीर पछियाउर लीये। भरि भरिदोननजनकधरायें
जबनलई काहूँफिरिजाना धरिपरात शचवायकहाना
शायेजेंइ सकलजन वासे। भईचतुरथी बीर प्रकासे

भजन

तबहँसिहँसि प्रभुदात सिधारी। योच्योहार शाज नारिन को शसकहिशवधविहारि निहारी॥ होहिहु तुम्हहिशचरजहमरेकुलच्वलिदेखो तुम्हनागरी सारी। जहँ

भावैरहियो तहँ तहँ सब लोक कतहुँ नहिँ होय तुम्हारी ॥
शङ्करदेव पढ़ाय जनक पुर सब तुम्हरी चितकी भ्रम टारी।२४।

श्लोक

इत्यीतिलोके कथय कथया शुस्वबच्च सारसहास्य नार्य्यः स्वसुरपुरि कुर्वन्ति सकलाः मनो मे प्यानन्दह्व-
गमदनिशंहंसगमने बचः श्रुत्वा बाले मृदुल मद्मा-
तंगगमने ॥६०॥

दोहा ज्ञानिचतुरी साजसब पुरनागरि समुदाय
शाईदरवन पुनि प्रभुहि सियबनरीहरषाय

चौपाई

बालबृद्ध तहँशाय नवीनी कोइपातरितनशतिकोइपीनी
हतीएकपुरबृद्धसपारा। जरजरतन नाजुक सुकुमारा
पतिबिहीनकेवलपुरएका जानतिधरम प्रकारअनेका
सोनागरिशाइन कछुजाना जगतप्रपञ्च झूठजेहिमाना
कोइएक नारि गईगृहताके बचन कही बैठी सुखढ़ाके
माधुरचलहु जनकनृपकेरे देखहुसियबिवाहगृहनेरे
तबपूछ्यो बिवाहगति प्यारी कहिसबचतुरबताय सम्हारी
जबसबकथाशारदेतगाई कह्यो भलीजोरामसियपाई

दोहा होय अचलशहिवातसिय सदा प्रियहि प्रियबाल
कहबजाय शशिशिवबचन हेमद मत्त मराल ॥

चौपाई

धरमनमोरसखीयहप्यारी शानपुरुषदेखौं दृगतारी ।
शानपुरुषदेखबनहिँधरमा मनउतसाहनबिधवनकरमा
बिधवनधरमसकलमुनिगावा सोसबहिज्ञनसुरवनसुनिपावा
शज्ञनउपटनपानफुलेलू छुशहिननारिशतरकरतेलू ॥

धोय बसन पहिरै मनग्लाना कौन काम बिरह सुख वाना
दीप सेज नहि सोवै दीप धरि सुमिरहि पति नित नारि।
सो न होइ पुनि पति बिरह सुरपुर जाय पचारि
नहि बैनो गूंथे सदा ब्रह्मचर्य्य करि नारि।
श्रापु तरै तारै पति हि गावत स्मृति चारि॥
जेपर पति सेवति सखी तनक सुखन के काज
जननिन्दा दुख नरक फिरि भोगै तजि तजि लाज
फिरि न होत सुख पति सहित जौ करती व्यभिचार
कुंभीपाक बसति सदा निन्दा जगत अपार॥
यह बिचारि सखि कतहु हम देखन नहि सुख जानु
हम हि मोर पति तजि सखी श्यान कलुक नहि भानु
सुनि श्यस वचन बिचारि त्रिय धनि धनि हृदय बखानि
श्राय जनक घर सखिन तन यह सब कह्यो सयानि

अथ मनुस्मृत
श्लोक

भर्त्तादैवं गुरुर्भर्त्ता धर्मतीर्थ व्रतानिच तस्मात्सर्व परित्यज्य पतिमेक समर्चयेत।१। त्वरितं नानुगच्छेत न भावे त्पर मानवान् नाभिन्नदर्शयेत काप्यगुल्फान्तवासो नचालयेत् यापतिं प्रीणा येत्प्रीतास्त्रिलोकी प्रीणिता तया अनलं कृत मात्मान नपत्युर्दर्शयेत्कचित्।३। पतित पतिमालोक्य पतिध्यान परायणा ब्रह्मचर्य्येण यात्मानं पालयेत्स्वर्गगामिना।४। अंधः कुष्ठीदरिद्रो वाव्याधितो विकलस्तथा स्त्रीभिर्भर्त्ता नहातव्यो यदिच्छेदा त्मनो गतिम्॥५॥ पृथ्विधवाधर्मवतानिम पत्यौ

मृतेपिया योषित् वैधव्यं पालयेत्क्वचित् सापुन-
प्राप्य भर्त्तारं स्वर्गलोकंसमुश्नुते विधवाकवरी व-
धो भर्तृबंधायजायते एकाहारा सदा कार्य्या स्त्रिया
तत्परया सदा ॥ पर्य्यंकशायिनीनारी विधवा पति
येत्पतिम् तस्मात् भूशयनंकार्य्यं पति सौख्यस-
मीहया ॥ नैवा गोहर्तनंकार्य्यं विधवायाः स्त्रियः
क्वचित् गंधद्रव्यस्य संयोगो नैव कार्य्यः स्वयं पुनः
स्वपत्यलाभाधातुस्त्री भर्त्तरि मृतिवर्तते सेहनिन्द
मवाप्नोति पतिलोकाच्चहीयते ॥१॥ नास्तिस्त्री
णांपृथक् यज्ञोनव्रतंना प्युयोषितस् पतिशुश्रू-
षतेयेन तेन स्वर्गमहीयते ॥२॥ मृते भर्त्तरिसाध्वी
स्त्रीब्रह्मचर्य्यव्यवस्थिता स्वर्गंगच्छत्यपुत्रापि
यथाते ब्रह्मचारिणः व्यभिचारात्तुभर्तुः स्त्रीलो-
के प्राप्नोतिनिन्द्यतास् शृगालयोनिं प्राप्नोति
पापरोगैश्चपीड्यते ॥

चौपाई

सबविधि भई चतुरथी गाई मनहीं मन सिय-प्रति मुसक्याई
कंकन छोरि सिया हरषानी-छोरत राम मृदुल तल पानी
गोरी भरी गोल अरुणाई-नापर श्याम राम भुज आई
कोमल प्रगुरिन छोरत जाई-देखत नगर नारि मुसक्याई
कोउ त्रिय कहति बचन अति ढीठे छोरत अबन गांठि रस मीठे
पुरुषन की यह रीति जनाई-परी गांठि नहि चहत छुराई
कोउ कहै नृपहि पितहि महतारी बोलि पठावहु अवधबिहारी
सुनि प्रभु बचन अनुज सब भाई छोरी गांठि सुरन सुखदाई
दोहा-सिय भुज कंचन नाल जनु रघुवर कर बिकसान

श्याम कमल जनु सिय मुख वाहि लखि शशि जनु मुरझात
दशरथ धन फल फूल गहि डार्यो सिय कर कोछ
भई निछावरि दानि श्रुति श्री मिथिलेश परोछ
गई सिया हि लय भवन सब दिए तयागी जानि
भयो शोर सब नगर अति छुद्धि नारि नर कानि

भजन

गहि विधि सकल चतुरथी छूटी। भूषन बसन मोल रतनन के धरि रघुबंश बधूटी॥ मनही मन मुसक्यात राम सिय खोलो गन्थि न दूटी। डार्यो आय कोछ दशरथ नृप नेगिन संपति लूटी॥ शङ्कर मुख दशरथ लखि दीन्ही मणि श्रम सोल शिर बूटी॥

श्लोक

चातुर्थिकं तत्र चकार सादरा च्छ्री कोशलेशो मतिमान्स शांतया। द्विजादि सर्वे व्यधि गम्य बंधनं राज्ञ श्चवध्वे प्रददौ महा मणिम्

चौपाई

भवन काज पुर कारु न भावा। सिय बिन्हा घर घर पुर छावा॥
कोऊ कहै काह का बश्यब भाई। सिय बिन पुर कैसे रहि जाई॥
तब लगु सजि बरात सब आई। बिदा होन मिथिलेश बुलाई॥
बाजत शब्द नगारन कोरे। बोलत गज तुरगा नर फोरे॥
जहँ तहँ यह शहि नकीब पुकारे। उड़े निशान जहे जहि थारे॥
हलक ने गज मिथिला पुर छावा। महाराज दशरथ तहँ आवा॥
शादा सहित भवन बैठारी। पूजि गणेश दई विधि सारी॥
प्रथम जनाति न मान बनावा। फिरे बरात सत्कार कराया॥
देइ सकल धन बसन सुसारु। बिदा किये सब भूप सवारु॥

सकल बस्तु जनवासे आई अवधनरेशहि दीन्ह पठाई ॥
जहँतहँ होन तयारी लागी तब दोउ बिदा कहु मागी
दोहा-गथु छुरावत धनबहु दीन्ह श्रीमिथिलेश
राम बिरह नर नारि सब व्याकुल भयो कलेश
भजन
चलन अब चहत सिया बर राज सुनि अस नारि सकल मिथिला पुर बिसरि गयो गृह काज गई बरात जनक मन्दिर सखि बिदा होन की साज। शङ्कर होत तयार सकल नर मुनि सग दशरथ राज ॥ ३६ ॥
श्लोक
उवाच का चित्य मदा मनोहरा श्यामा सखी तत्र निशाकरा ननाम् ससीतया यान्ति रघूत्तमः पुरीं न लाबिना वाशु सुरवेल भामहे ॥ ६२ ॥
चौपाई
गथु छुराय मुरवहि जुठरावा नगर नारि सुनि तहँ चलि आवा
दय कर पान बैठि तहँ आई लोचन बारि बिरह हो छाई
दोउ कर जोरि बिनय अति कीन्हा आग हमारि दास चलि दीन्हा
नातर नारि भवन की मीना कैसे होत दास मतिहीना
दोहा अस कहि लोचन नीर भरि बिकल भई सब नारि
राम नयन भरि ढरि गिरत नीर मोहनी डारि ॥
भजन
गथु छुराय मुरवहि जुठरायो। जल अचवाय रवाय पान मुरव आसन डारि सखिन बैठायो ॥ राम लषन शत्रुघ्न भरत सौसव कर जोरि बिनय अति लायो। शङ्कर भागे बड़ी मिथिला पुर नर नारिन सब दरसन पायो ॥ ३७ ॥

श्लोक

रामश्च लक्ष्मणश्चैव भरतो लक्ष्मणानुजः भुत्वा
सर्वरसान्यथिमुभोच सुखदस्तदा शहो भाग्य
महो भाग्य मैथिलाधि निवासिनाम् दर्शनंले-
भिरसर्वयुष्माक करुणानिधे ॥ ६८ ॥

चौपाई

गदगदगिरा नयन भरिवारी बोलीकचन मधुरसबनारी
कबहूकफिरिमिथिला पुरजाई देहो दरस श्रमपरघुराई
रूपविशाल नयनरतनारे सफलकरहुकबनयनहमारे
कब मृदुहसनिदशनदुतिकरी देखबफेरिनयनहँसिहरी
तुमबिन नाथ भवननहिभावा रहननदुख प्रभुहृदयछपावा
उरतिबियोगहूकहियेमोरे रहियोनजात नाथबिनिहोरे
बिधिबनायसबबातबिगारी कैसकभवनरहबहमनारी
मृदुपंकजलोचनसुरझाने मनहुरामगिबदन लुकाने
दोहा एहिबिधिसकलबिलापकरिचितयरामसुखओर
तजिकुललाजपुकारकरि रोवातदोउकरजोर

दादरा

फेरिकबहूँजनकपुरऐहौ । कैलछबीलोसुघरसुन्द
रतनईनयनकोआयदरवैहौ ॥ शङ्कनईरतनारेनय-
नहँसिकरिकरुणाफिरिनाथचितैहौ ॥

श्लोक

कदावै पुनर्मैथिलेन्द्रस्य पुर्य्यांमहाराजराजेन्द्रपुत्र
त्वमाशुप्रियःसानुजोनायकोना जनानामलं सा
नुज यश्यगंतास्मशंत्वाम ॥ ६५ ॥

चौपाई

बिदा होन लागे सब भूपा। दायज दीन बिदेह अनूपा ॥
गज रथ अश्व हेम पट भूमी। ठढी देत मिथिला पुर धूमी
सिय जननी जब दीखि तयारी। बिकल भई लोचन भरि बारी
लागी कहन सयानि बिचारी। राजु कलेऊ कीन नहिं प्यारी
कहइ तु त गृह भोजन लागी। सुता बिरह मति शोक अनुरागी
सिय हिन मान सखिन मिलि खेलै। पहिरत न जी हुमेलै
जननी धाय गोद लय लीन्हा। जब चितई मुख दीख मलीना
तब हँसि कही ज्ञान की बानी। माके हिय हेतु दुखी महरानी
की कछु बचन कहा पितु भ्राता। मोहि बताउ जननि सुख दाता
दोहा शशु कहि पूछति भय भरी। कारण सुनि सकुचाय
पोंछति मुख जल ढरत दृग। भुजगहि कढ़ल गाय

चौपाई

तब बिदेह रानी शशि बोली। कुमुदि प्रिय स्वाहु कसी नहिं बोली
तब सिय सपथ शशि कदिवाई। मातु हृदय दुख देहु बताई
तब भरि नयन नीर दरसावा। राजु भारतु मकुछु नहिं खावा
सुता लेउ तुम बदन जुठारी। राजु अवध पुर तुम्हरि तयारी
सुनत बचन महि खसि तब सीता। भई बिकल जनु मृगी सभीता
तब जननी बयारि कर कीन्ही। बोली बिकल मातु मुख चीन्ही
का अपराध मातु हम कीन्हा। जेहि कारण शाय मुशस दीन्हा
तब जननी सब बात छपाई। दय कर अन्न मुख हि जुठराई
पोंछति मुख रूख पाय सयानी। बोली शनि अमृत रस बानी
दोहा सुनहु पतिब्रत धरम प्रिय। गावत वेद पुरान ॥
पति तजि ब्रत तीरथ धरम। सुनु प्रिय त्रिय हिन ज्ञान

चौपाई

अंधकृपिणरोगीधनहीना मूढअधमबावरबलहीना
ऐसउपतिकरकरिअपमाना पावतनारिनरकदुखनाना
तुमप्रियपतिहैहैअतिप्यारी रहबसदासासुनहितकारी
देवासुतसमजानवनीके रहबअधीनसबुनृपहीके
सेवासबरानिनकीप्यारी करबहृदयसमताधरिसारी
श्रीअवधेशहुकमसेवकाई करबपतिहैप्रियहोयबड़ाई
सुताअधीनकुलनकीलाजा महियशसुरपुरमिलसुखभ्राजा
सुताकुचालउभयकुलनासा होयसतीकुलसुरपुरबासा
प्यारीसुताचहतकोउनाही याहीभयऊईजियमाहीं
तुमअतिसतीहृदयपहिचानी कहीकथाअसलोकिवजानी
सुनिसुनिनारिपतिव्रतधारी होईहैकुलसबसतीयाविचारी
सुनिअसवचनमातुमुदकेरे भयेफारबिकलमातुमुखहेरे
दीहोवतिबिकलपुकारकरिउरजननीलपटाय ।
अबमामोकहनिरुहोयकहापढावतिमाय ॥
देखदशाजननारिसबबिकल भयेतजिधीर ।
रोवनकहिसिय गुनसकलबहतनयनअतिनीर
जहँसुखबह्मानन्दनितदुखनभवनृपलेश
तहँसियचलत भवनसकलपुरोविरहकलेश

दादरा

गोदलयलीन्हाजनककीनारि । जुदरायोमुखचल-
तसियाको भरेभरिलोचनबारि ॥ मुखपोछति
कहिकहिसमुझावतिकरबन सासुनगारि । सेवा
करबसमुरसासुनकीमरबहृदयमनटारि ॥ पति
तजिज्ञानधरमनाहिनसुनु गावतश्रुतिचारि ।

अंध कृपिण रोगी दारिद्र तन सेवा करै सुकुमारि॥ शङ्कर
जानि विदा अपनीत बरोवत जनक दुलारि। ३९।

श्लोक

सुता मरो कृत्वा जनक नृपनारी जनक जां वरं तस्ये
धर्मसकलं समलं मन्द वचसा उवाच प्रासंगं नगर
जननारी भिरतुलं ततः श्रुत्वा सर्वं सपतिगमनस्या
गमद्दशम॥६६॥ सशं को ऽर्थः दुःखं न शं अशमिति १

चौपाई

बोली सिय जिय अति अकुलानी सुनहु जननि मम बचन सयानी
मोहि तुम देश पठावति मोही देखब कहाँ मातु तहँ तोही
कहँ देखब पिय पितु घर भाई को फिरि यह मोहि नगर देखाई
जननी को मुहिं गोद लगावै को मोहि देइ उहाँ मन भावै
मन मानी पट मातु मिठाई को देहै मुहि मातु जगाई॥
गूँधे केश गोद सय मोरे। तुम बिनि अस को फुलेल न बोरे
को उठ देइ खेलवना मोही जाब नअवध मातु तजि तोही
संग सखी कहँ देखब जाई सरिवन बिना मोहि रहियो न जाई
देखा रति करति माक्ष मति सबलगन न पावति धूप।
खेलत धूरि उठाय कर गोद लगावत भूप॥
अस कहि रोवति बिलखत अति तन मन नहीं सम्हार
बिकल सुतहि जननी निरखि दुखजिय भयो अपार
फिरि चितई रोवति कहति भोर को लेऊ मोहि
को देहै जेंहो अवध जो लैहौं संग तोहि॥ ४०॥

भजन

मा हों देहै खेलोना कौन। कवन धराय कलेऊ रोवे गो
सोवत को को पौन॥ मनमानी ठानति हठ मन्दिर

मनश्रावतिजबजौन। मातुपितासबसँगसखीपुर
जात छूट मेरो भौन ॥ शङ्कर बचन सुनतसीता केदु-
खितमातु भईमौन ॥४०।

श्लोक

रुरोदसाबीक्ष्यसखीजनेगृहं नृपं भवाराधनसं प-
रायणम् मातश्चमातत्र पटं पयोधृतवरा भयदा-
स्यतिकोन्नमासनम् ॥६७॥

चौपाई

सुनिजबजनकावबरिश्रमपाई।प्राय भवनसियजननिबुलाई
पूछतभईविदेहहितलाई।कुमरिबिहरीभोजनकुछखाई
तबरानीअसबचनसुनावा।अर्जुननाथसुताकुछखावा
पूछ्योजनककितयकहुप्यारी।रोवतिमिलिसबिवचनसुकुमारी
सुनिपितुबचनबिकलतहँधाई।जनकगोदगहिकरनमुहाई
गिरीबिलोकिरोवतपितुज्ञानी।हायनाथप्रियपितुकहिबानी
श्रवकबफरिगोदमुहिलाई।नाथसभालयबेदहुजाई
जन्मबहुतहोईहैतनधारी।मिलीनमुहिअसपितुमहतारी
दोहा-हा ममजीवनप्राणपितुसुखदायकसुखराशि
ऐसेउपितुकाबिधिबिरहदीन्हेउदयदुखगासि

चौपाई

जनकदेखिनिजदुखितकुमारी।भयोबिकलयहदशानिहारी
रह्योनध्यानज्ञानमनमाहीं।मनबिश्रामनपायोकाहीं
ज्ञाननसाधुतख्योतनकेरो।रह्योनभूपतिहृदयकेरो
कहतश्रनित्यजगतसबकाला।सुताबिरहलखिभयोबिहाला
ब्रह्मानन्दश्रनन्दभुलाना।भूपतिबिकलसुरनमुनिजाना
सुरपतिबिहसिकहीतबबानी।देहधरेश्रतिकठिनबखानी

जनक बिदेह भूपश्रुति ज्ञानी सुता बिरह बुधि श्रुति बखानी
देह नरपावक की कवन गति मोह क्रोध मद खानि ।
ब्रह्म मगन निसु दिन नृपति मति बुधि सकल सेरानि
देखि दशा मिथिलेश की नगरी बिलखानि ।
रह्यो न धीर बिदेह तन भूल्यो श्रपन परान ।२।
धरि धीरज मिथिलेश तब समुझायो चुप कारि
श्रवन करहु सुखदा प्रिय हृदय श्रस शुभ समय बिचारि
धीरज दीन बिदेह तब बेगि बुलावहु तोहिं ।।
तुम बिन भवन कुमारि सुनु कलन परेहि छरा मोहिं

भजन दुमरी

मिथिलेश देखि सिय बिरह दशा । सब उतरि गयो तन ज्ञान नशा ।। जगा जानि श्रनित्य न यदपि फंसा ।। सोइ देखि कुमरि परि मोह डसा । भरि नयन रही इन्दीनबसा ।। भयो सिथिल श्रंग परि भूमि खसा । बिधि दीखि जबै मिथिलेश दशा ।। शङ्कर जगकी गति देखि हंसा ।।४१।।

श्लोक

श्रात्म ज्ञान विशारदोपि जनको दृष्ट्वा सुतां सुन्दरां मोहं सोप्यगमद्विशाल शरणः संपश्य लोके श्वरः वैकल्यागम नोन्मुखी जगदसत ज्ञानं च यत्तन्नाबित्येव प्रबलं जहा सहृदये राज्ञोन दृष्टं नरैः।। ६९।।

चौपाई

पितहि मोह वस समुझि सयानी सोच बिदा जानी श्रकुलानी
धीरन धरति दुखित कहि बानी कह पठवत मोहि पिय जिय जानी
पठवत जो मुहि श्रवध नरेशा होय तुम्हहि बिन श्रधिक कलेशा

नासंग सखी न मातु हमारी·कैसे रहब अकेल बिचारी
सुनि बिदेह बिरहानल बानी मोह बिबस मन बुधि अकुलानी
धरि धीरज उर ज्ञान बढ़ावा पति नसि खापन मन समझावा
सुख दुख सब अनित्य मन जानी स्रुति सर्प इव जगत बखानी
स्वप्न जाल जग नात मिताई धीरज अस बिचारि जिय लाई
दोहा·देह सुता सुत दुख जगत सुख धन नात सनेह
साँचे सेलागत सकल जबत कायह चले देह॥

दादरा

माँ मुहि कौने पठावति देश। को रखिहै चुपकारि गोदमुहि को गुधिहै शिर केश॥ शङ्क बिन देखे जननी पितु पैहौं मातु कलेश॥४२॥

श्लोक

दुःखवतां तत्र मामातः कोदास्यति महीपतिम् बिनादृष्ट्वा सुखं राज्ञ दुःखं मे प्रभविष्यति॥६८॥

चौपाई

अस बिचारि धरि धीर सुनाये कहि शुभ वचन सुतहि समुझाये
प्यारी जा रु वचन सुनि मेरो अवध करब कछु दिवस निबेरो
संग पठावत जन बहु नारी देहैं सुख रुख सकल बिचारी
बेगि बुलाय लेब घर प्यारी तुम बिन जननी अधिक दुखारी
मोहि न कल तुम बिन छगा प्यारी होहु न दुखित मातु पितु प्यारी
कहि अस बचन गोद भरि राजा रोय कह्यो भूपति तजि लाजा
सात दिवस बसि फिरि इत आई सुखी करहु पुर जन पितु भाई
जब अस बचन जनक समुझावा मोह बिबस मन धीर न पावा
दोहा अति बिलखति सकुचति डरति गिरि बिदेह जनकानि
इत उत चितवनि हेरि पुर जन कसुता बिलखानि॥

दादरा

जनक जब देखी सुता बिलखात। भरि लोचन बैठाय गो-
दनृप कहत सुनो सिय बात ॥ बेगि बुलाय लेब मि-
थिलापुर शङ्कर गये दिन सात ॥४३॥

श्लोक

सुतां वीक्ष्य चो बाच मा दुःखमाशु स्वदेस्वे पुरेमंगले
राजपुत्रीम् नृपेशे कुरुत्वे जनैर्वाहिनैर्वप्रिरे प्राप
यिष्यामि राज्ञः पुरात्वाम् ॥ ७० ॥

चौपाई

आजुते छूट जनक पुर मेरो। गयो संग सखियन सब केरो
कहय को मोहि ज्ञान को नाम। छूट जनक पुर सुंदर धाम
परजन लोग भये सब मेरे। अपने पर भये लोग घनेरे ॥
भइउ बधू रघुबंशिन केरी। नय पितु नाम न काहू मोहि टेरी
सब बिधि वहाँ हब सकुचाई। को छमिहै मम अधिक ढिठाई
शुक मैना पिंजरन सब छूटे। बंधी लाज अबते तन खूटे ॥
लिखे मोर लिखवना घर नाना। छूट जात गज बाजि बिताना
केसेउ धीरन आवत मोरे। को उकहै बचन हजार करोरे
पट पुतरी धरि कवन खेलाई। देहु मातु सब मोहि देखाई
दोहा-अस कहि बिलखति सिय निरखि सास मोर चकोर
करहु सुरति निसु दिन समुझि सुधि न बिसारहु मोर

दादरा

आजुते मेरा छूटा जनक पुर छूटा सुनियो री मेरी स-
गकी सखीरी आजुते संग टूटा ॥ अपने पिता कर नाम
छोड़िहम भई रघुबंशी बधूटा। परजन सकल आपुने
होइगे मातु पिता भये झूटा ॥ शङ्कर बिनि —

मिथिलेश कुमारि सब मन हुजनक पुरन्हू ।। ४४ ।।

श्लोक

किंकोमि कगच्छामि किं वदामि किं करोमित्य जामि किम् मातुः पितुश्च शरणं मुक्त्वा पत्यु सागिया ।७१। कः पुमान्ज्ञानको नास्ति पितृ नाम श्रकारिना आहूयि-ष्यति मातत्र विना रघुवधूटिकाम ।।७२।।

चौपाई

सुनि अस बचन नारि बिलखानी सिय पिय गवन हृदय जब जानी
हेसखि वजात श्रवध सब भाई सहित सिया जिय अस सुनि पाई
हमहि न कल परिहै सुनु मोरी करन दगा सि चहत हित टोरी
मृदुल बचन मधुरी मुसक्यानी देखि भई बस सन्त जिकानी

दोहरा

हीलय गो चितय मनलय गो। जनक नगर नर नारि
सबन को हृदय प्रीति करा बैगो ।। नयन बिशाल लाल-
स श्रति सुन्दर काजर याद सिकय गो। शङ्का मैं कु-
छु जानि न पायो चलत दगा सी कैगो ।। ४५ ।।

श्लोक

नैवं भूविलसैर्वचोभिरमलैर्हसावरैः सुन्दरै भाव-
नैः ससैः कटाक्ष सुरदै र्मामिगते वीक्ष्यते राजर्षे-
र्मनुमुनुमनः सरिवसुताः कुर्य्या किमाशु प्रिये स्थेया-
द्वहे पुरन्नृपत्य चविना तान भूमि चूड़ामणान्।।७३।

चौपाई

कोऊ कहै हम मिथिला पुर नारी रहब न जाब सिय हि सग सारी
भूपकिशोर बिरहु ध्रुव दाई। सुनि सरिवनिति तिन कस गहि जाई
कहब न मरम कहू पहभाई जाब साथ सग सब रघुराई ।।

नयनविशाललालरतनारे॰ वेधिगयेउरबीचहमारे।२।
दोहा॰अस कहिकोटचियदुखभरीकमलनयन भरिनीर
सुधिबुधिगहविसरायसबसुमिरतिसियरघुबीर
दादरा
यामिथिलापुरहौंतोरहौंन।जैहौंसाथसियारघुबरके
भूपकिशोरवियोगसहौंन॥लोककुटुमजनमित्रन-
गरकेतिनहूंसोयहमरमकहौंन।शङ्करबिनिरघुबी-
रसियाकेदेखेसुखपलएकौलहौंन॥४६॥
श्लोक
सखीकाचिन्नारीविरहबलविवन्नाविरहिणींसुह ङ्-
मादीनामतिशममलंविहूलतया वचोभिर्विहं-
गीमृदुलरसकंदर्पजनकैरुवाचास्याःपुर्य्याःसति
सहगामेव्यामिसुखदाम॥७४॥अयोध्यागमना
प्रचलबललज्जाप्रशरणामपित्वा रामेमदनमद
मातंगगमनेकथंमहादुःखंविरहजनशोकाग्नि
जनकंपलंचैकंश्यामेन हिनहिकुलेसंप्रतितया
॥७५॥युग्मम्॥
चौपई
भरिभरिनयनदेखिसखिलेहूसुतजनपतिनडरहुमनकेहू
दूंमिथिलापुरनारिमृगीसी रघुबरबागुरिदेखिठगीसी
अबप्रेमिवयोंपैहैंनहिचयनन-बिनदेखेसियबरक्षननयनव
जबतेकानहिसुनीसियजाईनयनरयनक्षननींदनआई
कैसेकटैदिवसअबराती-प्रियप्यारीरघुकुलसबजाती
भजन
देखुरीभरिभरिईनयन।दूंमिथिलापुरनारिनरनवे

हरिलीन्हे तनमन कहि बैनन ॥ जबजैहैं शिवधेनुकुँ
शरधरईं शरिवया पहुँहैं सखिचैनन । जैहैं कान्ह का-
लिके सजनी सुनि शरिवया निपट लई लागा तैनन ॥
शङ्कर जाति सिया सियबर पुरशवहसरी करिहैं दुखदैनन ४७

श्लोक

पश्यत्वं नयनैरामरघूणां कीर्तिबर्धनम् विनार-
घुबरामंसुखंन भविताध्रुवम् ॥ ७६ ॥ यायाःनि-
शाश्चदिवसाःसुखदाःसानुजस्यवै दर्शनेनाद्य-
रामस्य बभूबुःखदाबिना ॥ ७७ ॥

चौपाई

कोउसखिकहै मनकमैं पारैं तबतेसखिमुहिकछुनसुहाई
धकधकातिसुनिसुनिसखिछतीबातनकुछुसखितहमहिसुहाती
कबफिरिबिधिकरिहैं असयोग होरामसियसहितसंयोग
दोहा असकहिदेउकबसनकरिबिधिसोचहतिनमोक्ष
जनमजनमसियसंग मिलनदेवपसारतिकोक्ष

दोहरा

सियबरबिनिरतियाकैसेकटैं । तनकमनकसुनि
पाईसखीरी जैहैं लागी धकाधकछतियाँ ॥ शङ्कर
फिरिकबहोयमिलनसखिकहबमधुरहसिहसि
रसबतियाँ ॥ ४८ ॥

श्लोक

कदाहेबिधेशङ्करबल्लदेविस्वधारूपिणिशरणादेभा-
स्करेन्दु प्रचण्डस्वनेहहोराघवस्य प्रभोदर्शनेहे
गणाधीशगङ्गे ॥ ७८ ॥

चौपाई

पहिनमोहि भवनकलप्यारी गयेप्रबधसखिप्रबधबिहारी
कोइकहैरामबिरहप्रति भारी डसा नागनानारिबियारी
अलकलटककारी घुघुघारी दृगतन कोटिजननमनहारी
प्राणनाथजीवनसुखरामा फंसी प्रेमरघुपसब बामा
कोइतहनाकिसुधासमुझावा तुमभगिनदरसनसबपावा
दोहा तुमपरसुतचाहतिसकलबसहिनगरसबबाल
मानुप्रबधपुरजननकरबावरिकवनेहबाल

दादरा

आलिरीकलकैसेपैरी। श्रीअवधेश कुमारबिरह
यहमननबुधिसबमेरीडसैरी ॥ हौंहैंश्रोरनयनसुन्दरजब
प्राणाव्यानचलिकैसेधसैरी। वामधुरीमुसक्या-
निवानिसखिअलकलटकहियबीचबसैरी ॥
शङ्कराजबसाथरघुबरकेहसनेहोयसोक्योनहसैरी॥८६॥

श्लोक

वियोगाहिः प्रियेनारीर्दंशकरुणानिधेः रामस्य
गारुडीबूहिश्रवणोराघवानुजम् ॥ ७६ ॥

चौपाई

कोऊसखिधायधपकचलिग्राईकहनलगीसबसोवनसुनाई
तुमइतसकलसखीबिलखाती जातप्रबधपुरसकलबाती
ग्राईजनकनृपतिदरवाजे यानसखीबाजनसबवाजे
दईचढ़ायपालकीप्यारी देखनुरोवतिजनककुमारी
दीखसखिनपालकीचढ़ाई हायकरहमकसघुराई
सूनीपुरीगली भईमेरी। सूना भवन भयोदुखघेरी
गतिनिरमोहछलीबिधिजाना रीतिरीतिसियकीनचलाना

धीरहैं धीरनयन नहिंजानी जनक सुता बिन सुनहु सयानी
दोहा आजुअवध पुरधन्य अतिहोय सुनहु मम बानि।
रावन बकहि बिधि प्राण सखि बिन सिय पियमहँ आनि
जाब साथ सिय पिय सहित रहब अवध पुर प्रालि।
देखब भरि लोचन सियहि पिय सिय सहित बहालि
सोरठ भजन
ए सखि मैथिली अब चली। सुन भयो नरेश मन्दिर नगर सुनी गली॥ ऐसी बिधि निरमोह सजनी प्रीति तोरी छली। नयन कैसे धीर धरिहैं मिलै बिन नृपलली॥ धन्य होइहै आजु पावन अवध पुर की थली। कैसे रहैं प्राण सजनी बिरह दारुण बली॥ जाब शङ्कर जानकी संग रहब होई भली॥५०॥
श्लोक
साजानकी यातिपतिव्रता सती पुराऽत्पुरी पुराऽयतरा-
मनोहरा श्रीकोशलेन्द्रतांच बिना पतिव्रतेतदा कथं
व्यामिलुकेशिकिप्रिये॥८०। अतोगमिष्यास्य
नधेहमंगने तयाबसिष्यास्यपितत्र मानदे पतिः
पिता वायदिमे सुतो वानिन्दाकरोतुपकीर्त्यतेऽसो८१
चौपाई
पीनस चढ़ी मातु जबु जानी रोवति निकट आय बिलखानी
रोवत सुता देखि तहँ रानी। समुझायो रानी कहि बानी
जान्यो सिय जननी नियरानी रोवति मातु अगल पिटानी
चूमि लगाय लियो उर माही चुपहु दुलारि जात मग माही
तुवहित प्यारि पठावहुँ नेगी नेहु बुलाय जनक पुरवेगी

चौपाई

प्रतिदिन लेहुँ खबरि मगवाई। नाहक पितु प्यारी अकुलाई।
कहि राजहि तुव अनुज पढाई। लेहहुँ तोहि बेगि बुलवाई॥
बहुतक कहि जननी समुझावा। तदपि बिकल बस धीरन आवा।
दोहा-रोवत हेमा कहि बिलखि हे जननी कहि मात।
हे पितु हे मिथिलेश कहि अब नतजति अकुलात
तुम मा मोहि भूढहि कहति दुख तन दशा निहारि
तब जननी बोली कहति सो दै कहति तुम्हारि
दशरथ दीख बिचारि कहु संदेसो देरि।
चलन देहु अस कहेउ चलि करहु नगर निअबेरि

भजन

रोवत मिली जननी फेरी। देखि बिकल कुमारि सुन्दर लई पीनस घेरि॥ लियो लाय उठाय हिय में चुपो प्यारी मेरि। बेगि नेगी मैं पठैहौ खबरि लेहौ तेरि। वगिही महराज सो कहि तोहि लेहौ टेरि॥ नहीं ठरल-पिटाय छोड़त भुजा जननी केरी। भूढ ही मा कहत मोसो दशा मेरी हेरि॥ घरी पल पल खबरि लीहौ कहति सो दै णि देखि शङ्कर बिरह दशरथ कह्यो होत अबेरि॥५२॥

श्लोक

पुनर्यानि मास द्य मातः कुमारी सुतां तां निधायाशु धीरद्दोसा जनैर्दुःखिता राज राज्ञा न मेत्य वज-त्वं शुचे माकुरुस्वं गदेतां समुत्का पिये प्राह यिष्यामि पुर्य्यी मुवाचा नृतं वः हि म. वीक्ष्य राज्ञा कृतं तत्र सापथ्य माराध्य राजा तदा कोशलेशो

जगादाशुगतुम ॥ ८३ ॥

चौपाई

फिरे रोइ जब यान उदाई । वेगि कहारन्ह पहिं शिर नाई ॥
हा जननी हे बंधु सहेली । छूटी गली जहां हम खेली ॥
कबहुं देखिबहौं पुर पितु फुलवारि । कहि कहि जनक सुता बिलखारि
मृगखगई तरवर सब छूटे । प्रीति मोह सखियन के टूटे ॥
छूटे सब सेवक पितु मेरे । छूट हाय पितु नगर बसेरे ॥
नट नागर छूटे सब मेरे । छूट जात सुख घर पितु केरे ॥
देखि दशा पुर सब नर नारी । भई बिकल लखि जनक कुमारी ॥
घर घर सिय बिरह कुल नारी । देखि पुरुष सब भये दुखारी ॥
एहि बिधि जाति चली दुख भारी । यान निकट आई सुकुमारी ॥
हाथ जोरि सखयुहि शिर नावा । पुर प्रणाम करि धीरज आवा ॥
दोहा पहुंचि नृपति सब नृपन को बिदा किये यश धाम ।
जुरे देखि नर नारि तहं सिय लखि मिटहु कलेश ॥

रागपीलू

मोरी संग सखियां छूटी जाय मा कहं दीन्ह पढाय ।
कबहुं देखिबहौं यह फेरि जनक पुर तरवर कूपतलाव ॥
कहं मिलिहैं बद गोद पिता को खेलत लेत उठाय ।
कहां जननी री मेरो भाय ॥ रोवति जात गली वीथिन में जननी सुनि बिलखाय । शङ्कर सब मिथिला पुर घर घर सिय बिरह्यो छाय जनक पुर देखो नहीं जाय ॥ ५२ ॥

श्लोक

तदा यानगायानमावीक्ष्य यांतं सुरथ्या सुता
मातरं भ्रातरञ्च सखीं मां सनं भूपतिं वाटिकां भं

सः यक्षिणां मैथिलं ते शुशोच ॥८४॥

चौपाई

एहि बिधि द्वार पालकी आई। नर नारी जिय सुख न समाई॥
कवशिल्यादि गनि हरषानी। पूजि गरीश दिनेश भवानी॥
परिछि सकल मन्दिर लय आई। दीखि बधुन जिय अति हरषाई॥
सुन्दर रूप बिशाल बिलोकी। आनद मगन सकी को रोकी॥
मगल पुर घर घर बधाई। बिदा भये सब मुनि समुदाई॥
करि सतकार बिदा नृप कीन्हे। रहे जे शेष मानि धन दीन्हे॥
निज निज मंदिर पृथक बनाये। सब पति निकर बसन सुख पाये॥
सुर पुर भयो आनन्द अपारा। बरषि फूल सुर राज सिधारा॥
सुनत मुनि अहिराज समुदाई। गावत दशरथ भाग्य बड़ाई॥
तिहु पुर भयो महा यश पावन। सुत सुनत यश जेहि बल सावन॥

दोहा एहि बिधि अनुज समेत प्रभु करुणा सागर मूल॥
दियो सबहि सुख रुख बानि गिरा कहि मृदु बचन अमूल॥

भजन

है सिय बिदा अवध पुर आई। भई आनन्द देखि कवशिल्या नगर नारि आनन्द न समाई॥ भयो अनेक भाति मगल पुर सुर मुनि द्विज कीरति प्रति गाई। बसे सकल अवधेश कुमार पुर सिय पिय करति अधिक सेवकाई॥ शङ्कर भयो आनन्द तिहू पुर गावत दशरथ भाग्य बड़ाई॥ ५३॥

श्लोक

सीता प्राप्य महा प्रभाच सुमुखा श्यामा सरोज प्रभा तन्वगी सुदृढा पति व्रत करा राजेन्द्र जो मानदा।
कौशिल्या प्य पराचते गणा पति स पूज्यते भे सुखे

तांतां राजसुतां निधाय भवने चक्रे तदा सोत्सवम् ।२५।

चौपाई

यह रघुबीर ब्याह मन लाई। पढ़ै जो कोइ मन प्रीति बढ़ाई॥
होय महा सुख अति यश लोका। परहिं न कबहु जगत कर शोका॥
रोग न रहत सुनत सुख दाई। शङ्कर करि हरि भाव बनाई॥
देखि कुरहि सज्जन अति प्रीती। भाव भक्ति करणा रस नीती॥
जहं जहं शब्द साधु तहं भाई। छंद काज अपशब्द मिलाई॥
दारिद हरण स्वर्ग सुख देनी। तीन जतन जनु बनी त्रिबेनी॥
सब यह कथा बुद्धि उपजाई। लेहु पुराण बचाय मिलाई॥
शास्त्र लोक लखि रीति सुनाई। कहं सब नहिं देखि कथा यह भाई॥
दोहा-श्रीनन्द सुमेरु प्रीति सुबिमल सम्वत फागुन मास।
कृष्ण सप्तमी बार गुरु पूरण भई प्रकाश॥
महादेव मुहि कहत सब शङ्कर पद लघु जानि।
भजन लावनी ख्याल करि शङ्कर लिख्यो बखानि॥
गोबिन्दा श्रम ब्रह्मरत सन्यासी अति धीर।
शास्त्र प्रीति बेदान्त मत भक्ति हुरत रघुबीर॥
तिन को भाय सुपाय यह धनुष यज्ञ को हाल।
चौपाइन भजन न रच्यो श्लोकन ललित रसाल॥

होरी

यह रघुबर ब्याह पढ़ै री। धनुष यज्ञ लीला अति सुंदर जो मन लाय सुनै री॥ परत न शोक मिटति जग की भ्रम सबै बिधि होत अनन्द नरक नर सो न परै री। श्री रघुबीर बिवाह सकल नर भजन न गाय करै री॥ अवध गमन मुनि जज्ञ धनुष मुनि बचन प्रबाद अपार सुनत भव रोग हरै री। सुनि प्रभु ब्याह करत

नरजो पुर भाव भक्ति मनदेरी ॥ नगर निशान बजा-
य कुटुम मिलि मङ्गलदङ्गल चारु भक्ति यश धीर ध-
रैरी । जोजप व्रत संयम तीरथ करि पावन पुरायप-
रैरी ॥ शङ्कर सो सुनि ब्याह राम को जाय बसे हरिलो-
क फेरि भूतल नरवसैरी ॥ ५६ ॥

श्लोक

रामोद्वाहमहोत्सवं सुखकरं भक्त्या पढेन्मानवो वि-
न्देत्सर्वमनोरथान्शुभतरं शब्दाय शब्दैर्युतम् का-
तेनाभिकुलोद्भवेन च कृतंयः शङ्करेणोप्यले भा-
र्या भूयरणा माशुतापहरणा पुत्रान पुत्रप्रदम् ॥ ८६ ॥
महादेवेतिनाम्नाहं प्रसिद्धोस्मि महीतले शङ्करं
लघुमावीक्ष्यतमे वाप्यलिखन्मुदा ॥ ८७ ॥

इति श्रीरामब्याहोत्सवे भार्या भूयरणा महादेववा-
शङ्करकृते द्वितीयः प्रकाशः समाप्तः शुभमस्तुवा-
णाग्निखंडचन्द्राब्दे १९३५ महादेवेन वैकृतम् रा-
मब्याहोत्सवानन्दं भार्या भूयरण भयरणाम् ॥ २ ॥

इति



